cfu;knh tkudkjh

ßgekjs 2000 lky ds bfrgkl esa ;g lcls [kjkc nkSj gSA okLro esa ;g lcls xEHkhj le; gSA bl le; bl ckr dk iwjh rjg [krjk vk x;k gS fd ge lcdh frCcrh n'kk viuh fof'k"V lkaLd`frd fojklr ds lkFk iwjh rjg [kRe gks ldrh gSA ekStwnk fLFkfr bruh xEHkhj gS fd okLro esa ;g thou vkSj ej.k dk loky gks x;k gSA ;fn ekSr vkrh gS rks dqN Hkh ugha cpsxkAÞ

ije ikou nykbZ ykek

प्रकाशक :		Hkkjr frCcr leUo; dUn एच 10, द्वितीया मंजिल, लाजपत नगर 3, नई दिल्ली 110024
फोन	:	+91-11-29830578, 29841569
फैक्स	:	+91-11-29840966
ई–मेल	:	bharatibbat@yahoo.com
वेब साइट	:	www.indiatibet.org
प्रथम संस्करण	:	फरवरी 2012
संस्करण	:	तीसरा हिंदी
अनुवाद	:	दिनेश अग्रहरि
मुद्रक	:	वी. एन. प्रिंटर्स, ओखला फेस– ।।।
फोन	:	011–66605040

विषय वस्तु पेज

1.	तिब्बत की एक झलक	4
2.	तिब्बती राष्ट्रीय झंडा	5
3.	तिब्बत का संक्षिप्त इतिहास	7
4.	परम पावन 14वें दलाई लामा की संक्षिप्त जीवनी	18
5.	ईस्वी सन 600 के बाद का ऐतिहासिक कालानुक्रम	22
6.	तिब्बत स्वायत्तशासी क्षेत्र (टीएआर) क्या है	43
7.	चीनी के कम्युनिस्ट शासन के तहत तिब्बत	45
8.	मौजूद तिब्बत और इसकी गंभीर स्थिति	46
9.	तिब्बत और संयुक्त राष्ट्र	58
10.	तिब्बत पर भारतीय नेताओं के विचार	63
11.	भारतीय संसद में स्वीकार किया गया प्रस्ताव	80
12.	तिब्बत का मसला और भारत पर इसका सीधा निहितार्थ	81
13.	निर्वासन में तिब्बती	87
14.	धर्मशाला और बीजिंग के बीच संपर्क	89
15.	तिब्बत के लिए पांच सूत्रीय शांति योजना	96
16.	मध्यम मार्ग रवैयाः तिब्बत मसले को हल करने के लिए एक ढांचा	99
17.	तिब्बत समर्थक समूहों का आंदोलन	106

तिब्बत : एक अवलोकन

क्षेत्रफल	:	25 लाख वर्ग कि0 मी0 जो वर्तमान चीन के कुल क्षेत्रफंल का 26.04 प्रतिशत हैं।
राजधानी	:	ल्हासा
जनसंख्या	:	60 लाख तिब्बती
धर्म	:	बौद्ध धर्म, बॉन तथा इस्लाम
भाषा	:	तिब्बती (चीनी कब्जे के कारण सरकारी भाषा चीनी)
पर्यावरण सम्बन्धी	:	वनों की अन्धाधुंध कटाई
प्रमुख समस्या	:	स्तनपायी पशुओं का व्यापक स्तर पर शिकार
समुद्र तल से औसत ऊचाई	:	14000 फुट
सर्वोच्च पर्वत		जोमोंलांग्मा / सागरमाथा / एवरेस्ट
औसत तापमान	:	जुलाई 580 फा0, जनवरी 40 फा0
मुख्य नदियां	:	त्सांगपो (बह्मपुत्र), यांग्तसे, मैकोंग सालवीन, हुआंग–हो, सिन्धु तथा सतलुज।
अर्थव्यवस्था	:	तिब्बती लोग मुख्यतः कृषि और पशुपालन, चीनी लोग मुख्यतः सरकारी, वाणिज्य तथा अन्य सेवाओं से सम्बन्धित उपक्रमों में।
प्रान्त	:	उ–त्सांग, अम्दो तथा खम्
सीमान्त देश	:	भीतरीमंगोलिया, पूर्वी तुर्किस्तान भारत, नेपाल, भूटान, म्यांमार तथा चीन
देश के प्रमुख	:	महामहिम दलाई लामा
जनवादी चीन से सम्बन्ध	:	औपनिवेशिक

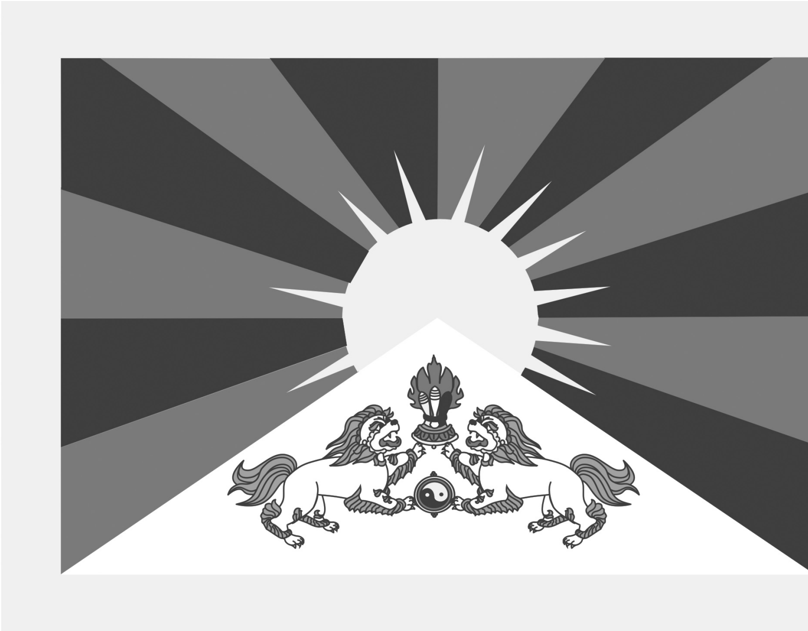

तिब्बती राष्ट्रीय झंडा

mRifRr

सातवीं शताब्दी के नरेश सोंगत्सेन गैंपो के शासन के दैरान तिब्बत मध्य एशिया के शक्तिशाली साम्राज्यों में से एक था। तब तिब्बत की सेना में 28,60,000 सैनिक हुआ करते थे। सेना के हर रेजीमेंट का अपना एक झंडा हुआ करता था। या–रु तो रेजिमेंट के झंडे में हिम शेरों एक जोड़ा आमने–सामने खड़ा दिखता था, इसी प्रकार या–रु मा के झंडे में एक हिम शेर सीधा खड़ा आसमान की ओर देखते हुए दहाड़ता दिखता था तो यू–रु के झंडे में लाल पृष्ठभूमि में एक सफेद लौ प्रज्ज्वलित होते दिखती थी। यह परंपरा 13वें दलाई लामा के समय बंद हुई जब उन्होंने एक नए झंडे का स्वरूप पेश किया और घोषणा पत्र जारी कर इसे सेना के सभी अंगों के लिए अपनाना अनिवार्य बनाया। यही झंडा आज तिब्बत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में मान्य है।

तिब्बती राष्ट्रीय ध्वज किस चीज का प्रतीक है

तिब्बती ध्वज के बीच में एक बर्फ से ढका शानदार पहाड़ खड़ा है जो महान देश तिब्बत का प्रतिनिधित्व करता है जिसे व्यापक तौर पर बर्फीले पहाड़ों से घिरे देश के रूप में जाना जाता है।

गहरे नीले आसमान में फैली हुई छह लाल पट्टियां तिब्बती जनता के मूल पूर्वजों को प्रदर्शित करती हैं, ये छह पूर्वज से, मु, दोंग, तोंग, ड्ढ और रा नाम की जनजातियां थीं जिनसे 12 वंशजों का विकास हुआ था। छह गहरे लाल पट्टियों (जनजातियों के लिए) और छह गहरी नीली पट्टियों (आसमान के लिए) का यह संयोग उन काले एवं लाल अभिभावक एवं संरक्षक देवताओं द्वारा आध्यात्मिक उपदेशों और धर्मनिरपेक्ष जीवन के संरक्षण के सदकृत्यों का लगातार प्रदर्शन करने को दर्शाता है जिनके साथ तिब्बत का जुड़ाव न जाने किस समय से है।

बर्फीले पहाड़ की चोटी पर सभी दिशाओं में अपनी चमकीली किरणें बिखेर रहा सूरज तिब्बत की भूमि पर रहने वाले सभी लोगों को समान आज़ादी, आध्यात्मिक एवं भौतिक खुशी और संपन्नता मिलने को प्रदर्शित करता है।

तिब्बत का संक्षिप्त इतिहास

बुद्ध शाक्यमुनि के दुनिया में आगमन से पांच सौ वर्ष पहले (1063 ईसा पूर्व) महान शेनराब मीवो नामक एक अर्ध पौराणिक व्यक्तित्व ने शेन जाति के आदि जीववाद में सुधार किया और तिब्बती बॉन धर्म की स्थापना की। नरेश न्यात्री सेनपो से पहले 18 शांगशुंग राजाओं ने तिब्बत पर शासन किया था। तिवोर र्सगे झारगुचेन पहले शांगशुंग नरेश थे।

शांगशुंग सम्राज्य के पतन के बाद 127 ईसापूर्व मे नरेश न्यात्री त्सेनपो के समय यारलुंग और चोंगयास घाटी में बॉड नामक एक राजशाही अस्तित्व में आयी (जो तिब्बत का वर्तमान नाम है)। तिब्बती राजतंत्र का यह वंश एक हजार वर्ष से भी अधिक समय तक 41वें नरेश ठ्रि वूदुम सेन तक विद्यमान रहा, जिन्हें आमतौर पर लांग दार्मा के नाम से जाना जाता है।

सांगत्सेन गाम्पो, त्रिसांग देत्सेन और राल्पाचेन इस वंश के सबसे प्रमुख राजाओं में से थे। यह ''तीन महान नरेश'' के नाम से प्रसिद्ध हैं।

त्रिसांग देत्सेन के शासन के दौरान (755–97) तिब्बती सम्राज्य अपने चरम पर था और उनकी सेनाओं ने चीन और कई मध्य एशियाई देशों में चढ़ाई की। 763 में तिब्बतियों ने तत्कालीन चीन की राजधानी चांग–ऐन (वर्तमान जियान) का घेराव कर लिया। इसके कारण चीनी बादशाह भाग खड़ा हुआ और तिब्बतियों ने वहां एक नये शासक की नियुक्ति की। इस यादगार विजय को ल्हासा में झोल डोरिंग (पत्थर स्तंभ) में दर्शाया गया है ताकि भावी पीढ़ियां इसे याद रखे। इसका एक हिस्सा इस प्रकार हैः

''नरेश त्रिसांग देत्सेन एक पारंगत व्यक्ति थे, वह काफी गहन विचार–विमर्श करते थे ओर उन्होने अपने साम्राज्य के लिये जो कुछ

किया वह पूरी तरह सफल था। उन्होने चीन के कई जिलो और किलों पर चढ़ाई की और उन पर अधिकार जमाया। चीनी शासक हेडु की वांग और उनके मंत्री भयभीत हो गये। नरेश ने प्रतिवर्ष रेशम की 50,000 गांठों के नियमित नजराने की मांग की और चीन नजराना देने को विवश हुआ।''

नरेश राल्पाछेन के शासन के दौरान (815–36) तिब्बती सेनाओं को कई बार विजय मिली और 821–22 में चीन के साथ एक शांति समझौता संपन्न हुआ। इस समझौते के विवरण वाले शिलालेख तीन स्थानों पर पाये गये है : पहला चांग–ऐन में चीनी बादशह के महल के दरवाजे पर, दूसरा ल्हासा में जोखांग मंदिर के मुख्य दरवाजे के पहले और तीसरा गुरु मेरू पर्वत पर स्थित तिब्बत –चीन सीमा पर।

842 ई0 में तिब्बत में नरेश राल्पाछेन के भाई 41वें नरेश त्रि वुडुम त्सेन की हत्या के बाद युद्धरत राजकुमारों, लॉर्ड और जनरलों में भयानक सत्ता संघर्श छिड़ गया और महान तिब्बती साम्राज्य कई छोटे–छोटे राज्यों में बंट गया। 842 से 1247 तक का समय तिब्बत के लिए अंधकार का युग रहा।

1073 में कॉनचोग ग्यालपो ने शक्य मठ की स्थापना की। शक्य लामा सत्ता में आए और 1254 से 1350 तक तिब्बत पर 20 शक्य लामाओं द्वारा शासन किया गया। शक्य पंडित के नाम से मशूहर साक्यापा कुंगा ग्यालत्सेन ने मंगोल राजकुमार गोदन (खान वंष) का धर्म परिवर्तन कर उसे बौद्ध बनाया और उसके राज्य पर चढ़ाई करने वाली अपनी सेनाओं को हटा लिया। 1358 में यू प्रांत (मध्य तिब्बत) पर नेदांग के राज्यपाल चांगचुब ग्यालत्सेन का अधिकार हो गया जोकागयुद सम्प्रदाय के फामो ड्रगपा ाखा के एक सन्यासी थे। इसके अगले 86 वर्षों तक तिब्बत पर फामों ड्रग्प्पा वंश के ग्यारह लामाओं का शासन रहा।

1434 में पांचवे फामों ड्रुप्पा शासक ड्रकपा गयालत्सेन की मृत्यु के बाद सत्ता रिनपुंग परिवार के हाथ में आ गयी, जिनका ड्रुप्पा ग्यालत्सेन के साथ वैवाहिक संबंध था। 1436 से 1566 तक सत्ता रिनपुंग परिवार के प्रमुखों के हाथ में रही। तिब्बत के महानतम विद्वान जोंखपा लोसांग ड्रगपा ने 1409 में पहले गेलुपा मठ गाडेन की स्थापना की और गेलुग वंश की शुरुआत हुई।

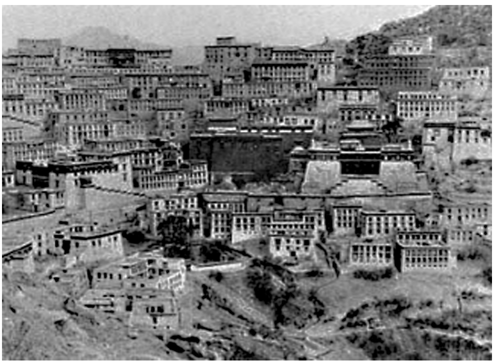

महान गाडेन मठ

1543 में जन्मे सोनम ग्यातसो एक महान अध्यात्मिक और लौकिक ज्ञान वाले विद्वान के रूप मे उभरे। उन्होंने अल्तान बान को बौद्ध धर्म में दीक्षित कराया और बाद में 1578 में उन्हें दलाई लामा नाम दिया गया जिसका मतलब होता है ''ज्ञान का महासागर''। सोनम ग्यात्सो अपने वंश के तीसरे शासक थे इसलिए उन्हें तीसरा दलाई लामा कहा गया। उनके दो पूर्व अवतारों को मरणोपरांत यह सम्मान दिया गया। तिब्बत और मंगोलिया के बीच एक गहरा आध्यात्मिक संबंध विकसित हुआ।

1642 में पांचवें दलाई लामा गवांग लोजांग ग्यात्सो ने तिब्बत पर आध्यात्मिक व लौकिक दोनों दृष्टियों से अधिकार कर लिया। उन्होंने तिब्बती सरकार की वर्तमान शासन प्रणाली की स्थापना की जिसे ''गांदेन फोड्रांग'' कहा जाता है। समूचे तिब्बत के शासक बनने के बाद उन्होंने चीन की ओर रूख किया और चीन से मांग की कि वह उनकी संप्रभुता को मान्यता दे। मिंग बादशह ने दलाई लामा को एक स्वतंत्र और बराबरी का शासक स्वीकार किया। इस

बात के प्रमाण हैं कि वह दलाई लामा से मिलने के लिए अपनी राजधानी से बाहर आए और उन्होंने शहर को घेरने वाली दीवार के ऊपर से एक ढाल वाले मार्ग का निर्माण किया ताकि दलाई लामा बिना प्रवेश द्वार तक गये सीधे पीकिंग में प्रवेश कर सकें।

चीन के शासक ने दलाई लामा को न केवल एक स्वतंत्र शासक के रूप में स्वीकार किया, बल्कि उन्हें पृथ्वी पर एक देवता के रूप में भी माना। इसके बदले में दलाई लामा ने अपने प्रभाव का इस्तेमाल कर मंगोलों को इस बात के लिए राजी किया कि वह चीन पर मिंग शासक का आधिपत्य स्वीकार करे। इसके परिणाम स्वरूप ''पुरोहित–यजमान संबंध'' का विकास हुआ जिसने तिब्बत, चीन व मंगोलिया के संबंधों में एक नये वातावरण का निर्माण किया। एक और महत्वपूर्ण घटना थी पांचवे दलाई लामा का यह बयान की उनके निजी शिक्षकों में से एक, पहले पंचेन लामा की श्रेणी को जारी रखा जाये।

महान पाचवें दलाई लामा के यशस्वी शासनकाल के दौरान शडयंत्र और अस्थिरता का दौर भी आया। 1697 में गद्दी पर बैठाये गये छठे ''दलाई लामा सांगयांग ग्यात्सो ने राज्य के मामले में रूचि लेने से इंकार किया और वह गलत रास्तों पर चल पड़े।

जब छठें दलाई लामा के उत्तराधिकारी कालसांग ग्यात्सो को पूर्वी तिब्बत के लिथांग में खोजा गया, तो मंगोलों और मांचुओं के विभिन्न जनजातियों में उन पर नियंत्रण के लिए संघर्ष छिड़ गया ताकि वह तिब्बत पर अपना प्रभाव जमा सकें और इसमें मांचुओं को सफलता मिली।

1723 में जब मांचू सेना ने अंतिम रूप से ल्हासा को छोड़ा तो उन्होंने दलाई लामा की सेवा के लिए वहां एक रेजिडेंट अथवा अम्बान छोड़ दिया जो वास्तव में मांचुओं निजी हितों की देखभाल

के लिए था। यह तिब्बती मामलों में मांचुओं के दखल की शुरूआत थी। मांचुओं ने तिब्बतियों की इच्छा के विरूद्ध तिब्बती रीजेंट के रूप में अपने प्रतिनिधि को रख दिया। कुछ वर्शों के बाद मांचू के प्रतिनिधि की हत्या कर दी गयी और इसके बाद मांचू शासक युंग चेंग ने अपना सैन्य दस्ता भेजा, इस प्रकार पहली बार मांचुओं ने तिब्बत पर चढ़ाई की। 1786 में गोरखाओं ने तिब्बत पर चढ़ाई कर दी। इस चढ़ाई की परिस्थितियो ंका निर्माण गोरखाओं द्वारा नेपाल पर पूर्ण नियंत्रण के कुछ वर्ष पूर्व हुआ। नेपाल ने तिब्बत को आपूर्ति किये जाने वाले चांदी के सिक्कों में तांबा मिलाना शुरू किया। 1751 में सातवें दलाई लामा ने काठमांडू, पाटन और भक्तगांव के जागीरों पर शासन करने वाले तीन नेवारी राजाओं को पत्र लिखकर इस पर विरोध जताया। जब गोरखाओं के मुखिया पृथ्वी नारायण ने नेवारी शासकों को उखाड़ फेंका तो उन्हें भी इस बात से अवगत कराया गया।

26 वर्षीय आठवें दलाई लामा ने मांचू शासक चिएन लंग से अस्थायी सैन्य सहायता भेजने का अनुरोध किया। 1792 में तिब्बत में प्रवेश करने वाली मांचू सेना तिब्बतियों के लिए हानिकारक ही साबित हुई और इस सेना ने पुनः मांचू रेजिडेंट की ताकत बढ़ाने का प्रयास किया। इसके बाद चिएन लंग ने पीकिंग से एक स्वर्णकलष भेजा और यह घोषणा की भविष्य में दलाई लामा और अन्य महत्वपूर्ण लामाओं के उत्तराधिकारियों के चयन के लिए इस कलश में सभी उम्मीदवारों का नाम डाला जाएगा और मांचू रेजीडेंट के सामने यादृच्छिक (रैंडम) रूप से कलष से एक नाम निकाला जाएगा। तिब्बतियों ने इस साम्राज्यवादी हस्तक्षेप का पालन नहीं किया और तेरहवें दलाई लामा (जिनके चयन के बारे में मांचुओ से सलाह नहीं ली गयी थी) ने सार्वजनिक रूप से इस प्रथा को समाप्त कर दिया।

इस दौरान तिब्बत पर कई बार चढ़ाई की गयी और ल्हासा का मांचू रेजिडेंट घृणित शडयंत्रों और तिब्बती मामलों में दखलंदाजी करने में लगा रहा। लेकिन तिब्बत ने अपनी संप्रभुता कभी नहीं खोई। तिब्बत के लोगों ने दलाई लामा के नेतृत्व वाले केंद्रीय तिब्बत सरकार को एकमात्र वैधानिक सरकार के रूप में स्वीकार किया।

तिब्बत की संप्रभुता उस समय भी स्पष्ट हुई जब चीन को बताये बिना ही 1856 में तिब्बत व नेपाल के बीच एक समझौते पर हस्ताक्षर किया गया। तिब्बत के आंतरिक मामलों के लिहाज से देखा जाए तो ल्हासा में तिब्बत के केंद्रीय सरकार की संप्रभुता उन आंतरिक संघर्षों के दौरान अधिक स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हुई जो 19वीं सदी के मध्य में शुरू हुए। इनमें एक तरफ न्यारांग के मुखिया थे तो दूसरी तरफ देंगे के नरेश और होरपा के राजकुमार। न्यारांग के मुखिया द्वारा अपने पड़ोसियों पर चढ़ाई से यह समस्या उत्पन्न हुई थी, इसलिए तिब्बती सरकार ने सेना भेजकर न्यारांग के मुखिया को परास्त किया और उसके स्थान पर एक तिब्बती राज्यपाल नियुक्त किया, जिसे देंर्गे और होरपा जागीरों के देखभाल की जिम्मेदारी भी सौंपी गयी।

1876 में 13वें दलाई लामा थुपटेन ग्यात्सो ने 19 वर्ष की अवस्था में रीजेंट चोक्यी ग्यालत्सेन कुंडेलिंग से इस राज्य की जिम्मेदारी अपने हाथ में ली। वह एक विशिष्ट व्यक्ति थे और उन्होंने तिब्बत को अंतरराष्ट्रीय मामलों में न्यायसंगत प्रभुसत्ता पुनः हासिल करने में सहायता की।

उस समय ब्रिटिश सरकार का चीन के साथ बहुत गहरा व लाभदायक संबंध बन गया था चीन ने ब्रिटेन को यह समझाने में सफलता हासिल कर ली थी कि तिब्बत पर उसका अधिराज है। इसलिए 13 सितंबर, 1876 को चीन–ब्रिटेन चेफो समझौते पर हस्ताक्षर किया गया जिसके द्वारा ब्रिटेन को इस बात का

अधिकार मिल गया कि वह तिब्बत के अन्वेशण के लिए एक अभियान भेजे। लेकिन यह अभियान नहीं भेजा जा सका क्योकि तिब्बतियों ने उन्हें इसकी अनुमति इस आधार पर नहीं दी कि तिब्बत के लोग चीन के प्रभुत्व को स्वीकार नहीं करते। इसी प्रकार के दो और समझौते 24 जुलाई, 1886 का पीकिंग समझौता और 17 मार्च, 1890 का कलकत्ता समझौता भी तिब्बतियो द्वारा खारिज कर दिया गया। तिब्बती सरकार ने ब्रिटिश लोगों से किसी भी तरह का संबंध रखना स्वीकार नहीं किया, जो कि उनके क्षेत्र के बारे में चीन से बातचीत कर रहे थे। यह लगभग 1900–01 में रूस व तिब्बत के बीच हुए नये समझौते के अनुरूप ही था। इसके बाद दलाई लामा और रूसी ज़ार के बीच पत्रों व उपहारों का आदान–प्रदान किया गया। इससे तिब्बत के मामले में रूसी हस्तक्षेप के बारे में ब्रिटिश लोगों का संदेह और गहरा हो गया। एशिया में रूस की ताकत बढ़ती जा रही थी जिसके कारण ब्रिटिश सरकार यह सोचने लगी कि उनके हितों पर खतरा मंडरा रहा है। कर्नल यंग हस्बेंड के नेतृत्व में एक ब्रिटिश अभियान दल ने तिब्बत पर चढ़ाई कर दी और 3 अगस्त, 1904 को ल्हासा में प्रवेश किया।

7 सितंबर, 1904 को तिब्बत और ब्रिटेन के बीच एक समझौते पर हस्ताक्षर किया गया। ब्रिटिश चढ़ाई के दौरान तिब्बत ने एक स्वतंत्र देश के रूप में मामले को संभाला। तिब्बत पर ब्रिटेन की चढ़ाई का पीकिंग ने कुछ खास विरोध नहीं किया। जब ब्रिटिश लोगों ने तिब्बत पर चढ़ाई की तो 13वें दलाई लामा मंगोलिया चले गये। चीन पर शासन करने वाले मांचुओं ने तिब्बत के मामले में दखल देने का अंतिम प्रयास किया और कुख्यात चाओ अरफेंग के नेतृत्व में एक

यंग हस्बेंड

अभियान भेजा। जब दलाई लामा आमदो प्रांत के कुमबुम मठ में

थे तभी उन्हें दो संदेश प्राप्त हुए। एक ल्हासा से, जिसमें उनसे अनुरोध किया गया था कि वह अति शीघ्र ल्हासा लौट आएं क्योंकि लोग उनकी सुरक्षा को लेकर चिंतित थे और चाओ अरफेंग की सैन्य टुकड़ी का विरोध नहीं कर सकते थे। दूसरा संदेश पीकिंग से आया था जिसमें उनसे चीन की राजधानी की यात्रा करने का अनुरोध किया गया था। दलाई लामा ने यह सोचकर पीकिंग जाने का निर्णय लिया कि वह चीनी शासक को इस बात के लिए राजी कर लेंगे कि वह तिब्बत पर सैन्य आक्रमण रोके और वहां से अपनी सेनाएं हटा ले।

लेकिन जब अंतिम रूप से 1909 में दलाई लामा ल्हासा लौटे तो उन्होंने देखा कि पीकिंग से प्राप्त सभी आश्वासनों के विपरीत चाओ अरफेंग की सैन्य टुकड़ी ने वहां अपने पांव जमा चुके थे। 1910 के वार्षिक मोनलम उत्सव के दौरान जनरल चुंग यिंग के नेतृत्व में लगभग 2,000 मांचू व चीनी सैनिको ने ल्हासा में प्रवेश किया और उन्होंने वहां नरसंहार, बलात्कार, हत्या और अत्यधिक विनाश की घटनाओं को अंजाम दिया। एक बार पुनः दलाई लामा को ल्हासा छोड़ना पड़ा। उन्होंने अपनी अनुपस्थिति में शासन करने के लिए एक रीजेंट की नियुक्ति कर दी और यह सोचकर दक्षिणी शहर ड्रोमो की ओर चल पड़े कि यदि आवश्यकता पड़ी तो वह ब्रिटिश भारत में चले जाएंगे। ल्हासा की घटनाओं और चीनी सैन्य टुकड़ी के पीछे लगे होने के कारण उन्हें एक बार पुनः अपना देश छोड़ने को मजबूर होना पड़ा। भारत में दलाई लामा और उनके मंत्रियों ने ब्रिटिश सरकार से तिब्बत की सहायता करने की मांग की। जबकि मांचू सैन्य दस्ते ने तिब्बत सरकार को उखाड़ने और तिब्बत को चीन के प्रांतो के अनुसार विभाजित करने का प्रयास किया, ठीक वैसा ही जैसा कि लगभग आधी शताब्दी बाद साम्यवादी चीन ने किया।

जनवरी 1913 में मंगोलिया के उर्गा नामक स्थान पर तिब्बत व

मंगोलिया के बीच एक द्विपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किया गया। उक्त समझौते में दोनो देशों ने अपने को स्वतंत्र और चीन से अलग घोषित किया।

जनवरी, 1913 में भारत से लौटने के बाद 13वें दलाई लामा ने जल–बैल (वाटर–ऑक्स) वर्ष के पहले महीने के आठवें दिन (मार्च, 1913) तिब्बत की पूर्ण स्वतंत्रता का एक औपचारिक घोषणापत्र जारी किया।

तेरहवें दलाई लामा

तेरहवें दलाई लामा ने अपने शासन काल के दौरान उथल–पुथल के बावजूद अंतरराष्ट्रीय संबंधों की शुरुआत की, आधुनिक डाक व तार सेवाओं की शुरुआत की और तिब्बत को आधुनिक बनाने के प्रयास किये। 17 दिसंबर 1933 को उनका देहांत हो गया।

इसके बाद उन्हें श्रद्धांजलि प्रदान करने के लिए एक चीनी शिष्टमंडल ल्हासा पहुंचा, लेकिन वास्तव में वे चीन–तिब्बत सीमा के मुद्दे को सुलझाने के लिए आये थे। मुख्य प्रतिनिधि के जाने के बाद एक अन्य चीनी प्रतिनिधि ने चर्चा लगातार जारी रखी। चीनी प्रतिनिधि को उसी आधार पर ल्हासा में रहने की अनुमति प्रदान की गयी जिस आधार पर नेपाली और भारतीय प्रतिनिधि वहां रहते थे। लेकिन 1949 में चीनी प्रतिनिधि को तिब्बत से निकाल दिया गया।

सितम्बर 1949 में साम्यवादी चीन ने बिना किसी कारण के पूर्वी तिब्बत पर चढ़ाई कर दी और पूर्वी तिब्बत के राज्यपाल के मुख्यालय चामदो पर अधिकार कर लिया। चीन के इस आक्रमण के विरोध में 11 नवंबर, 1950 को तिब्बत सरकार ने संयुक्त राष्ट्र संघ में आवाज उठायी। हालांकि अल सल्वाडोर ने इस प्रश्न को उठाया था

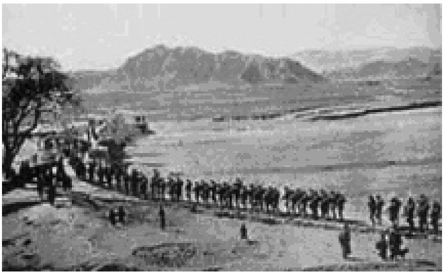

तिब्बत से चीनी सेनिकों की अंतिम टुकरी भारत होकर अपने देश लोटते हुए, 1913।

लेकिन संयुक्त राष्ट्र महासभा की संचालन समिति ने इस मुद्दे को टाल दिया।

तिब्बत के समक्ष आ चुके महान संकट को देखते हुए 17 नवंबर, 1950 को परम पावन चौदहवें दलाई लामा ने राष्ट्राध्यक्ष के रूप में पूर्ण आध्यात्मिक व लौकिक सत्ता ग्रहण की, जबकि उस समय वह मात्र छह वर्ष के थे। पीकिंग के दौरे पर गये एक तिब्बती प्रतिनिधि मंडल से जबरदस्ती एक समझौते पर हस्ताक्षर करवाया गया जिसे तथाकथित रूप से ''तिब्बत के शांतिपूर्ण आजादी के उपाय पर 17 बिंदुओं वाला समझौता'' कहा गया। जबकि यह प्रतिनिधिमंडल चीनी हमले के बारे में बातचीत करने के लिए पीकिंग गया था। इस समझौते के लिए तिब्बत के नकली आधिकारिक मुहर का प्रयोग किया गया और तिब्बत में और सैन्य कार्रवाई की धमकी दी गयी। इसके बाद तिब्बती लोगों के जबरदस्त प्रतिरोध की परवाह न करते हुए चीन ने तिब्बत को अपना एक उपनिवेश बनाने की योजना को लागू करने के लिए उक्त समझौते के दस्तावेज का उपयोग किया।

9 सितम्बर, 1951 को हजारों चीनी सैनिकों ने ल्हासा में मार्च किया। तिब्बत पर जबरन अधिग्रहण के बाद योजनाबद्ध रूप से यहां के मठों का विनाश किया गया, धर्म का दमन किया गया, लोगों की राजनीतिक स्वतंत्रता छीन ली गयी, बड़े पैमाने पर लोगों को गिरफ्तार और कैद किया गया तथा निर्दोश पुरूषों, महिलाओं और बच्चों का कत्ले–आम किया गया।

ल्हासा पर चीनी कब्जे के विरोध में 10 मार्च, 1959 को तिब्बती लोगों ने राश्ट्रव्यापी प्रतिरोध षुरू किया। चीनियों ने इसका ऐसा

निर्दयतापूर्ण प्रतिकार किया जैसा कि तिब्बत के लोगों ने कभी नहीं देखा था। हजारों पुरुशों, महिलाओं और बच्चों को सरेआम चौराहों पर मौत के घाट उतार दिया गया और बहुत से तिब्बतियों को कैद कर दिया गया या निर्वासित कर दिया गया। भिक्षु और भिक्षुणियां चीनी प्रतिशोध के मुख्य निशने थे। मठों और मंदिरों पर गोले बरसाये गये।

17 मार्च, 1959 को दलाई लामा ने ल्हासा छोड़ दिया और अपना पीछा कर रहे चीनियों से बचते हुए राजनीतिक शरण लेने के लिए भारत पहुँच गये। उनके साथ निर्वासित तिब्बतियों का एक भारी जनसमूह था। इतिहास में कभी भी इस प्रकार की परिस्थिति नहीं उत्पन्न हुई थी की इतने तिब्बतियों को अपनी जन्मभूमि छोड़नी पड़ी हो। इस समय पूरी दुनिया में एक लाख से अधिक तिब्बती शरणार्थी हैं।

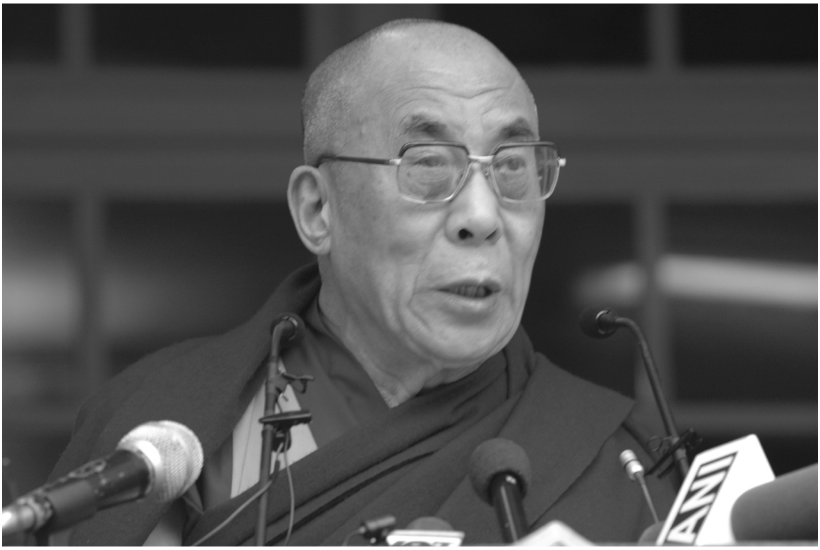

ije ikou 14o nykb ykek dh lf{kIr thouh

परम पावन दलाई लामा तेनजिन ग्यात्सो तिब्बती सरकार के प्रमुख हैं और आध्यात्मिक प्रमुख भी हैं। उनका जन्म 6 जुलाई 1935 को उत्तर–पूर्वी तिब्बत में स्थिति आमदो प्रांत के एक छोटे से गांव ताकसेर के एक किसान परिवार में हुआ था। बचपन में उनका नाम ल्हामो थोंडुप था और जब वह दो वर्ष के थे तभी उनकी पहचान 13वें दलाई लामा थुबतेन ग्यात्सो के पुनर्जन्म के रूप में की गई। दलाई लामाओं को तिब्बत में करुणा के बोधिसत्व और संरक्षक संत अवलोकितेश्वर का अवतार माना जाता है।

frCcr es f’k{kk&nh{kk

परम पावन ने छह साल की अवस्था में मठीय शिक्षा की शुरुआत की। साल 1959 में 23 साल की अवस्था में वह वार्षिक मोनलम समारोह के दौरान ल्हासा के जोखांग मंदिर में अंतिम परीक्षा में शामिल हुए। वह इस परीक्षा में ऑनर्स के साथ उत्तीर्ण हुए और

उन्हें गेशी ल्हारम्पा डिग्री हासिल हुई, जो डॉक्टरेट ऑफ बुद्धिस्ट फलॉस्फी के बराबर उच्चतम डिग्री है।

urRo dh ftEenkfj;k

साल 1949 में तिब्बत पर चीन के आक्रमण के बाद 1950 में परम पावन से अनुरोध किया गया कि वह पूर्ण राजनीतिक अधिकार अपने हाथ में लें। साल 1954 में वह माओत्से तुंग, डेंग जियोपिंग और चाउ एनलाई जैसे अन्य चीनी नेताओं के साथ शांति वार्ता के लिए बीजिंग गए। लेकिन अंत में साल 1959 में ल्हासा में चीनी सैनिकों द्वारा तिब्बती राष्ट्रीय जनक्रांति के बर्बर दमन की वजह से परम पावन को मजबूर होकर निर्वासन में भारत आना पड़ा। इसके बाद से ही

उत्तरी भारत में स्थित धर्मशाला शहर में निवास कर रहे हैं, जो निर्वासित तिब्बती राजनीतिक प्रषासन का केंद्र भी है।

लोकतांत्रिक प्रक्रिया की शुरुआत

साल 1963 में परम पावन ने तिब्बत के लिए एक लोकतांत्रिक ‘विधान का प्रारूप प्रस्तुत किया जिसकी मदद से बाद में निर्वासित तिब्बतियों का चार्टर’ तैयार किया गया। इस चार्टर के द्वारा अभिव्यक्ति, विश्वास, सभा और आंदोलन करने की आज़ादी प्रदान की गई। साल 1990 में परम पावन दलाई लामा ने तिब्बती जन प्रतिनिधि सभा (निर्वासित तिब्बती संसद) को भंग कर दिया और एक व्यक्ति एक मत के सिद्धांत को अपनाते हुए निर्वासित संसद के सदस्यों की संख्या बढ़ाकर 46 कर दी गई।

साल 1992 में परम पावन ने भविष्य के तिब्बत के संविधान के लिए एक दिशानिर्देश जारी किया। उन्होंने घोषणा की कि उत्सांग, आमदो और खम जैसे तीन परंपरागत प्रांतों वाला तिब्बत जब

आज़ाद होगा तो सबसे पहला लक्ष्य एक अंतरिम सरकार का गठन करना होगा और इस अंतरिम सरकार की सबसे पहली जिम्मेदारी तिब्बत के लोकतांत्रिक संविधान के निर्माण के लिए एक संविधान सभा का चुनाव करने की होगी।

साल 2000 में परम पावन ने सुझाव दिया कि कालोन ट्रिपा (प्रधानमंत्री) का चुनाव सीधे जनता द्वारा किया जाए और बाद में संसद ने भी इस प्रस्ताव को मंजूरी दी। निर्वासित तिब्बती सरकार के लोकतंत्रीकरण की दिशा में यह एक बड़ा कदम था। तिब्बत के दीर्घकालिक इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ कि राजनीतिक नेतृत्व का चुनाव सीधे जनता द्वारा किया गया।

’kkfr i;kl

सितंबर 1987 में परम पावन ने तिब्बत के लिए पांच सूत्रीय शांति योजना पेश की। तिब्बत की खराब होती स्थिति को देखते हुए शांतिपूर्ण समाधान की दिषा में यह पहला कदम था। उन्होंने प्रस्ताव किया कि तिब्बत को एक अभयाराण्य, एशिया के हृदय स्थल में एक शांति क्षेत्र बनाया जा सकता है, जहां सभी प्राणी शांति के साथ रह सकें और वहां के नाजुक पर्यावरण का संरक्षण किया जाए। लेकिन परम पावन द्वारा किए गए विभिन्न शांति प्रस्तावों पर अभी तक चीन कोई सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करने में नाकाम रहा है।

LVklcxl iLrko

स्ट्रासबर्ग में 15 जून, 1988 को यूरोपीय संसद के सदस्यों को संबोधित करते हुए परम पावन दलाई लामा ने पांच सूत्रीय शांति योजना के अंतिम बिंदु को विस्तार से समझाते हुए एक और विस्तृत प्रस्ताव की पेशकश की। उन्होंने कहा पेशकश की कि तिब्बत के तीनों प्रांतों में एक स्वशासित लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था कायम करने के लिए चीन और तिब्बती प्रतिनिधियों के बीच बातचीत

हो। यह लोकतांत्रिक सरकारें चीन जनवादी गणराज्य से जुड़ी रहेंगी और तिब्बत की विदेश नीति एवं प्रतिरक्षा की जिम्मेदारी चीन सरकार की ही होगी।

nfu;k Hkj e ekU;rk

परम पावन दलाई लामा एक शांति पुरुष हैं। तिब्बत की मुक्ति के लिए अहिंसक संघर्ष करने की वजह से उन्हें साल 1989 में शांति के नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अत्यधिक आक्रामकता का सामना करने के बावजूद वह लगातार अहिंसक नीतियों की वकालत करते रहे हैं। वह ऐसे पहले नोबल पुरस्कार प्राप्त हस्ती भी हैं जिन्हें अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण की समस्याओं के प्रति चिंता जताने वाले के रूप में पहचान मिली है। 17 अक्टूबर, 2007 को परम पावन दलाई लामा को अमेरिकी कांग्रेसनल गोल्ड मेडल दिया गया जो अमेरिका का सर्वोच्च नागरिक सम्मान है।

परम पावन ने दुनिया के छह महाद्वीपों के 62 से ज्यादा देशों की यात्रा की है। उनके शांति, अहिंसा, अंतर धार्मिक सामंजस्य, सार्वभौमिक जिम्मेदारी और करुणा के संदेश को मान्यता देते हुए साल 1959 के बाद से अब तक उन्हें 84 पुरस्कारों, मानद डिग्रियों, सम्मानों आदि से नवाजा जा चुका है। परम पावन ने 72 से ज्यादा पुस्तकें भी लिखी हैं।

वह स्वयं को एक साधारण बौद्ध भिक्षु ही मानते हैं।

तिब्बत का इतिहास 600 ईस्वी पूर्व से 2003 तक

yxHkx 600 लगभग 600 सांगपो नदी के दक्षिणी क्षेत्र में स्थित यारलुंग के नरेश नामरी सांगत्सेन ने तिब्बत के कई राज्यशाहियों का एकीकरण प्रारंभ किया।

yxHkx 627 सांगत्सेन गाम्पो अपने पिता के उत्तराधिकारी के रूप में तिब्बत के 33वें नरेश बने और उन्होंने तिब्बत को अपने शासन के अधीन संघटित करने का प्रयास किया।

641 तिब्बत में बौद्ध धर्म लाने का श्रेय सांगत्सेन गाम्पो को ही जाता है। उन्होंने पहले ही तीन तिब्बती राजकुमारियों और भृकुटि नामक एक नेपाली राजकुमारी से शादी कर रखी थी, इसके बावजूद उन्होंने वेन–चेंग नामक एक चीनी राजकुमारी को अपना दुल्हन बनाया। इस प्रकार उन्होंने पूर्व से पश्चिम तक के देशों से संबंध कायम किया।

670 तिब्बत और चीन के तांग वंश के बीच युद्ध छिड़ा, मध्य एशिया से होकर जाने वाले व्यापार मार्ग पर तिब्बत का प्रभाव कायम हुआ।

754 त्रिसांग देत्सेन ने सत्ता संभाली।

yxHkx 779 पद्मसंभव ने ल्हासा से पचास मील दक्षिण की ओर साम्ये में पहले बौद्ध मठ विश्वविद्यालय की स्थापना की। बौद्ध धर्म के संस्कृति भाषा के सूत्र व तंत्र (त्रिपिटक) का तिब्बती में अनुवाद किया गया, तांत्रिक ध्यान प्रणाली की स्थापना

821&22 चीन व तिब्बत समझौते को यादगार के रूप में बनाये रखने हेतु इसे पोटाला महल के सामने खड़े एक कीर्तिस्तम्भ पर उत्कीर्ण किया गया।

yxHkx 836 लांगदर्मा ने त्रि रालपाचेन के उत्तराधिकारी के रूप में सत्ता संभाली और बॉन पुजारियों के दबाव में मध्य तिब्बत में बौद्ध धर्म को दबाना, मठों को जलाना और भिक्षुओं का खदेड़ना प्रारंभ किया।

842 एक बौद्ध भिक्षु द्वारा लांगदर्मा की हत्या। उत्तराधिकारी पर विवाद, राजशाही विघटित हो गया और इस प्रकार तिब्बत राजनीतिक उथल–पुथल की स्थिति में आ गया।

1207 तिब्बती नेताओं ने चंगेज खान की अधीनता स्वीकार कर ली।

1260 चीन के युआन वंश के शासक कुबलाई खान ने साक्यपा श्रेणी को सबसे प्रभावशाली बनाते हुए फाकपा को ति–शी (राजगुरू) की उपाधि प्रदान की।

1270 कुबलाई खान ने तिब्बती बौद्ध धर्म को अपनाया।

1368 युआन वंश के पतन हो जाने से तिब्बत की चीन पर निर्भरता समाप्त हो गयी। तिब्बत पर नियंत्रण के लिए विभिन्न घटकों मे संघर्ष की षुरुआत।

1391 पहले दलाई लामा गेंदुन ड्रुबपा का जन्म (उन्हें यह उपाधि मरणोपरांत तब दी गयी जब 1578 में तीसरे दलाई लामा ने उपाधि ग्रहण किया।

1447 प्रथम दलाई लामा ने पंचेन लामा के भविष्य की गद्दी ताशिलहुनपो मठ की स्थापना की।

1474 दूसरे दलाई लामा गेदुन ग्यात्सो का जन्म।

1543 तीसरे दलाई लामा सोनम ग्यात्सो का जन्म।

1570 पांचवे दलाई लामा के गुरू एवं पहले पंचेन लामा लोसंग चोक्यी ग्यालत्सेन का जन्म। ''पंचेन'' (महान विद्वान) की उपाधि पांचवे दलाई लामा द्वारा प्रदान की गयी।

1578 सोनम ग्यात्सो ने मंगोल शासक अल्तान खान से ''दलाई लामा'' (ज्ञान का महासागर) की उपाधि धारण की।

1589 चौथे दलाई लामा योनतेन ग्यात्सो का जन्म (अलतन खान के परपोता)

1617 पांचवे दलाई लामा नग्वांग लोसंग ग्यात्सो का दक्षिणी तिब्बत में जन्म। वह महानत्म दलाई लामाओं में से एक थे, उन्होंने तिब्बत की स्वतंत्रता पुनः कायम की और तिब्बत के सीमावर्ती क्षेत्रों तक अपनी प्रभुता स्थापित की, भारत के साथ व्यापार को फिर से शुरू किया और चीन का दौरा किया।

1642 खोशोत मंगोलो के शासक गुशरी खान ने करमा तैन्क्योंग को हराया और पांचवे दलाई लामा को तिब्बत के शासक के रूप में स्थापित किया।

1683 छठें दलाई लामा सांगयांग ग्यात्सो का जन्म।

1708 कापुचिन मिशनरी ने ल्हासा में अपना मिशन भेजा,

सातवें दलाई लामा कालसंग ग्यात्सो का जन्म।

1720 चिंग वंश के शासक कांगशी ने ल्हासा में अपना दूतावास स्थापित किया।

1723 चीनियों ने तिब्बत छोड़ा।

1728 जुगार्स को हराने के बाद तिब्बत पर शासन करने वाले मंत्रिपरिषद के एक सदस्य फो–ल्हावा ने अपने विरोधी तिब्बती राष्ट्रवादियों को बलप्रयोग से बाहर किया और चीन के सहयोग से तिब्बत पर शासन किया।

1740 चीनी शासक ने फो–ल्हावा को तिब्बत का राजा बनाया।

1758 आठवें दलाई लामा जमपल ग्यात्सो का जन्म।

1792 गोरखाओं के साथ शांति समझौता, लेकिन तिब्बत सरकार में चीनी प्रतिनिधियों (अंबान) की ताकत बढ़ी।

1806 नौवें दलाई लामा सुल्त्रिम ग्यात्सो का जन्म।

1836 ग्यारहवें दलाई लामा खेड्रुरूब ग्यात्सो का जन्म।

1856 बारहवें दलाई लामा त्रिनले ग्यात्सो का जन्म। गोरखा सेना ने तिब्बत पर चढ़ाई की।

1876 तेरहवें दलाई लामा थुबतेन ग्यात्सो का जन्म (मृत्यु 1933)।

1903&04 कर्नल फ्रांसिस यंगहसबैंड 3,000 ब्रिटिश सेनाओं के साथ ग्यायुम की ओर बढ़ा। 13वें दलाई लामा ने

मंगोलिया और चीन की शरण ली। एंग्लो–तिब्बत समझौते पर हस्ताक्षर के बाद ब्रिटिश सेनाएं वापस चली गयीं। इस समझौते के द्वारा ब्रिटिश सरकार को यह सहूलियत हासिल हो गयी कि वह पश्चिमी तिब्बत के ग्यान्तसे और गार्तोक में अपने व्यापार एजेंट नियुक्त करे।

1906 पूर्वी तिब्बत पर चीनी सेनाओं की चढ़ाई के बाद ब्रिटेन ने तिब्बत पर चीन का अस्पष्ट रूप से परिभाशित अधिराज स्वीकार किया।

1909 दलाई लामा की निर्वासन से वापसी चीनी सेनाओं ने खाम (पूर्वी तिब्बत) के कुछ हिस्सों पर अधिकार कर लिया और दलाई लामा ने ब्रिटेन से सहायता मांगी।

1910 झाओं अरफेंग (चाओ अरफेंग) के नेतृत्व में 2,000 चीनी सैनिकों ने तिब्बत पर चढ़ाई कर दी और ल्हासा में प्रवेश किया। दलाई लामा भाग कर भारत गये। तिब्बतियों ने चीनी सैनिकों के साथ तब तक संघर्ष जारी रखा, जब तक कि उन्हें तिब्बत से बाहर नहीं कर दिया गया।

1911 चिंग वंश का पतन, बीजिंग में क्विंग (मांचू) वंश के शासन को उखाड़ फेंका गया और युआन शिकाई (युआन शिह–काई) के नेतृत्व में चीनी गणतंत्र की स्थापना हुई जिसने तिब्बत, सींक्यांग (पूर्वी तुर्किस्तान) और मंगोलिया को चीन का प्रांत घोशित किया।

1912 तिब्बत से चीनियों को बाहर किया गया। तेरहवें दलाई लामा तिब्बत वापस आए। समूचे देश में

तिब्बती लोग चीनियों के विरूद्ध मोर्चेबंद हो गये। 12 अगस्त को चीनियों ने तिब्बतियों के साथ एक समर्पण समझौते पर हस्ताक्षर किया और उन्हें भारत होते हुए चीन लौटने को बाध्य किया गया।

1913 तेरहवें दलाई लामा ने तिब्बत की स्वतंत्रता की घोषणा की।

1914 तिब्बत, ब्रिटेन और चीन एक समान ताकत के रूप में शिमला समझौते में शामिल हुए और प्रारंभिक स्तर पर चीन–तिब्बत सीमा विवाद के हल के लिए एक समझौता हुआ।

1918 तिब्बती सेनाएं पूरब की ओर बढ़ीं और उन्होंने चीन को हराया।

1920 तिब्बतियों को उनके स्वयं के शासन और स्व–सुरक्षा के लिए ब्रिटिश सहयोग का पुनः भरोसा प्रदान करने हेतु सर चार्ल्स बेल को ल्हासा भेजा गया।

1923 पंचेन लामा (जिन्हें चीन से घनिष्ठ संबंध होने के कारण लंबे समय से संदेह की नजर से देखा जा रहा था) ने तिब्बत सरकार के प्रति अपनी कर देयता को जमा करने से इंकार किया और चीन भाग गये।

1935 चौदहवें दलाई लामा तेनजिन ग्यात्सो का जन्म।

1940 चौदहवें दलाई लामा तेनजिन ग्यात्सो को ल्हासा में गद्दी पर बैठाया गया।

1941&44 द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान तिब्बत तटस्थ रहा और उसने अमेरिकियों या चीनी राश्ट्रवादियों को तिब्बती

भू–भाग से होकर सैन्य आपूर्ति की अनुमति नहीं दी।

1947 व्यापार संबंधों पर बातचीत और विदेशों से औपचारिक संबंधों की शुरूआत के लिए तिब्बत ने भारत, चीन, ब्रिटेन और अमेरिका में प्रतिनिधिमंडल भेजा।

1949 चीन में राष्ट्रवादियों (के एम टी) को पराजित कर जन मुक्ति सेना (पीएलए) सत्ता में आयी और 1 अक्टूबर को माओत्सेतुंग ने चीन जनवादी गणतंत्र की घोषणा की।

1950 15 वर्षीय चौदहवें दलाई लामा ने सरकार का संचालन अपने हाथ में लिया।

7 अक्टूबर को चीनियों ने यांगसी नदी को पार कर मध्य तिब्बत में प्रवेश किया और छाम्दो में छोटी सी रक्षक सेना को पराजित किया। चीन ने दावा किया कि तिब्बत हमेशा चीनी भू–भाग का हिस्सा रहा है। भारत ने इस पर आपत्ति प्रकट की। तिब्बत ने संयुक्त राष्ट्र में विरोध दर्ज किया। सुरक्षा परिषद ने ब्रिटेन के इस प्रस्ताव पर सहमति जाहिर की कि इस विवाद से जुड़े पक्षों को आपसी बातचीत के द्वारा मसले का हल तलाशना चाहिए।

1951 23 मई को नाबो नवांग जिग्में के नेतृत्व में तिब्बती प्रतिनिधिमंडल ने अपनी इच्छा के विपरीत चीन के दबाव में ''17 बिंदु वाले समझौते'' पर हस्ताक्षर किया, इसके अनुसार तिब्बत को सांस्कृतिक और राजनीतिक स्वायत्तता प्रदान की गयी लेकिन उसे स्वतंत्रता से वंचित कर दिया गया और तिब्बत को

चीन का एक ''राश्ट्रीय स्वायत्तषासी क्षेत्र '' बना दिया गया।

1954 29 अप्रैल को भारत व चीन ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किया जिसम शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के पंचशील सिद्धान्तों को प्रतिपादित किया गया और तिब्बत पर चीन के अधिकार को स्वीकार किया गया। जब चीनियों ने मठों को नष्ट करना शुरू किया और सामूहिकी करण को थोपना शुरू किया तो पूर्वी तिब्बत में विद्रोह शुरू हो गया। तिब्बती प्रतिरोध आंदोलन और स्वयंसेवी राष्ट्रीय सुरक्षा सेना का जन्म।

1955 तिब्बत स्वायत्तशासी क्षेत्र की प्रारंभिक समिति का गठन। दलाई लामा इसके अध्यक्ष तथा पंचेन लामा और झांग गुओहुआ इसके उपाध्यक्ष बनाए गये।

1956 बुद्ध जयंती के अवसर पर दलाई लामा भारत गये और उन्होंने प्रधानमंत्री नेहरू से कहा कि वह भारत में रूकना चाहते हैं। चाउ–एनलाई और माओ ने आश्वासन दिया कि तिब्बत में सुधारों को जबरन लागू नहीं किया जाएगा, इसके बाद दलाई लामा ल्हासा लौट गये।

1959 10 मार्च को हजारों तिब्बतियों ने ल्हासा के चौराहों पर प्रदर्शन किया।

17 मार्च को दलाई लामा भारत चले गये; उनके साथ 80,000 तिब्बती नागरिक भी भारत गये।

19 मार्च : चीन के खिलाफ जनक्रांति में तिब्बती सैनिक भी शामिल हो गये।

23 मार्च : चीनियों के विद्रोह का दमन कर दिया। चीन ने स्थानीय तिब्बती सरकार को भंग कर दिया और पंचेन लामा के नेतृत्व में वहां सैनिक सरकार थोप दिया तथा अप्रैल में ''लोकतांत्रिक सुधारों'' की शुरूआत । हजारों तिब्बतियों को मौत के घाट उतार दिया गया, जेल में बंद कर दिया गया या श्रम शिविरों में भेज दिया गया। मठों के विनाश का कार्य शुरू हुआ।

1959&61 द ग्रेट लीप फारवर्ड से बड़े पैमाने पर अकाल की स्थिति उत्पन्न हुई और ऐसा माना जाता है कि इससे चीन में तीन करोड़ लोग तथा तिब्बत में भी हजारों लोग मारे गये।

1962 20 अक्टूबर : सीमा विवाद को लेकर भारत पर चीन का आक्रमण।

1965 9 सिंतबर : तिब्बत स्वायत्तशासी क्षेत्र की औपचारिक रूप से स्थापना। तिब्बत में शेष बचे हुए 90 प्रतिशत मठों को नष्ट कर और तिब्बत के अधिकांश सांस्कृतिक व धार्मिक प्रथाओं को गैरकानूनी घोषित कर चीन के सांस्कृतिक क्रांति की शुरुआत। संयुक्त राष्ट्र ने एक प्रस्ताव पारित किया जिसमें तिब्बती जनता के आत्म–निर्धारण के अधिकार को स्वीकार किया गया।

1967 चीनी सांस्कृतिक क्रांति के दौरान तिब्बती मंदिरों, मठों, पुस्तकालयों और पवित्र स्मारकों को नष्ट कर दिया गया।

1976 माओ की मृत्यु के बाद सांस्कृतिक क्रांति की

समाप्ति, चीनियों ने ''तिब्बत में पहले हुई गलतियों'' को स्वीकार करते हुए सांस्कृतिक क्रांति और अति वामपंथी नीतियों के लिए ''चार लोगों के गिरोह'' को जिम्मेदार ठहराया।

1979 देंग जियोपिंग ने बाहरी दुनिया से रिश्ता कायम करने की एक नीति की शुरूआत की। उन्होंने इस शर्त पर दलाई लामा को निर्वासन से वापस आने के लिए आमंत्रित किया कि वह आने पर बीजिंग में ही रहेंगे। उन्हें तिब्बत में एक तथ्य–अन्वेशी दल भेजने की अनुमति दी गयीं। इस दल के प्रतिनिधियों का स्वागत स्वतंत्रता और दलाई लामा की वापसी की मांग कर रहे प्रदर्शन से हुआ, कई प्रदर्शनकारियों को जेल में बंद कर दिया गया।

1980 कम्युनिस्ट पार्टी के सचिव हू याओबैंग ने तिब्बत का दौरा किया और उदारीकरण की षुरुआत की जिसके तहत कुछ हद तक निजी व्यापार, धार्मिक गतिविधियों के वाह्य प्रदर्शन की अनुमति प्रदान की गयी और कई हजार चीनी कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओं को वापस चीन बुलाया गया।

1983 दलाई लामा ने चीन से बातचीत के लिए अपना एक दल बीजिंग भेजा लेकिन 1984 में बातचीत बीच में ही रुक गयी।

1987 वाशिंगटन में अमेरिकी कांग्रेस के दौरे के दौरान दलाई लामा ने पांच बिन्दुओं वाले शांति योजना का प्रस्ताव रखा।

27 सितंबर : ल्हासा में 21 भिक्षुओं द्वारा स्वतंत्रता

समर्थक प्रदर्शन का नेतृत्व।

1 अक्टूबर : 2 से 3 हजार प्रदर्शन कारियों की भीड़ पर पुलिस ने गोलीबारी शुरू कर दी जिससे कम से कम 9 लोग मारे गये। विदेशी पत्रकारों व पर्यटकों को बाहर निकाला गया।

1988 5 मार्च : ल्हासा में मोनलम उत्सव के अंतिम दिन बड़ा प्रदर्शन; सैकड़ों लोगों की गिरफ्तारी। चीनी पुलिसकर्मी व कुछ तिब्बती भी मरे।

जून : दलाई लामा ने स्ट्रास–बर्ग प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसमें तिब्बत के विदेशी नीति व रक्षा नीति पर चीनी नियंत्रण प्रदान करने और इसके बदले पूर्ण आंतरिक स्वायत्तता देने की बात की गयी। चीनियों ने उनसे इस मसले पर बातचीत करने का वचन दिया।

1989 29 जनवरी : शिगास्ते की यात्रा के दौरान पंचेन लामा की मृत्यु।

5 मार्च : ल्हासा में प्रदर्शकारियों के एक छोटे से समूह पर पुलिस ने फायरिंग की। प्रदर्शन और बढ़ गया और उसमें 10,000 से अधिक लोग शामिल हो गये। ऐसा माना जाता है कि 7 मार्च को ल्हासा में सैनिक षासन की घोषणा से पूर्व कम से कम 200 लोग मारे गये और कम से कम 400 गिरफ्तार किए गये। पी एल ए ने शहर पर कब्जा कर लिया और सभी विदेशी पर्यटकों, पत्रकारों और राजनयिकों को तिब्बत छोड़ने का आदेश दिया गया।

5 अक्टूबर : दलाई लामा को नोबेल शांति पुरस्कार मिला।

1990 अप्रैलः राजनीतिक रूप से सक्रिय होने के संदेह में मठों से कुछ भिक्षुओं व भिक्षुणिओं को बाहर किया गया।

1 मई : सैनिक शासन हटा लिया गया लेकिन विदेशी यात्रियों व पत्रकारों पर प्रतिबंध जारी रहा। राजधानी में छिटपुट प्रदर्शन जारी रहे लेकिन सशस्त्र पुलिस बल की संख्या बढ़ाकर अधिकांश प्रदर्शनों को तीव्रता से दबा दिया गया।

जुलाई : चीन की साम्यवादी पार्टी के सचिव और राष्ट्रपति जियांग जेमिन ने तिब्बत का दौरा किया। उन्होंने ''सुरक्षा व विकास'' की दोहरी नीति का आह्वान किया और ''निष्क्रिय'' या ''लो प्रोफाइल'' नीति की शुरूआत की। उनके साथ सेना प्रमुख (सी डी एस) ची हाओतियन भी आए थे जिससे यह संकेत मिला कि राष्ट्रपति की इस यात्रा का सैन्य उद्देश्य भी है।

अक्टूबर : पहली बार किसी विदेशी अधिकारी को तिब्बत की एक जेल के दौरे की अनुमति प्रदान की गयी।

निर्वासन में दलाई लामा का स्वीडन, डच व फ्रांस सरकार ने आधिकारिक यात्रा पर तथा चेक व जर्मन राष्ट्रपति ने उन्हें निजी यात्रा पर अपने देश में आमंत्रित किया

1991 23 मई : तथाकथित ''शंतिपूर्ण मुक्ति'' की चालीसवीं वर्षगांठ पर चीनियों ने तिब्बतवासियों को जबरदस्ती उत्सव मनाने को मजबूर किया। इसमें 1951 में हुए

17 बिंदुओं वाले समझौते पर हस्ताक्षर को तिब्बत की स्वतंत्रता पर हमले की बजाय एक प्रतिनिधि घटना के रूप में याद किया गया।

तिब्बत को विदेशी निवेशकों के लिए खोले जाने की घोषणा की गयी। हालांकि यह लगता है कि इसमें चीन के आंतरिक निवेशकों व प्रवासी चीनी निवेशकों पर ध्यान केंद्रित किया गया।

1992 मार्च : देंग जियोपिंग का ''स्प्रींग टाइड'' या ''समाजवादी बाजार अर्थव्यवस्था'' की शुरुआत के लिए आर्थिक सुधारों को तीव्र गति से लागू करने का आह्वान तिब्बत तक पहुंच गया और जून तक तेज सुधार के चालबाज कदमो से इस मामले में हिचकने वालों को बाहर कर दिया गया।

अप्रैल से : तिब्बत में चीनी उद्यमियों व छोटे व्यवसायियों का आगमन उल्लेखनीय रूप से बढ़ा।

1993 13 मई : पर्यटक गाइड व मानवाधिकार कार्यकर्ता गेनदुन रिंचेन को गिरफ्तार कर लिया गया ताकि वह तिब्बत की तथ्य अन्वेषी यात्रा पर आने वाले यूरोपीय आयोग के राजदूतों वाले उच्चस्तरीय दल से न मिल सकें। इस दल की यह यात्रा भ्रमपूर्ण वातावरण के कारण रद्द कर दी गयी क्योंकि चीन ने पहले तो रिंचेन की गिरफ्तारी की खबर को झूठा बताया पर बाद में उसे रिहा करने से मना कर दिया।

24 मई : कीमतों के बढ़ने के मसले पर ल्हासा में शुरू हुआ लगभग एक हजार तिब्बतियों का बड़ा

प्रदर्शन स्वतंत्रता समर्थक अभियान में बदल गया, यह 1989 के बाद सबसे बड़ा प्रदर्षन था; पुलिस ने भीड़ को तितर–बितर करने के लिए अश्रु गैस का प्रयोग किया जिसमें कुछ लोग घायल हुए।

जुलाई 1984 के बाद पहली बार निर्वासित तिब्बती अधिकारियों को बीजिंग से बातचीत करने वाले एक दल में षामिल होने की अनुमति दी गयी, इसमें दलाई लामा के भाई भी शामिल हुए। चीन ने प्रतिनिधिमंडल से कहा कि वह पंचेन लामा की तलाश में सहायता के लिए दलाई लामा से अनुरोध करें।

सितंबर : दलाई लामा और बीजिंग के संबंधों में अचानक गतिरोध आ गया और दलाई लामा ने डेंग जियोपिंग के साथ अपने पत्र व्यवहार को सार्वजनिक कर दिया।

1994 जनवरी : अंतरराष्ट्रीय दबाव के कारण गेनदुन रिचेन को रिहा कर दिया गया।

अप्रैल : अमेरिकी विदेश मंत्री की चीन यात्रा के दौरान चीन के प्रमुख विद्रोही नेता जिंगशेंग को बिजिंग में पुनः गिरफ्तार कर लिया गया।

26 मई : बिल क्लिंटन ने चीन–अमेरिकी व्यापार से जुड़ी मानवाधिकार की समस्त शर्तों को हटाने की घोषणा की।

जुलाई : ल्हासा के आसपास ''तीन नदियों'' के क्षेत्र में तीव्र आर्थिक विकास और धर्म के प्रसार पर

रोक की नीति पर मुहर लगाने हेतु चीनी नेताओं ने बीजिंग में ''तिब्बत पर तीसरा राष्ट्रीय कार्य सम्मेलन आयोजित किया।

9 अगस्त : 5 साल के जीर्णोद्धार के बाद पोटाला के पुनः खुलने का चीनियों ने उत्सव मनाया ।

26 नवंबर : धार्मिक असहिश्णुता पर संयुक्त राष्ट्र के विशेष सौहार्द् दूत ल्हासा पहुंचे, यह किसी भी संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार प्रतिनिधि की पहली चीन यात्रा थी। वह युलो से मिले और उन्होंने अति आलोचनात्मक रिपोर्ट जारी की जिसमें चीन से कहा गया कि वह अपने संविधान में परिवर्तन करे और कैद में रखे गये सभी भिक्षुओं व भिक्षुणियों को रिहा करें। लेकिन उसी दिन चीन सरकार ने मठों के निर्माण और नये लोगों के भिक्षु या भिक्षुणी बनने पर प्रतिबंध लगा दिया ।

1995 जनवरी से मार्च : स्वतंत्रता की मांग कर रहे 16 प्रदर्शनकारी और 100 से अधिक राजनीतिक कार्यकर्ता ल्हासा में गिरफ्तार।

30 जनवरी : तिब्बत में चीन द्वारा ''दलाई'' की व्यक्तिगत पदवी के विरुद्ध खण्डनात्मक भर्त्सना अभियान शुरु किया गया।

मार्च : ल्हासा के उत्तर में स्थित नलारिद्रा मठ को पुनर्गठित करने के लिए चीनी अधिकारियों को भेजा गया और उन्होंने 60 से अधिक भिक्षुओं को बाहर निकाल दिया।

17 मई : बालक पंचेन लामा गेन्दुन छोक्यी निमा की तलाश करने वाले दल का नेतृत्व करने वाले टाशि लुहन्पो के मठाध्यक्ष छड्रेल रिंपोछे को चीन ने गिरफ्तार कर लिया । बाल पंचेन लामा और उनके परिवार को सुरक्षा बलों के साथ उनके घर से हटाकर बीजिंग में एक अज्ञात स्थान पर छिपा दिया गया। शिगात्से में 5000 सुरक्षा बल भेजे गये।

13 जुलाई : चाड्रेल रिन्पोछे की निन्दा करवाने के विरोध में टाशि लुहन्पो मठ में धरना दे रहे 30 भिक्षुओं को गिरफ्तार किया गया। शिगात्से से सभी विदेशी पर्यटकों को बाहर किया गया।

1 सितंबर : कड़ी सुरक्षा व्यवस्था और विदेशियों के आने पर रोक लगाकर चीन ने तिब्बत स्वायत्तशासी क्षेत्र की स्थापना की 30 वीं वर्षगांठ मनायी।

11 नवंबर : चीनी प्रेस ने समाचार दिया कि शीर्ष लामाओं ने बीजिंग में हुई एक बैठक में गेन्दुन छोक्यी निमा को पंचेन लामा के रूप में अस्वीकार करने और पंचेन लामा के पुनःअवतार के रूप में दूसरे बालक के चयन की बात स्वीकार कर ली है।

दिसंबर : चीन ने पांच वर्षीय बालक ग्यालत्सेन नोर्बु को पंचेन लामा घोषित किया। दलाई लामा द्वारा मान्यता प्राप्त पंचेन लामा गेन्दुन छोक्यी निमा कहां हैं इसका पता नहीं चल पाया।

1996 18 जनवरी : पंचेन लामा के उत्तराधिकार विवाद में चीन के प्रमुख समर्थक सेंगचेन लोबसंग ग्यालत्सेन के घर पर बम विस्फोट हुआ।

1997 गेन्दुन छोक्यी निमा को बीजिंग स्थित एक मकान में नजरबंद किया गया।

नवंबर : चीन के राष्ट्रपति जियांग जेमिन अपनी पहली आधिकारिक यात्रा पर अमेरिका पहुंचे। चीन द्वारा मानवाधिकारों के उल्लंघन विशेषकर, तिब्बत में धार्मिक व अन्य स्वतंत्रताओं के दमन के विरोध में इस अवसर पर विभिन्न समूहों द्वारा कई प्रदर्शन किये गये।

1998 मार्चः आईसीजे के सुझावों को लागू करने का संयुक्त राष्ट्र पर दबाव बनाने के लिए तिब्बती युवा कांग्रेस के छह सदस्यों ने आमरण अनशन की शुरुआत की। दिल्ली पुलिस ने अनशन तुड़वाया। टीवाईसी के एक समर्थक थुपतेन न्गोडुप ने जान दे दी।

अक्टूबर 5: चीन ने इंटरनेशनल कॉवनेंट ऑन सिविल एंड पॉलिटिकल राइट्स (आईसीसीपीआर) पर दस्तखत किए।

1999 जूनः विश्व बैंक ने चीन के लिए 16 करोड़ डॉलर के विवादास्पद कर्ज को मंजूरी दी जिसके द्वारा तिब्बत के छिन्हाई (आमदो) में 58,000 चीनी किसानों को बसाना था। यह स्थानीय घुमंतू तिब्बती लोगों के सांस्कृतिक अस्तित्व पर बड़ा खतरा था।

2000 जनवरीः 17वें कर्मापा 14 वर्षीय ऊर्गेन ट्रिनले दोरजी तिब्बती में चीनी शासन के शिकंजे से भागकर भारत पहुंचे।

2001 मार्चः दलाई लामा ने निर्वाचित तिब्बती प्रशासन की अपनी पूरी प्रशासनिक जिम्मेदारी सीधे निर्वाचित

प्रधानमंत्री और संसद के हाथों में सौंप दी।

1 अप्रैलः चीनी राष्ट्रपति जियांग जेमिन ने तिब्बत में "स्ट्राइक हार्ड" अभियान की फिर से शुरुआत की। इसके तहत सिर्फ तिब्बत की आज़ादी या दलाई लामा का समर्थन करने पर भी तिब्बतियों को गिरफ्तारी, प्रताड़ना और लंबी कैद जैसी सजाओं का सामना करना पड़ता था।

जूनः चीन ने आमदो के गॉर्मू और ल्हासा के बीच रेल लाइन का निर्माण शुरू किया।

सितंबरः तिब्बत के इतिहास में पहली बार कालोन ट्रिपा (प्रधानमंत्री) चुनने के लिए तिब्बती जनता के बीच सीधे लोकतांत्रिक तरीके से चुनाव कराए गए।

2002 7 अप्रैलः सिचुआन प्रांत के लिथांग काउंटी में रहने वाले अतिप्रतिष्ठित लामा टुल्कू तेनजिन डेलेक और उनके चार सहायकों को पीएसबी अधिकारियों ने गिरफ्तार कर लिया। उन पर छेंगदू में हुए सिलसिलेवार बम विस्फोटों में शामिल होने का आरोप लगाया गया था।

2003 जून 2003 : भारतीय प्रधानमंत्री अटल विहारी वाजपेयी ने एक संयुक्त भारत – चीन समझौते पर हस्ताक्षर किया और कहा कि ''तिब्बत स्वायत्तशासी क्षेत्र चीन का हिस्सा है''।

2004 19 अक्टूबरः कठोर नीतियां और बढ़ाने के लिहाज से चीन जनवादी गणराज्य ने "स्ट्राइक हार्ड" अभियान की फिर से शुरुआत की। इस अभियान की पहली बार शुरुआत 1984 में की गई थी। इस अभियान

के द्वारा लगातार तिब्बती राजनीतिक असंतोष को रोकने और धार्मिक संस्थाओं को नियंत्रण में रखने का प्रयास किया गया।

2006 1 जुलाईः चीन सरकार ने 1,956 किलोमीटर लंबे गॉर्मू–ल्हासा रेलवे लाइन की शुरुआत की। यह लक्ष्य से एक साल पहले ही शुरू हो गया, इससे तिब्बत पहली बार चीन के मुख्य रेल नेटवर्क से जुड़ गया जिसे छिन्हाई–तिब्बत रेलमार्ग कहा गया।

30 सितंबरः चीनी जन सशस्त्र पुलिस (पीएपी) ने एवरेस्ट के बेस कैंप के पास 18,753 फुट की ऊंचाई पर भाग रहे 71 निहत्थे तिब्बती नागरिकों पर बिना किसी चेतावनी के अचानक गोलीबारी शुरू कर दी। इसमें एक नागरिक मारा गया और एक घायल हो गया। इस घटना का वीडियो फुटेज पूरी दुनिया में प्रसारित किया गया।

2007 3 जुलाईः तिब्बत में धार्मिक मामलों के राज्य प्रशासन ने "तिब्बती बौद्ध धर्म में जीवित बुद्ध के पुनर्जन्म के प्रबंधन के उपायों" पर एक आदेश पारित किया जिसे ऑर्डर नंबर 5 कहा गया। यह आदेश 1 सितंबर, 2007 से लागू हो गया।

17 अक्टूबरः वाशिंगटन डीसी में आयोजित एक औपचारिक समारोह में अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश ने परम पावन दलाई लामा को अमेरिकी कांग्रेसनल गोल्ड मेडल प्रदान किया। सीटीए ने इस खुशी के अवसर पर इस दिन को राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया।

2008

10 मार्चः समूचे तिब्बत (तिब्बत स्वायत्तशासी क्षेत्र के भीतर एवं बाहर भी) में आज़ादी समर्थक प्रदर्शन शुरू हुए। यह प्रदर्शन तब शुरू हुए जब तिब्बत की राजधानी ल्हासा के बारखोर क्षेत्र में 7 बौद्ध भिक्षुओं ने 3 तिब्बती राष्ट्रीय ध्वज लहराते हुए एक शांतिपूर्ण प्रदर्शन किया।

3 अप्रैलः ल्हासा के कम्युनिस्ट पार्टी के उप सचिव ने बताया कि पिछले महीने हुए भीषण दंगों के बाद 1,000 से ज्यादा तिब्बती नागरिकों को गिरफ्तार किया गया है या वे स्वयं पुलिस की हिरासत में आ गए हैं।

10 जूनः अमेरिका और यूरोपीय संघ ने एक संयुक्त घोषणा पत्र जारी किया जिसमें चीन से कहा गया कि वह तिब्बत मसले पर दलाई लामा के प्रतिनिधियों से कोई "नतीजे पर पहुंचने वाली" बातचीत करे।

17 सितंबरः अमेरिकी सीनेटर गॉर्डन स्मिथ और रसेल फीनगोल्ड द्वारा पेश प्रस्ताव को सीनेट द्वारा सर्वसम्मति से पारित किया गया। इस प्रस्ताव में मांग की गई कि परम पावन दलाई लामा के प्रतिनिधियों और चीन सरकार के बीच तिब्बत मसले के एक परस्पर स्वीकार्य हल के लिए तत्काल बातचीत शुरू की जाए। यह हल ऐसा हो जिससे तिब्बती जनता की वैधानिक शिकायतों का समाधान हो सके।

31 अक्टूबरः बीजिंग में तिब्बती और चीनी प्रतिनिधियों और के बीच हुए आठवें दौर की वार्ता में चीनी नेतृत्व को "तिब्बती जनता के लिए वास्तविक स्वायत्तता का ज्ञापन" सौंपा गया।

17 से 22 नवंबरः 19 देशों से आए हुए 581 तिब्बती प्रतिनिधि धर्मशाला में आयोजित तिब्बत पर पहली विशेष आमसभा में शामिल हुए।

10 दिसंबरः 300 से ज्यादा चीनी आंदोलनकारियों (जिसमें वकील, लेखक, विद्वान और कलाकार शामिल थे) ने एक ऑनलाइन स्टेटमेंट "चार्टर 08" जारी किया। जिसमें मांग की गई थी कि चीनी नागरिकों को ज्यादा आज़ादी दी जाए और एक पार्टी की व्यवस्था को बदला जाए।

12 दिसंबरः संयुक्त राष्ट्र के प्रमुख बान की मून ने चीन से आग्रह किया कि वह तिब्बत के मामले में गंभीरता से बातचीत करे।

2009 31 मार्चः नई दिल्ली में 26 से 31 मार्च तक पांच दिवसीय "धन्यवाद भारत" समारोह का आयोजन किया गया। इसके साथ ही तिब्बती जनता के निर्वासन में 50 वर्ष पूरा होने पर चलने वाले साल भर के कार्यक्रमों की शुरुआत हुई। इन कार्यक्रमों के द्वारा तिब्बती जनता पिछले 50 साल में भारतीय जनता और सरकार द्वारा दिए गए नैतिक और भौतिक सहयोग के लिए अपना हार्दिक आभार प्रकट करेगी।

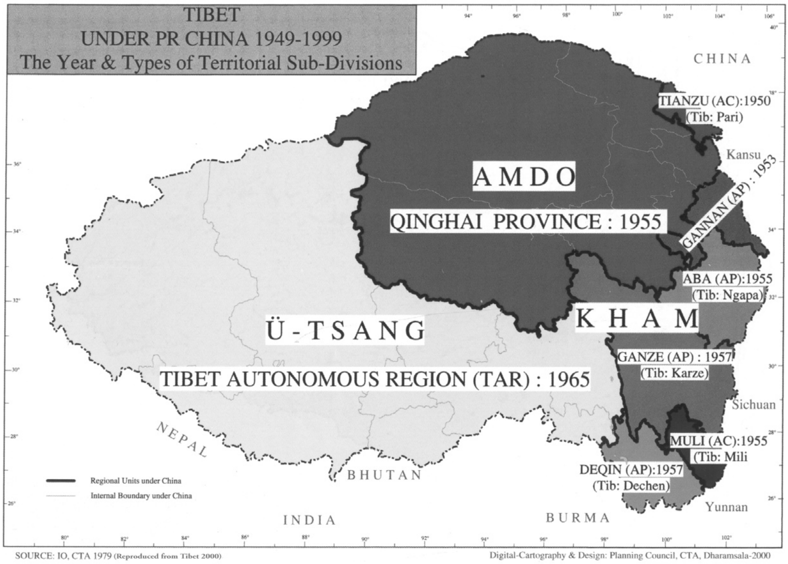

tul[;k% तिब्बत की कुल आबादी 60 लाख है, जिसमें से 20.9 लाख लोग और तिब्बत स्वायत्तशासी क्षेत्र में रहते हैं और बाकी तिब्बत स्वायत्तशासी क्षेत्र के बाहर सम्पूर्ण तिब्बत में फैले हुए हैं।

frCcr Lok;Ÿk'kklh {ks= D;k g\

तथाकथित तिब्बत स्वायत्तशासी क्षेत्र जिसकी रचना चीन द्वारा 1965 में की गई थी। तिब्बत के कुल भू–क्षेत्र के आधे भाग से भी कम है तथा इसकी आबादी का केवल एक तिहाई हिस्सा ही है। (वास्तव में तिब्बत का अर्थ है उ–त्सांग, खम तथा अम्दो प्रान्त। तिब्बत को केवल तिब्बत को स्वायत्तशासी क्षेत्र समझना अनुचित और भ्रामक है।)

Hkw&{ks=%

तिब्बत का क्षेत्रफल 25 लाख वर्ग कि0 मी0 है जिसमें उ–त्सांग, खम तथा अम्दो प्रान्त शामिल है। तिब्बती स्वायत्तशासी क्षेत्र में सम्पूर्ण उ–त्सांग और खम का एक छोटा–सा भाग शामिल है,

जिसका क्षेत्रफल 12 लाख वर्ग कि0 मी0 है। अधिकांश तिब्बत ''तिब्बत स्वायत्तशासी क्षेत्र'' से बाहर हैं।

ç’kklu

चीनी आधिपत्य के अधीन तिब्बत निम्नलिखित प्रशासनिक ईकाइयों मे बंटा हुआ है :

1) तिब्बत स्वायत्तशासी क्षेत्र

2) छंघाई प्रान्त

3) गांसुप्रान्त में टियांसु तिब्बती स्वायत्तशासी स्थानीय प्रशासनिक खण्ड तथा गन्नन तिब्बती स्वायत्तशासी प्रशासनिक अधिकारिक क्षेत्र।

4) आबा तिब्बती–छयांग स्वायत्तशासी प्रशासनिक अधिकारिक क्षेत्र तथा मीलि तिब्बती स्वायत्तशासी स्थानीय प्रशासनिक खण्ड जो कि सिचुआन प्रान्त में स्थित है।

5) युन्नान प्रान्त में देचेन तिब्बती स्वायत्तशासी प्रशसनि अधिकारिक क्षेत्र।

frCCr ij phuh dCt dk ,d voykdu

- 1.2 लाख से भी अधिक तिब्बती मारे जा चुके हैं।
- 6000 से भी अधिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक संस्थान नष्ट किए जा चुके हैं।
- हज़ारों तिब्बती मौलिक अधिकारों का प्रयोग करने के आरोप में जेलों में बन्द हैं।
- तिब्बत के प्राकृतिक संसाधनों तथा कोमल पर्यावरण को बुरी तरह नष्ट कर दिया गया है।
- यह एक प्रमाणिक तथ्य है कि तिब्बत को आणविक कचरा फेंकने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है।
- तिब्बत में तिब्बती लोगों की आबादी (60 लाख) से अधिक चीनी लोगों की आबादी (75 लाख) हो गई है।
- तिब्बत जो कभी भारत और चीन के बीच का एक शांतिपूर्ण मध्यस्थ राज्य था एक व्यापक सैनिक अड्डे में बदल दिया गया है।

or|eku frCcr vk|j bldh xHkhj fLFkfr

lkoHkkfed ekuokf/kdkj

1998 के अंत तक चीन जनवादी गणतंत्र ने मानवाधिकारों के अंतरराष्ट्रीय विधेयक से संबंधित तीन संविदाओं पर हस्ताक्षर किये लेकिन उसने घरेलू स्तर पर और तिब्बत में अभी तक उसे लागू नहीं किया है। तिब्बती लोगों के दैनिक जीवन और उनकी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान के अस्तित्व के लिए चुनौती पैदा करने वाले मानवाधिकारों के व्यक्तिगत व सामूहिक स्तर पर उल्लंघन जारी हैं।

30 सितंबर 2006 को हुए नागपा ला गोलीबारी की घटना काफी महत्वपूर्ण है। इस घटना में दो तिब्बती मारे गए थे और करीब 30 को गिरफ्तार कर लिया गया था जिसमें से 14 बच्चे थे। इस घटना से यह तो पता चलता ही है कि तिब्बत में किसी हद तक मानवाधिकारों का उल्लंघन हो रहा है, बल्कि यह भी पता चलता कि किस तरह चीन की सीमा पुलिस बिना किसी भय के मानवाधिकारों का उल्लंघन करने में लगी है। इस दुःखद घटना के बाद तिब्बत स्वायत्तशासी क्षेत्र के सभी जन सुरक्षा ब्यूरो (पीएसबी) को साल 2007 की पहली छमाही में यह निर्देश दिया गया कि वे सीमा पार करने की अवैध घटनाओं पर अंकुश लगाएं। इसे अलगाववाद के खिलाफ "स्ट्राइक हार्ड" अभियान का ही हिस्सा बताया गया ताकि क्षेत्र में स्थिरता कायम रह सके। इसके परिणामस्वरूप सीमा की गश्ती बढ़ा दी गई और दमन की भूमि से भागने का प्रयास करने वाले तिब्बती नागरिकों को रोकने के लिए कठोर उपाय किए गए।

निर्वासित तिब्बती सरकार ने औपचारिक रूप से यह कहा है कि तिब्बत में तिब्बतियों के प्रति चीन सरकार की नीति अब भी उन्हें जीवन, स्वतंत्रता व सुरक्षा, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, धर्म, संस्कृति

और शिक्षा के अधिकारों से वंचित करती है। आज तिब्बत की हालत यह है कि:

- चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की विचारधारा के विपरीत मत प्रकट करने पर गिरफ्तारी तक हो सकती है।
- दलाई लामा के प्रति राजभक्ति, तिब्बती राष्ट्रवाद और किसी भी प्रकार के विरोध के दमन के लिए चीन सरकार ने सुनियोजित ढंग से धार्मिक संस्थाओं में पुलिस के लोगों को भर दिया है।
- तिब्बती लोगों को स्वच्छन्द रूप से गिरफ्तार और नजरबंद किया जाता है।
- बंदी बनाये गये लोगों को प्रायः कानूनी प्रक्रिया से वंचित रखा जाता है और चीन की कानूनी प्रक्रिया भी अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप नहीं है।
- प्रताड़ना के विरूद्ध संयुक्त राष्ट्र के समझौते के विपरीत चीन के जेलों और कारावास केन्द्रों में प्रताड़ना देने की प्रथा अब भी जारी है।
- तिब्बती महिलाओं को नसबंदी, गर्भ धारण न करने ओर गर्भपात के लिए मजबूर किया जाता है।
- जीविका की कठिनाइयों, अपर्याप्त सुविधाओं और भेदभावपूर्ण उपायों के कारण बहुत से तिब्बती बच्चों को स्वास्थ्य और शिक्षा की पर्याप्त व्यवस्था नहीं मिल पाती।
- चीनी शासन में अन्य कारणों की तुलना में राजनीतिक कारणों से बंदी बनाये जाने की दर काफी अधिक है।

- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को बाधित करने की चीन की नीति से बच्चों को भी नहीं बख्शा गया है। बहुत से तिब्बती राजनीतिक कैदियों की उम्र 18 वर्ष से कम है और बाल भिक्षुओ व भिक्षुणियों को नियमित रूप से उनके धार्मिक संस्थाओं से बेदखल किया जा रहा है। चीन ने हाल में ही तिब्बत को गैर बौद्ध क्षेत्र घोषित किया है।

- लोगों के लापता होने की घटनाएं लगातार जारी हैं। प्रायः लोगों को कैद कर लिया जाता है और उन्हें कहां रखा गया है, इसकी जानकारी किसी को नहीं दी जाती।

- 15 वर्षीय ग्यारहवें पंचेन लामा तब से ही गायब हैं जब 1995 में उनके पद की घोषणा की गयी थी।

- तिब्बत स्वायत्तशासी क्षेत्र (टीए आर) में रहने वाले 70 प्रतिशत से अधिक तिब्बती गरीबी रेखा से नीचे हैं।

- टीसीएचआरडी की साल 2009 की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार साल 2008 की गर्मियों के बाद से कुल 1,542 तिब्बती नागरिक हिरासत में हैं या जेल की सजा भुगत रहे हैं। हालांकि, वास्तविक आंकड़ा इससे काफी ज्यादा हो सकता है।

चीन सरकार मानवाधिकारों के समझौतों का पालन करे इसके लिए यह जरूरी है की उस पर नियमित रूप से अंतरराष्ट्रीय दबाव बनाया जाए।

frCcr dk i;koj.k

एशिया के हृदय स्थल में स्थित तिब्बत पर्यावरणीय दृष्टि से दुनिया के सबसे रणनीतिक और संवेदनशील क्षेत्र में स्थित है। पृथ्वी के

सजीव और निर्जीव दोनों तरह के तत्वों के अन्योन्याश्रय के बौद्ध मान्यता से निर्देशित होने वाले तिब्बती प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर रहते हैं। लेकिन तिब्बत पर चीनी आधिपत्य के बाद चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की उपभोक्तावादी और भौतिकवादी विचारधारा ने तिब्बती लोगों के प्रकृति अनुकूल रवैये को कुचल दिया। पिछले पचास वर्षों में तिब्बत में वनों की कटाई, मृदा अपक्षरण, वन्यजीवों की मौत, अत्यधिक चराई, अनियंत्रित खनन और नाभिकीय कचरे के जमाव के रूप में बड़े पैमाने पर पर्यावरणीय विनाश हुआ है। आज भी चीनी शासन के लोग प्रायः विदेशी शह पर बिना किसी पर्यावरण ीय सुरक्षा के विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों का दोहन जारी रखे हुए हैं। इसके परिणामस्वरूप तिब्बत एक पर्यावरणीय संकट का सामना कर रहा है जिसका प्रभाव तिब्बत की सीमाओं से काफी दूर तक महसूस किया जा सकता है।

ouk dk mtMuk

दुनिया के उत्तम किस्म के संरक्षित वनों में से कई तिब्बत में हैं। सैकड़ों वर्षों में विकसित इन वनों में कई वृक्ष नब्बे फीट तक ऊँचे हैं और उनकी गोलाई 5 फीट या उससे भी अधिक है। तिब्बत के लिए चीन की ''विकास'' और ''आधुनिकीकरण'' की योजनाओं ने इन वनों का अविवेकपूर्ण विनाश किया है। 1959 में तिब्बत में 2.52 करोड हेक्टेयर वन क्षेत्र था जो 1985 में घटकर सिर्फ 1.36 करोड़ हेक्टेयर रह गया। तिब्बत के वनों का 46 प्रतिशत से अधिक हिस्सा नष्ट हो चुका है और कुछ क्षेत्रों में वनों का 80 प्रतिशत तक हिस्सा नष्ट हो चुका है। 1959 से 1985 के बीच चीनी लोग तिब्बत से 54 अरब डॉलर कीमत की लकड़ी ले गये। वनों की कटाई और वनारोपण के अपर्याप्त कार्यक्रमों ने वन्यजीवन पर गंभीर प्रभाव डाला और इससे मृदा अपरदन और वैश्विक मौसम प्रवृत्ति में बदलाव को बढ़ावा मिला।

e'nk vijnu vkj ck<

तिब्बत में बड़े पैमाने पर वनों की कटाई, खनन और गहन कृषि के तरीकों से मृदा अपरदन को बढ़ावा मिला है और एशिया की कई सर्वाधिक महत्वपूर्ण नदियों में गाद का जमाव हुआ है। मेकांग, यांगसी, सिंधु, सालवीन और येलो नदियों में गाद के जमाव से इन नदियों का तल ऊपर हो गया है और इस कारण हाल के वर्षों में एशियाई क्षेत्रों में कई भीषण बाढ़ आए हैं। 1987 – 88 में भारत में आने वाली बाढ़ में से 35 प्रतिशत या उससे अधिक का योगदान ब्रह्मपुत्र नदी का था। इसके कारण भूस्खलन को बढ़ावा मिला और खेती की संभावना वाले भूमि में कमी आयी जिससे तिब्बत के नीचे स्थित भू–भाग में रहने वाली दुनिया की आबादी के लगभग आधे लोग प्रभावित हुए।

frCcr dh fo'kky fgeufn;ksa dk fi?kyuk

तिब्बती पठार पर बर्फ से ढके पहाड़ों और इसमें नदियों के स्रोत को देखते हुए हाल में इसे "तीसरा ध्रुव" और "एशिया का वाटर टावर" नाम दिया गया है। तिब्बती पठार में करीब 1,05,000 वर्ग किलोमीटर में फैली 46,000 से ज्यादा हिमनदियां हैं। यह पृथ्वी के सबसे ज्यादा हिमनदियों वाला क्षेत्र है। तिब्बत मौसम ब्यूरो से हासिल आंकड़ों के अनुसार साल 1980 के बाद तिब्बत के औसत तापमान में 0.9 सेंटीग्रेड की बढ़त हुई है और इसके हिमनदियों का क्षेत्र हर साल 7 फीसदी तक सिमट रहा है। चीनी रिसर्चरों का भी दावा है कि ग्लोबल वार्मिंग अब इससे ज्यादा नहीं बढ़ता है तो भी मौजूदा दर से देखें तो साल 2050 तक तिब्बत के हिमनदी क्षेत्रफल में एक तिहाई और 2090 तक 50 फीसदी तक की कमी हो जाएगी।

तिब्बत की विशाल हिमनदियां यहां की दस बड़ी नदियों के लिए जल का स्रोत हैं और तिब्बत की करीब 90 फीसदी नदियां नीचे की ओर बहते हुए एशिया के 11 देशों तक जाती हैं। तिब्बत की

एक हिमनदी जेपु की मोटाई यानी बर्फ का गाढ़ापन पिछले तीन दशक में 100 गज से भी ज्यादा घट गई है। इसकी मुख्य वजह इस क्षेत्र में बढ़ता जा रहा तापमान है। ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों के साथ काम करते हुए डॉ. याओ ने पूरे तिब्बत की हिमनदियों के बर्फ स्तर में गिरावट का पता लगाया है। तिब्बत पृथ्वी के सबसे बड़े और उच्च पर्वतों वाली भूमि है और यहां सबसे ज्यादा हिमनदियां हैं।

of’od tyok;| iHkko

वैज्ञानिकों ने तिब्बती पठार पर स्थित प्राकृतिक वनस्पतियों एवं मानसून की स्थिरता के बीच एक अंर्तसंबंध ढूंढा है जो दक्षिण एशिया के लिए अपरिहार्य है। वैज्ञानिकों ने यह भी खोजा है कि तिब्बती पठार का पर्यावरण उन जेट धाराओं को प्रभावित करता है जो प्रशांत क्षेत्र में टायफून और अलनीनो प्रभाव से संबंधित हैं। इसके कारण समूची दुनिया के पर्यावरण पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

oU; thou dk fouk’k

1901 में तेरहवें दलाई लामा ने तिब्बत में वन्य जीवों के शिकार पर प्रतिबंध का शासनादेश जारी किया। दुर्भाग्य से चीनी शासन ने इस प्रकार का कोई प्रतिबंध नहीं लगाया और इसके विपरीत विलुप्तप्राय प्रजातियों के शिकार को बढ़ावा दिया गया। इस समय तिब्बत के पठार पर कम से कम 81 विलुप्तप्राय प्रजातियां हैं जिसमें से 39 स्तनधारी, 37 पक्षी, चार उभयचर और एक सरीसृप वर्ग का प्राणी है। संभवतः इनमें से सबसे प्रसिद्ध विशालकाय पांडा है जो मूलरूप से तिब्बत में पाया जाता है और जिसे चीनियों ने अपने राष्ट्रीय शुभंकर के रूप में प्रचारित किया है।

vfu;f=r [kuu

चीन सरकार ने औद्योगिक वृद्धि के लिए कच्चे माल की जरूरतों की

पूर्ति के लिए बोरैक्स, क्रोमियम, नमक, तांबा, सोना और यूरेनियम के निष्कर्षण को बड़े पैमाने पर बढ़ावा दिया है। इस बात की आशंका है कि चीन के 15 प्रमुख खनिजों में सात का भंडार अगले एक दशक तक समाप्त हो जाएगा और इसके कारण ही तिब्बत से खनिजों का निष्कर्षण काफी तेजी से और अनियंत्रित ढंग से बढ़ रहा है। खनन गतिविधियों के बढ़ने से वनस्पतियों के क्षेत्रफल में कमी हो रही है जिसके कारण भीषण भूस्खलन, व्यापक मृदा अपरदन, वन्यजीवन पर्यावास को क्षति और नदियों व जलधाराओं के प्रदूषण में वृद्धि हुई है। अब तिब्बत में रेलवे लाइन पहुंच चुकी है और इसका और विस्तार किया जा रहा है जिससे खनिज पदार्थों का दोहन और भी बढ़ सकता है।

ukfHkdh; dpjs dk teko

कभी भारत व चीन के बीच शांतिपूर्ण अंतःस्थ राज्य (बफर स्टेट) के रूप में स्थित तिब्बत का आज इस हद तक सैन्यीकरण हो चुका है कि वहां कम से कम तीन लाख चीनी सैनिक हैं और चीन के कुल नाभिकीय मिसाइल का लगभग एक चौथाई हिस्सा यहां तैनात है। चीनियों द्वारा तिब्बत में पहला नाभिकीय हथियार 1971 में लाया गया। आज, ऐसा लग रहा है कि चीनी शासक तिब्बत को अपने देश के व विदेशी, दोनों तरह के नाभिकीय हथियारों के कूड़ेदान के रूप में इस्तेमाल कर रहे हैं। 1984 में चीनी नाभिकीय उद्योग निगम ने 1500 डॉलर प्रति किलोग्राम की दर से पश्चिमी देशों के नाभिकीय कचरे के निस्तारण का प्रस्ताव रखा था।

चीनी नाभिकीय भंडार स्थलों के आसपास रहने वाले तिब्बतियों और पशुधन के रहस्यमय मौतों की रिपोर्ट मिली है, साथ ही कैंसर व जन्मगत दोशों के मामलों में बढ़ोतरी हुई है। इसके अलावा जलस्रोतों के प्रदूशण के मामले भी सामने आए हैं। इसका चिंताजनक पहलू यह है कि स्थानीय चीनी जनसंख्या को इन स्रोतों

के जल के उपयोग न करने की चेतावनी दी जाती है, लेकिन स्थानीय तिब्बतियों को इस प्रकार की चेतावनी नहीं दी जाती। तिब्बत के पठार की संवेदनशील पारिस्थितिकी अथवा उस भूमि के हकदार निवासियों के प्रति किसी प्रकार की परवाह किए बिना चीन उस पर अपना नियंत्रण जारी रखे हुए है।

ekmV ,ojLV rd tk,xh lMd

चीन ने माउंट एवरेस्ट तक मोटर चलने लायक 108 किलोमीटर लंबी सड़क बनाने की शुरुआत की है। तिब्बत–नेपाल सीमा के साथ बनने वाली यह सड़क परियोजना बीजिंग ओलंपिक 2008 के टॉर्च रिले का ही हिस्सा है। इसका हिमालय की हिमनदियों पर बहुत गंभीर असर होगा क्योंकि इससे बहुत ज्यादा लोग एवरेस्ट तक जाएंगे, मानवीय गतिविधियां बढ़ेंगी, होटलों का निर्माण होगा, जीवाश्म ईंधन का उपभोग बढ़ेगा, ज्यादा उत्सर्जन होगा और ज्यादा कचरा पैदा होगा।

chftx&Ygklk jyo ykbu

गॉर्मू (गोलमुड) से ल्हासा को जोड़ने वाली रेल लाइन 1 जुलाई, 2006 से चालू हो चुकी है। अब चीन सरकार रेल लाइन को शिगस्ते (दक्षिण–पश्चिम) और त्सेतंग (दक्षिण–पूर्व) ले जाने की तैयारी कर रही है। इससे चीन सरकार तिब्बती इलाके में तत्काल सेना भेज पाएगी और तिब्बत में किसी अशांति का आसानी से दमन कर पाएगी ताकि इस क्षेत्र में अपना सैन्य, राजनीतिक और आर्थिक आधिपत्य कायम कर सके। चाइना टिबेट ऑनलाइन की रिपोर्ट के अनुसार अगस्त 2009 माह के दौरान करीब 13.7 लाख पर्यटकों ने तिब्बत स्वायत्तशासी क्षेत्र की यात्रा की जिससे चीन सरकार को करीब 14.6 करोड़ डॉलर की आय हुई।

cnyh tk jgh frCcr dh fo'kky ufn;ksa dh fn'kk

चीन तिब्बत के समूचे नदी प्रणाली से छेड़छाड़ करने का प्रयास कर रहा है जिस पर निचली धाराओं के पास रहने वाले अरबों लोगों का जीवन निर्भर करता है। दुनिया में सबसे ज्यादा बांध चीन के पास ही हैं (80,000) जिनमें से करीब 22,000 बांध बड़े आकार के हैं। चीन अब भी सालवीन नदी पर 13 बांध और मेकोंग नदी पर कई और बांध बनाने की तैयारी कर रहा है। चीन के मरुस्थलीय सूखाग्रस्त उत्तरी क्षेत्रों तक पानी पहुंचाने के लिए ब्रह्मपुत्र नदी की दिशा मोड़ने का वहां की सरकार की एक बड़ी और पर्यावरण के लिए विनाशकारी परियोजना हाल में चर्चा में रही है। इस परियोजना से न केवल लाखों लोगों का विस्थापन होगा, बल्कि ब्रह्मपुत्र की निचली धाराओं के पास आने वाले देशों को इसका भारी नुकसान उठाना पड़ेगा। उधर ग्रामीण तिब्बतियों को पर्याप्त मात्रा में जलापूर्ति न होने के कारण अब भी बड़े पैमाने पर जल जनित बीमारियों, हेपेटाइटिस और पीठ में दर्द जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। अक्सर नदियों पर बनने वाले बांध के लिए चीन इनकी निचली धाराओं के पास रहने वाले देशों से कोई राय नहीं लेता।

lLÑfr o /keZ

सांस्कृतिक क्रांति के दौरान तिब्बत में चीन द्वारा धर्म के अनवरत विनाश के कारण 6000 से अधिक मठ व अनगिनत धार्मिक संघ नष्ट हो गये और अब भी धर्म के प्रति साम्यवादी रवैये में बहुत कम बदलाव आया है। 1996 में, विशेषकर तिब्बती बौद्ध धर्म को लक्ष्य बनाकर ''स्ट्राइक हार्ड'' अभियान शुरू किया गया। हाल के वर्षों में यह अभियान जोरदार ढंग से चलाया गया।

अपनी कठोर नीतियों को और तेज करने के लिए 19 अक्टूबर, 2004 को चीन जनवादी गणतंत्र ने "स्ट्राइक हार्ड" अभियान की फिर

से शुरुआत कर दी। इस अभियान की सबसे पहले साल 1984 में शुरुआत की गई थी ताकि तिब्बती राजनीतिक असंतोश और धार्मिक संस्थाओं पर व्यवस्थित तरीके से अंकुश लगाया जा सके।

frCcr dk vk/;kfRed urkvk dh fuUnk

मजबूर तिब्बतियों को तिब्बत के आध्यात्मिक व लौकिक नेता दलाई लामा व उनके द्वारा चुने गये पंचेन लामा की निन्दा करके अपनी राजभक्ति प्रकट करनी पड़ती है। ऐसा न करने पर उन्हें जेल भेजा जा सकता है या अन्य कोई सजा दी जा सकती है। आज तिब्बत में दलाई लामा का चित्र रखना भी गुनाह हो गया है।

चीन सरकार अब धार्मिक मामलों के राज्य प्रशासन द्वारा 13 जुलाई 2007 को पारित एक नए कानून के द्वारा तिब्बती बौद्ध धर्म पर नियंत्रण और सख्त कर रही है। इस कानून के अनुसार अब लामाओं के पुनर्जन्म को अपनाने से पहले सरकार की इजाजत लेनी होगी। वास्तव में यह तिब्बतियों की सदियों पुरानी धार्मिक परंपरा के पूरी तरह खिलाफ है। तिब्बती संस्कृति के दमन और तिब्बती धार्मिक हस्तियों के जीवन पर नियंत्रण का एक कम्युनिस्ट चीन का एक और बेतुका प्रयास है।

tul[;k LFkkukarj.k

हाल के वर्षों में चीनी जनसंख्या के तिब्बत में निरंतर स्थानांतरण से तिब्बती अपनी मातृभूमि पर ही अल्पसंख्यक हो गये हैं। आज तिब्बत में 60 लाख तिब्बतियों की तुलना में 75 लाख चीनी लोग बसा दिये गये हैं। इन आंकड़ों में लाखों चीनी सैनिकों और गैर पंजीकृत चीनी प्रवासियों को शामिल नहीं किया गया है। आर्थिक व सामाजिक विकास के बहाने सुविचारित और सरकार द्वारा प्रोत्साहित जनसंख्या स्थानांतरण ने तिब्बतियों को आर्थिक, शैक्षणिक, राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों में पीछे कर दिया है जिससे तिब्बती संस्कृति के

मिट जाने का खतरा उत्पन्न हो गया है।

गॉर्मू और ल्हासा के बीच जुलाई, 2006 में शुरू हुए रेलमार्ग से तिब्बत में चीनी जनसंख्या की बाढ़ ला देने की इस अनैतिक नीति पर काम और तेज हुआ है। इसप्रकार जनसंख्या के लिहाज से तिब्बतियों के लिए यह असंभव बना दिया जा रहा है कि वे विरोध में खड़े हो सकें जैसा कि इनर मंगोलिया और सीक्यांग में हुआ है। एक अनुमान के अनुसार रेलवे मार्ग से ल्हासा में हर दिन 5,000 से 6,000 चीनी नागरिक पहुंच रहे हैं। इनमें से 2,000 से 3,000 नागरिक ही चीन में वापस अपने घर जाते हैं बाकी तिब्बत में ही हमेशा के लिए अपना डेरा जमा लेते हैं। यदि यह प्रवृत्ति जारी रही तो बीजिंग को तिब्बत मसले को अपने ढंग से “निपटाने में” देर नहीं लगेगी।

f’k{kk

तिब्बत पर चीनी अधिग्रहण और चीनियों के भारी संख्या में तिब्बत में बसने से चीनी भाषा ने तिब्बती भाषा को पीछे कर दिया है। सभी क्षेत्रों में चीनी भाषा को अनावश्यक महत्व देकर चीन सरकार तिब्बती संस्कृति का दमन कर रही है। पूरी तरह चीनी लोगों और साम्यवादी विचारधारा के द्वारा नियंत्रित तिब्बत की शिक्षा प्रणाली चीनी आप्रवासी को लक्ष्य करके बनायी गयी है।

चीन जनवादी गणराज्य (पीआरसी) के शासन के तहत तिब्बत में शिक्षा का स्तर काफी गिर गया है क्योंकि सरकार शिक्षा को प्रचार का एक माध्यम और कम्युनिस्ट पार्टी की तिब्बत पर पकड़ मजबूत बनाने के साधन के रूप में इस्तेमाल कर रही है। स्कूलों की खराब दशा, शिक्षण का घटिया स्तर और पाठ्यक्रम ऐसा कि बच्चों को समाजवादी विचारधारा की घुट्टी पिलाई जा सके, यह तिब्बत की शिक्षा व्यवस्था की विशेषता है। इसके अलावा बच्चों को अपनी भाषा में बात करने, अपने इतिहास को पढ़ने के लिए हतोत्साहित किया

जाता है। इसकी वजह से तिब्बत के बच्चे बड़ी संख्या में भागकर निर्वासन का दर्दनाक जीवन अपनाने का निर्णय लेते हैं क्योंकि भारत और अन्य देशों में उन्हें व्यापक आधुनिक शिक्षा हासिल करने का अवसर मिलता है।

vFk0;oLFkk

नस्लीय विभाजन वाले आर्थिक बढ़त में विकास परियोजनाओं का तिब्बतियों को कोई सीधा लाभ नहीं मिलता। सरकार की सोच ऐसी परियोजनाएं लागू करने की है जिसमें संसाधनों को दोहन हो बशर्ते कि मानवीय क्षमता के विकास के। यह संयुक्त राष्ट्र मानव विकास रिपोर्ट से साफ हो जाती है जिसके अनुसार चीन के सभी प्रांतों की तुलना में तिब्बत में मानव विकास सूचकांक सबसे नीचे है। शिक्षा में असमानता और भेदभाव की वजह से तिब्बती आर्थिक रूप से और भी हाशिए पर गए है और घटिया दर्जे की शिक्षा थोपे जाने की वजह से उन्हें बेहतर नौकरी भी नहीं मिल पाती। चीनी बस्तियों के बाशिंदों को उन्नत शिक्षा मिलती है और नौकरियों में चीनी भाषा को प्राथमिकता दी जाती है जिसकी वजह से बहुत से तिब्बती नौकरी पाने के मामले में उनसे प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम नहीं होते। तिब्बतियों में साक्षरता बहुत कम होने की वजह से वे अपने मानवाधिकारों की रक्षा के लिए आगे नहीं आ पाते और न ही नागरिकता का पूरा अधिकार हासिल कर पाते हैं। इस बात से हालत और बदतर हो गई है कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के तकरीबन सभी काउंटी के शीर्ष पदों पर हान चीनी नस्ल के लोग हैं जिसकी वजह से तिब्बतियों की निर्णय लेने में कोई भूमिका नहीं होती।

तिब्बत और संयुक्त राष्ट्र

संयुक्त राष्ट्र महासभा का प्रस्ताव संख्या 1353 (14)

आयरलैंड और मलाया ने अनुरोध किया है कि संयुक्त राष्ट्र महासभा में "तिब्बत के सवाल" पर विचार किया जाए। इस बारे में प्रस्ताव संख्या 1353 (14) को महासभा ने स्वीकार कर लिया है। इसके पक्ष में 45, विपक्ष में 9 वोट पड़े, 26 सदस्य अनुपस्थित रहे।

21 अक्टूबर, 1959

egk l Hkk

स्मरण करती है 10 दिसंबर, 1948 को इस आमसभा द्वारा स्वीकार किए गए मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा और संयुक्त राष्ट्र चार्टर में निर्धारित बुनियादी मानवाधिकारों एवं आज़ादी से संबंधित सिद्धांतों को

यह मानती है कि तिब्बती नागरिकों को अन्य सभी नागरिकों की तरह जिन बुनियादी अधिकारों एवं आज़ादी को पाने का हक है उनमें सभी को बिना किसी भेदभाव के नागरिक अधिकार और धार्मिक स्वतंत्रता शामिल है

इस बात को समझती है कि तिब्बत के लोगों की अलग सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत है और वे परंपरागत रूप से स्वायत्त रहे हैं

गहरी चिंता जताती है परम पावन दलाई लामा के आधिकारिक बयानों और अन्य जगहों से मिली इन खबरों पर तिब्बत के लोगों के बुनियादी मानवाधिकार और आज़ादी को जबरन छीन लिया गया है

खेद प्रकट करती है इस बात के लिए कि ऐसे समय में जब जिम्मेदार नेता तनाव घटाने और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में सुधार के लिए प्रयास कर

रहे हों इस तरह की घटनाओं से अंतरराष्ट्रीय तनाव बढ़ रहा है और संबंध कटु हो रहे हैं

1. पुष्टि करती है अपनी इस मान्यता का कि कानून के शासन पर आधारित एक शांतिपूर्ण दुनिया के विकास के लिए सयुंक्त राष्ट्र चार्टर और मानवाधिकारों की संयुक्त घोषणा के सिद्धांतों का सम्मान जरूरी है

2. आह्वान करती है कि तिब्बती जनता के बुनियादी मानवाधिकारों और उनके विशिष्ट सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन का सम्मान किया जाए।

• • • •

संयुक्त राष्ट्र महासभा, प्रस्ताव संख्या 1723 (16)

मलय, थाइलैंड और अल सल्वाडोर ने दूसरी बार "तिब्बत के सवाल पर" संयुक्त राष्ट्र महासभा में विचार करने का अनुरोध किया। प्रस्ताव संख्या 1723 (16) को महासभा द्वारा स्वीकार कर लिया गया। इसके पक्ष में 56 मत, विरोध में 11 मत पड़े और 29 सदस्य अनुपस्थित रहे।

20 दिसंबर, 1961

egk lHkk

स्मरण करती है तिब्बत के सवाल पर 21 अक्टूबर 1959 के अपने प्रस्ताव संख्या 1353 (14) को

गहरी चिंता जताती है तिब्बत में जारी घटनाओं पर जिनमें तिब्बती जनता के मानवाधिकारों का उल्लंघन और परंपरागत रूप से हासिल उनके विशिष्ट सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन का दमन शामिल है

गहरे फिक्र के साथ इस पर ध्यान देती है कि इस तरह की कठोर

घटनाओं की वजह से ही तिब्बती लोगों को बड़ी संख्या में पड़ोसी देशों में शरणार्थी जीवन गुजारना पड़ रहा है

इस बात को मानती कि इन घटनाओं से संयुक्त राष्ट्र के चार्टर और मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा में तय बुनियादी मानवाधिकारों का उल्लंघन होता है, जिनमें लोगों एवं देशों के आत्मनिर्धारण का सिद्धांत भी शामिल है। इसके अलावा इनका अंतरराष्ट्रीय तनाव बढ़ने और लोगों के बीच संबंधों में कड़वाहट बढ़ने का दुःखद प्रभाव भी हुआ है।

1. अपनी इस धारणा को दोहराती है कि कानून के शासन पर आधारित एक शांतिपूर्ण विश्व व्यवस्था के विकास के लिए सयुंक्त राष्ट्र चार्टर और मानवाधिकारों के सार्वभौमिक घोषणा में दिए गए सिद्धांतों का सम्मान करना बहुत जरूरी है।

2. विधिवत नए सिरे से यह आह्वान करती है कि इस तरह के कार्य बंद किए जाएं जिससे तिब्बती जनता के बुनियादी मानवाधिकार और आज़ादी छिन जाती है, जिसमें उनके आत्मनिर्धारण का अधिकार भी शामिल है।

3. यह उम्मीद करती है कि सदस्य देश मौजूदा समस्या का हल निकालने के लिए जो भी उपयुक्त होगा वह सभी संभव प्रयास करेंगे।

• • • •

संयुक्त राष्ट्र महासभा प्रस्ताव संख्या 2079 (20)

अल सल्वाडोर, आयरलैंड, मलेशिया, माल्टा, निकारगुआ, फिलीपींस और थाइलैंड ने "तिब्बत के सवाल" पर संयुक्त राष्ट्र महासभा में तीसरी बार विचार करने का अनुरोध किया। महासभा में इस बारे

में प्रस्ताव संख्या 2079 (20) को पारित किया गया। इसके पक्ष में 43 और विपक्ष में 26 वोट पड़े, 22 सदस्यों ने मतदान में हिस्सा नहीं लिया।

18 दिसंबर, 1965

egk lHkk

संयुक्त राष्ट्र महासभा, संयुक्त राष्ट्र के चार्टर में दिये गये और मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणापत्र में उद्घोषित मानवाधिकारों व मौलिक स्वतंत्रताओं से संबंधित सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए,

तिब्बत के मसले पर अपने 21 अक्टूबर 1959 के प्रस्ताव संख्या 1353 (14) और 20 दिसम्बर 1961 के प्रस्ताव संख्या (16) का प्रतिज्ञान करते हुए,

तिब्बत में मानवाधिकारों के लगातार उल्लंघन व तिब्बत के लोगों की स्वतंत्रता के हनन तथा उनके विशिष्ट सांस्कृतिक व धार्मिक जीवन के लगातार दमन, जिसका प्रमाण पड़ोसी देशों में बड़े पैमाने पर आये तिब्बती शरणार्थियों से मिलता है, पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए,

1. तिब्बत में मानवाधिकारों के लगातार उल्लंघन व तिब्बत के लोगों के स्वतंत्रता के हनन पर खेद प्रकट करती है,

2. पुनः यह दुहराती है कि संयुक्त राष्ट्र के चार्टर के सिद्धांतों और मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा के प्रति सम्मान कानून पर आधारित शांतिपूर्ण विश्व व्यवस्था के विकास के लिए आवश्यक है,

3. यह घोषणा करती है कि तिब्बत में मानवाधिकारों व बुनियादी स्वतंत्रताओं के उल्लंघन तथा इसके लोगों के विशिष्ट सांस्कृतिक व धार्मिक जीवन के दमन से अंतरराष्ट्रीय तनाव बढ़ेगा और

लोगों में आपसी कटुता बढ़ेगी,

4. दृढतापूर्वक इस आह्वान को दुहराती है कि उन सभी कार्यों को बंद किया जाए जिससे तिब्बती लोगों के मानवाधिकारों व मौलिक स्वतंत्रताओं का हनन होता है जिसका वह हमेशा से उपभोग करते रहे हैं,

सभी देशों से यह अनुरोध करती है कि वह वर्तमान प्रस्ताव के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता करने के लिए अपना सर्वोत्तम प्रयास करें।

तिब्बत पर भारतीय नेताओं के विचार

सी0 राजगोपालाचारी (भारत के अंतिम गवर्नर जनरल)

तिब्बत में बर्बर साम्राज्यवाद:

तिब्बत का मुद्दा तिब्बत की संप्रभुता के रूप में विधिवादी अन्वेशण नहीं है, बल्कि मानवाधिकार का प्रश्न है जिसका निर्णय न्याय और मानवता के स्तर पर होना चाहिए न कि किसी कानूनी पहेली के आधार पर।

परम पावन दलाई लामा ने अपने संदेश में चीजों को बहुत स्पष्ट और सारगर्भित कर दिया है कि किस तरह कानूनी आधार पर भी इसमें कोई दो राय नहीं है कि किसी भी राष्ट्रीयता से जुड़े होने की बात को नजरअंदाज करते हुए तिब्बतियों को स्वयं शासन करने का अधिकार मिलना चाहिए। तिब्बत पर हमला जिसके कारण परम पावन दलाई लामा को भारतीय क्षेत्र में शरण लेना पड़ा, बर्बर साम्राज्यवाद है। इसलिए इस मसले पर कोई दूसरी राय नही हो सकती। सभी भारतीय यह चाहते हैं कि तिब्बत को चीन के नियंत्रण से छुटकारा दिलाया जाए।

★★★★

डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद, भारत के पहले राष्ट्रपति

(24 अक्टूबर, 1962 को पटना के गांधी मैदान में दिए गये उनके भाषण का अंग)

स्वतंत्रता सबसे पवित्र वरदान है। हिंसक या अहिंसक सभी तरीकों से इसकी रक्षा की जानी चाहिए। इसलिए तिब्बत को चीन के नियंत्रण से मुक्त कराकर तिब्बतियों को सौंप देना चाहिए।

चीनी आक्रांताओं ने तिब्बत को लूटा है और वहां के शांतिपूर्ण

नागरिकों को तबाह कर दिया है। तिब्बत क्षेत्र व संस्कृति दोनों दृष्टियों से भारत के करीब है। इसलिए हमें तिब्बत को लुटेरों के खूनी चंगुल से बचाने के लिए कठोर प्रयास करना होगा ताकि तिब्बती लोग आजादी की हवा में सांस ले सकें। यदि चीन ने चोरी से हमारी जमीन में घुसपैठ किया है तो उन्हें बेरहमी से वापस भेज देना चाहिए।

विश्व इस बात का गवाह है कि भारत ने किसी भी देश पर कभी बुरी नजर नहीं डाली है। लेकिन युद्ध की स्थिति में हमें किसी भी स्थान या जमीन पर शत्रु से मुकाबला करना चाहिए।

जब हम ''हिन्दी–चीनी'', ''भाई–भाई'' का नारा लगा रहे थे तो चीन हमारी जमीन को हड़पने में जुटा था और निर्दयी विश्वासघात के द्वारा चीन ने हमारी लगभग 12 हजार वर्ग मील जमीन पर कब्जा कर लिया। यह आवश्यक है कि एक आत्मसंयमी देश की भांति हम आक्रांताओं का मुकाबला करें। इस बात में कोई संदेह नहीं कि हमें अपनी मातृभूमि को इन आक्रांताओं से मुक्त कराना चाहिए।

★★★★

ifMr tokgj yky usg:] Hkkjr ds igys ç/kkuea=h

¼1½ 7 fnlEcj] 1950 dks yksdlHkk esa lacks/ku

तिब्बत चीन के समान नही है, इसलिए किसी कानूनी या संवैधानिक तर्क–विर्तक के बजाय अंतिम रूप में तिब्बत के लागों की इच्छा को ही प्रधान मानना होगा। मैं समझता हूँ कि यह एक तर्कसंगत बात है।

मुझे चीन सरकार से यह कहने में कोई कठिनाई नहीं है कि तिब्बत पर उनकी प्रभुसत्ता या आधिपत्य हो या न हो, निश्चित रूप से किसी भी सिद्धांत के अनुसार तिब्बत के संबंध में अंतिम आवाज किसी और की नहीं बल्कि तिब्बत के लोगो की ही होनी चाहिए।

¼2½ 27 vçSy] 1959 dks yksdlHkk esa c;ku

दो या तीन साल पूर्व जब चाउ एन लाई भारत आए तो वह तिब्बत पर पर्याप्त समय तक चर्चा करने के लिए अच्छी तरह तैयार थे। हम लोगों ने इस मसले पर स्पष्ट और पूरी बात की। उन्होंने मुझसे कहा कि हालांकि तिब्बत लंबे समय तक चीन का हिस्सा रहा है लेकिन अब वह तिब्बत को चीन का एक हिस्सा नहीं मानते। तिब्बत के लोग चीन के लोगों से अलग हैं। इसलिए वह तिब्बत को एक स्वायत्तशासी क्षेत्र मानते हैं जिसे स्वायत्तता मिलनी चाहिए। उन्होंने मुझसे यह भी कहा कि किसी के लिए भी यह कल्पना करना निरर्थक है कि चीन तिब्बत पर साम्यवाद थोपने जा रहा है।

3½ 24 ebZ] 1964 dks fy[kk mudk vafre i=

देहरादून
24 मई, 1964

मेरे प्रिय गोपाल सिंह,
तुम्हारा 20 मई का पत्र प्राप्त हुआ। मुझे यह समझ में नहीं आ रहा कि वर्तमान परिस्थितियों मे हम तिब्बत के लिए क्या कर सकते हैं। संयुक्त राष्ट्र में तिब्बत पर प्रस्ताव पारित करवाने का बहुत लाभ नहीं है क्योंकि चीन उसमें शामिल नहीं है। तिब्बत में जो कुछ हुआ हम उससे उदासीन नहीं हैं लेकिन इसके बारे में कुछ प्रभावी कदम उठाने में हम असमर्थ हैं।

आपका
जवाहरलाल नेहरू

★★★★

l jnkj oYyHk Hkkbl iVsy] Hkkjr ds igys mi&ç/kkuea=h

¼iafMr tokgjyky ug: dks fy[ks x;s muds i= dk vax½

नईदिल्ली
7 नवंबर, 1950

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

चीन सरकार ने हमें अपने शांतिपूर्ण उद्‌देश्यो के आंडबर में उलझाने का प्रयास किया है। मेरा यह मानना है कि वह हमारे राजदूत के मन में यह झूठा विश्वास कायम करने में सफल रहे कि चीन तिब्बत की समस्या को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाना चाहता है। चीन की अंतिम चाल, मेरे विचार से कपट और विश्वासघात जैसा ही है। दुःखद बात यह है कि तिब्बतियों ने हम पर विश्वास किया है, हम ही उनका मार्गदर्शन भी करते रहे हैं और अब हम ही उन्हें चीनी कूटनीति या चीनी दुर्भाव के जाल से बचाने में असमर्थ हैं। ताजा प्राप्त सूचनाओं से ऐसा लग रहा है कि हम दलाई लामा को भी नहीं निकाल पाएंगे । यह असंभव ही है कि कोई भी संवेदनशील व्यक्ति तिब्बत में एंग्लो–अमेरिकन दुरभिसंधि से चीन के समक्ष उत्पन्न तथाकथित खतरे के बारे में विश्वास करेगा।

पिछले कई महीनों से रूसी गुट से परे हम ही केवल अकेले थे जिन्होंने चीन को संयुक्त राष्ट्र की सदस्यता दिलवाने की कोशिश की तथा फारमोसा के प्रश्न पर अमेरिका से कुछ न करने का आश्वासन भी लिया।

मुझे इसमें संदेह हैं कि चीन को अपनी सदिच्छाओं, मैत्रीपूर्ण उद्‌देश्यों और निष्कपट भावनाओं के बारे में बताने के लिए हम जितना कुछ कर चुके हैं, उसमें आगे भी कुछ किया जा सकता है। हमें भेजा गया उनका अंतिम टेलिग्राम घोर अशिष्टता का नमूना है। इसमें न

केवल तिब्बत में चीनी सेनाओं के घुसने के प्रति हमारे विरोध को खारिज किया गया है बल्कि परोक्ष रूप से यह गंभीर संकेत भी किया गया है कि हम विदेशी प्रभाव में आकर यह रवैया अपना रहे हैं। उनके टेलिग्राम की भाषा साफ बताती है कि यह किसी दोस्त की नहीं बल्कि भावी शत्रु की भाषा हैं।

इस सबके पटाक्षेप में हमें इस नई स्थिति को देखना और संभालना होगा जिसमें तिब्बत के गायब हो जाने के बाद जिसका हमें पता था चीन हमारे दरवाजे तक पहुंच गया है। इतिहास में कभी भी हमें अपनी उत्तर–पूर्वी सीमा की चिंता नहीं हुई है। हिमालय शृंखला उत्तर से आने वाले किसी भी खतरे के प्रति एक अभेद्य अवरोध की भूमिका निभाती रही है। तिब्बत हमारे एक मित्र के रूप में था इसलिए हमें कभी समस्या नहीं हुई।

हमने तिब्बत के साथ एक स्वतंत्र संधि कर उसकी स्वायत्तता का सम्मान किया है। उत्तर–पूर्वी सीमा के अस्पष्ट सीमा वाले राज्य और हमारे देश में चीन के प्रति लगाव रखने वाले लोग कभी भी समस्या का कारण बन सकते हैं।

चीन की कुदृष्टि हमारी तरफ वाले हिमालयी इलाकों तक सीमित नहीं है, वह असम के कुछ महत्वपूर्ण हिस्सों पर भी नजर गड़ाए हुए है। बर्मा पर भी उसकी नजर है। बर्मा के साथ और भी समस्या है क्योकि उसकी सीमा को निर्धारित करने वाली कोई रेखा नहीं है जिसके आधार पर वह कोई समझौता कर सके।

हमारे उत्तर–पूर्वी क्षेत्रों में नेपाल, भूटान, सिक्किम, दार्जिलिंग और असम के आदिवासी क्षेत्र आते हैं। संचार की दृष्टि से उधर हमारे साधन बड़े ही कमजोर व अपर्याप्त है; सो यह क्षेत्र 'कमजोर' है। उधर कोई स्थायी मोर्चे भी नहीं हैं इसलिए घुसपैठ के अनेकों रास्ते हैं।

मेरे विचार से अब ऐसी स्थिति आ गई है कि हमारे पास आत्मसंतुष्ट रहने या आगे–पीछे सोचने का समय नहीं है। हमारे मन में यह स्पष्ट धारणा होनी चाहिए कि हमें क्या प्राप्त करना है और किन साधनों से प्राप्त करना है।

इन खतरों के अलावा हमे गंभीर आंतरिक संकटों का भी सामना करना पड़ सकता है। मैने (एच.वी.आर) आयंगर को पहले ही कह दिया है कि वह इन मामलों की गुप्तचर रिपोर्टों की एक प्रति विदेश मंत्रालय भेज दें।

निशिचत रूप से सभी समस्याओं को बता पाना मेरे लिए थकाऊ और लगभग असंभव होगा। लेकिन नीचे मैं कुछ समस्याओं का उल्लेख कर रहा हू जिनका मेरे विचार में तत्काल समाधान करना होगा और जिन्हें दृष्टिगत रखते हुए ही हमें अपनी प्रशासनिक या सैन्य नीतियां बनानी होंगी तथा उन्हें लागू करने का उपाय करना होगा :

1 सीमा व आंतरिक सुरक्षा दोनों मोर्चों पर भारत के समक्ष उत्पन्न चीनी खतरे का सैन्य व गुप्तचर मूल्यांकन।

2 हमारी सैन्य स्थिति का एक परीक्षण।

3 रक्षा क्षेत्र की दीर्घकालिक आवश्यकताओं पर विचार

4 हमारे सैन्य बलों के ताकत का एक मूल्यांकन

5 संयुक्त राष्ट्र में चीन के प्रवेश का प्रश्न

6 उत्तरी व उत्तरी–पूर्वी सीमा को मजबूत करने के लिए हमें कौन से राजनीतिक व प्रशासनिक कदम उठाने होंगे।

7 चीन की सीमा के करीब स्थित राज्यों जैसे यू0पी0, बिहार, बंगाल, व असम के सीमावर्ती क्षेत्रों में आंतरिक सुरक्षा के उपाय।

8 इन क्षेत्रों और सीमावर्ती चौकियों पर संचार, सड़क, रेल, वायु और बेहतर सुविधाओं में सुधार।

9 ल्हासा में हमारे दूतावास और गयांगत्से व यातुंग मेंहमारी व्यापार चौकियो तथा उन सुरक्षा बलों का भविष्य जो हमने तिब्बत में व्यापार मार्गो की सुरक्षा केलिए तैनात कर रखी हैं।

10 मैकमोहन रेखा के संदर्भ में हमारी नीति।

आपका

वल्लभभाई पटेल

★★★★

frCcr ij Mk- jkeeuksgj ykfg;k
¼Hkkjr ds ç[;kr lektoknh usrk½ ds fopkj

frCcr ij phuh geyk] vDVwcj 1950

चीन ने तिब्बत पर हमला कर दिया है, जिसका केवल एक मतलब हो सकता है कि एक शिशु को मसल डालने के लिए राक्षस ने कदम बढ़ा लिया है। तिब्बत पर आक्रमण को यह कहना कि वह 30 लाख लोगों को मुक्त करने का प्रयास हैं, भाषा का अर्थ ही मिटा देने के बराबर है और सारे मानवीय संसर्ग और बोध को खत्म कर देना है। इससे आजादी और गुलामी, वीरता और कायरता, निष्ठा और द्रोह, सत्य और असत्य समानार्थक हो जाएंगे। चीन की जनता के प्रति हमारी दोस्ती और आदर कभी कम नहीं होगा किंतु हमें अपनी धारणा व्यक्त कर देनी चाहिए कि इस आक्रमण और शिशु हत्या का कलंक चीन की वर्तमान सरकार कभी नहीं धो सकेगी।

चीन का यह दावा कि वह तिब्बत में अपनी पश्चिमी सीमाओं को सुरक्षित करना चाहता है सर्वथा अनिष्टकर है। इस आधार पर तो

प्रत्येक राष्ट्र संसार भर में अपनी सीमाओं को सुरक्षित करने का प्रयास करेगा। इसके अलावा, चीन की तुलना में हिन्दुस्तान के साथ तिब्बत के संबंध अधिक गहरे हैं। मैं सामरिक संबंधो की बात नहीं करता लेकिन विशेषकर पश्चिमी तिब्बत से भाषा, व्यापार और संस्कृति के संबंधो मे यह देखा जा सकता है। तिब्बत में घुसकर चीन की वर्तमान सरकार ने न केवल अंतरराष्ट्रीय सदाचार की ही अवहेलना की है, बल्कि हिन्दुस्तान के हितों पर भी आघात किया है।

अगर चीन सरकार का रूख संप्रभुता के किसी बिल्कुल अमान्य किंतु तकनीकी और संदेहास्पद मुद्दे पर आधारित है, तो जनमत संग्रह के द्वारा तिब्बत की जनता की इच्छा मालूम की जा सकती है।

अच्छा होगा कि भारत सरकार चीन सरकार को अपनी फौंजें हटा लेने की सलाह दे और दोनों के बीच सच्ची दोस्ती को दृष्टिगत रखते हुए भारत उस तरह के जनमत–संग्रह की व्यवस्था करने का प्रस्ताव रखे।

★★★★

frCcr ij Mk0 Hkhejko vcMdj ¼Hkkjrh; lfo/kku d tud½ d fopkj

(वर्ष 1954 मे संसद में पंचशील समझौते पर बहस)

यदि भारत ने 1949 मे चीनी गणराज्य को मान्यता देने की बजाय तिब्बत को मान्यता प्रदान की होती तो आज भारत–चीन सीमा विवाद होता ही नहीं। पंचशील बौद्ध धर्म का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यदि श्री माओ को पंचशील में रत्ती भर भी विश्वास होता तो वह अपने देश में रहने वाले बौद्धों के साथ अच्छा व्यवहार करते। राजनीति में पंचशील का कोई स्थान नहीं होता। पंचशील में निहित सच्चाई यह हैं कि नैतिकता का मापदंड लगातार बदलता जा रहा

है। आचार नीति या नैतिकता कहलाने वाली कोई चीज नहीं है। आज की आचारनीति के लिहाज से आप अपने किसी वादे से बंधे रह सकते हैं लेकिन इसी आधार पर आप अपने वादे को आसानी से तोड़ सकतें हैं क्योकि कल की आचारनीति आपसे कुछ और अपेक्षा करेगी। मैं वास्तव में यह नहीं जानता कि आगे क्या होने जा रहा है। चीन के द्वारा ल्हासा (तिब्बती राजधानी) के ऊपर नियंत्रण करने का विरोध न करके हमारे प्रधानमंत्री न एक तरीके से चीनियों का इस बात के लिए सहयोग किया है कि वह अपनी फौजों को भारतीय सीमा तक ला सकें। कश्मीर में दाखिल होने वाला कोई भी विजेता   सीधे पठानकोट तक पहुंच सकता है और मैं यह भी समझता हूँ कि निश्चित रूप से वह हमारे प्रधानमंत्री के घर तक भी पहुंच सकता है।

★★★★

frCcr ij ykdukf;d t;izdk'k ukjk;.k ds fopkj

(10 जुलाई, 1959 को नई दिल्ली के सप्रू हाउस में विश्व मामलों की भारतीय परिषद के समक्ष भाषण)

मैं पहले यह बात स्पष्ट कर दूं कि तिब्बत पर मेरा नजरिया इस कारण नहीं बना है कि मै चीन का विरोधी हूं और यह चाहता हूं कि उसे नुकसान पहुंचे। तिब्बत पर मेरा नज़रिया वर्तमान परिस्थितियों के कारण बना है और मेरा यह मानना है कि जब एक मित्र गलत रास्ते पर जा रहा हो तो यह कर्तव्य होता है कि उसे दृढ़ता से इस बारे में बताया जाए। इस भाव से ही मै चीन की आलोचना कर रहा हूं। दलाई लामा तिब्बत के लोगों की वास्तविक आवाज़ हैं और वह उनकी जिस तरह से पूजा करते हैं उतनी दुनिया में किसी भी अन्य जीवित व्यक्ति की नहीं होती।

तिब्बत पर विशेष नियंत्रण के अलावा परम पावन दलाई लामा की

एक अंतरराष्ट्रीय हैसियत और व्यक्तित्व है। समूचे बौद्ध दुनिया में विशेषकर मंगोलिया व स्वयं चीन में और उन सभी क्षेत्रों में जहां बौद्ध धर्म की महायान शाखा का प्रसार हुआ है दलाई लामा को सर्वोच्च आध्यात्मिक नेता का सम्मान प्राप्त है।

मै समझता हूं कि वर्तमान परिस्थितियों के मुख्य तत्व इस प्रकार हैं:—

1. दलाई लामा ने तिब्बत की आज़ादी को अपना लक्ष्य घोषित किया है।
2. उन्होंने कहा कि उनकी सरकार को 1951 के चीन—तिब्बत समझौते पर इसलिए हस्ताक्षर करना पड़ा क्योंकि चीन की हमलावर सेना ने उनके सामने और कोई विकल्प नहीं छोड़ा और उन्होंने यह भी कहा कि समझौते में स्वायत्तता की शर्त चीन ने जबरन शामिल करवाई।
3. उन्होंने इन तथ्यों को भी उजागर किया कि तिब्बत में बडे पैमाने पर और बर्बर ढंग से तिब्बती लोगों का दमन किया जा रहा है जिसमें व्यापक जनसंहार और चीनी अधिकारियों द्वारा तिब्बती लोगों का जबरननिर्वासन शामिल है।
4. उन्होंने यह भी बताया कि तिब्बत में बडे पैमाने पर चीनी लोगों की बस्ती बसायी जा रही है।
5. उन्होंने यह रहस्योद्‌घाटन भी किया कि किस प्रकार चीनी लोग उदात्त बौद्ध धर्म को सुनियोजित रूप से नष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं।
6. इन सब घटनाओं के बावजूद उन्होंने तिब्बत के मुद्‌दे के शांतिपूर्ण समझौते की इच्छा जाहिर की है।
7. तिब्बतियों के साथ अन्याय न हो यह सुनिश्चित करने के

लिए उन्होंने भारत व दुनिया के अन्य देशों से सहायता करने की अपील की है।

इसमें सबसे पहला बिन्दु उन लोगों का दृष्टिकोण है जिन्होंने अधिराज्य के फॉर्मूले को कभी स्वीकार नहीं किया है और जो हमेशा तिब्बत की पूर्ण स्वतंत्रता के पक्ष में दृढ़ रहे हैं। उनके लिए तिब्बत की घटनाएं और दलाई लामा की घोषणा उनके दृष्टिकोण की पुष्टि है। दूसरा बिंदु उन लोगों का दृष्टिकोण है जिन्होंने स्वायत्तता के साथ अधिराज्य फॉर्मूले को स्वीकार कर लिया है। यह जानकर दुःख होता है कि उन देशों ने भी यह फॉर्मूला स्वीकार कर लिया है जिन्हें हाल में ही आज़ादी मिली है। तिब्बत की राष्ट्रीय स्वतंत्रता के अधिकार को बिना किसी शर्त के स्वीकार करना चाहिए।

हाल में जब ब्रिटिश पार्लियामेंट में तिब्बत के प्रति महारानी सरकार की नीति के बारे में एक प्रश्न किया गया तो विदेश मंत्री की तरफ से जवाब देने वाले आर. एलेन ने कहा कि ' हम एक लंबे समय से तिब्बत पर चीन के अधिराज्य को मान्यता देते रहे हैं, लेकिन यह मान्यता इस समझ पर आधारित रही है कि तिब्बत की स्वायत्तता बनी रहेगी।' महारानी सरकार की अब भी यही नीति है। श्री एलेन के बयान से ब्रिटेन की नीति स्पष्ट हो गयी है कि अधिराज्य को मान्यता इस समझ पर आधारित है कि तिब्बत की स्वायत्तता बनी रहेगी।

यह अलग बात है कि तिब्बत बहुत समय तक स्वायत्त नहीं रहा, चीन ने सुनियोजित रूप से और मित्रों की सलाह व चेतावनी को दरकिनार कर ताकत के प्रयोग से तिब्बत की स्वायत्तता को समाप्त कर दिया है। इन बदली हुई परिस्थितियों में जो तिब्बत की पूर्ण स्वतंत्रता चाहते हैं और जो स्वायत्तता के मुद्दे से आगे जाने को तैयार नहीं हैं, इन दोनों पक्षों में मुश्किल से ही कोई अंतर रह गया है।

जब एक स्वतंत्र देश पर हमला होता है तो इसे आक्रमण कहते हैं और अन्य देश इस आक्रमण को रोकने तथा पीडित को बचाने का प्रयास करते हैं। इन परिस्थितियों में स्वतंत्र राष्ट्र बिना किसी हिचक के अपनी नैतिक जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं। तो क्या ऐसी परिस्थितियों में वह दूसरा व्यवहार करेंगे जब किसी देश की स्वायत्तता पर खतरा हो या उसे नष्ट कर दिया गया हो? क्या 1951 के चीन–तिब्बत समझौते जैसा अंतरराष्ट्रीय विषय सिर्फ चीन का निजी मामला हो सकता है।

एक तीसरा दृष्टिकोण भी है जिसके आधार पर तिब्बत की हाल की घटनाओं को देखा जा सकता है। वह है, मानवता का दृष्टिकोण । तिब्बत के लोगों की दुर्गति और दुर्भाग्य, अन्याय और गलत कदम जिसका उन्हें शिकार होना पड़ा तथा उनके साथ किये गये अपराध एवं अत्याचार, यह सब सामूहिक रूप से हमें इस बात के लिए प्रेरित करते हैं कि तिब्बत के मुद्दे को कानूनी व संवैधानिक वाद–विवाद के गुत्थियों से अलग ले जाकर साधारण मानवता के आधार पर उठाया जाए। तिब्बत में उठाया गया मानवीय मुद्दा सभी कानूनी व संवैधानिक तथा राजनयिक तर्कों से परे है। यह स्वायत्तता बनाम स्वतंत्रता अथवा चीन के अधिकारों के मुद्दे पर बहस करने का समय नहीं है।

मै तिब्बत के मुद्दे पर समर्थन जुटाने , लोगों को संघटित करने तथा जनमत को सूचित करने का प्रयास कर रहा हूं और विभिन्न सरकारों, विशेषकर एशिया व अफ्रीका की सरकारों को भी तिब्बत पर अपनी स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए। तिब्बत पर अफ्रो–एशियाई समिति गठित करने का हमारा प्रयास भी इसी दिशा में उठाया गया एक कदम है। एशिया व अफ्रीका के नेताओं ने व्यक्तिगत रूप से इस मुद्दे पर अपना विचार प्रकट किया है लेकिन वह यदि मिलकर एकस्वर में बोलें तो इसका प्रभाव काफी व्यापक होगा।

जब ब्रिटेन व फ्रांस ने मिस्र में कार्रवाई की तो हमने बिना किसी भय के उनके कार्य की आलोचना की। जब हमने अल्जीरिया के राष्ट्रीय स्वतंत्रता का मुद्दा उचित ढंग से उठाया तब भी हम फ्रांस का विरोध करने से नहीं डरे।

इस संबंध में यह प्रश्न उठाया जाता है कि चीन संयुक्त राष्ट्र का सदस्य नहीं है। मैने हमेशा प्रधानमंत्री के इस रूख का समर्थन किया है कि चीन को संयुक्त राष्ट्र में प्रवेश देना चाहिए। तिब्बत के मामले ने मेरे इस दृष्टिकोण को और स्पष्ट किया है। चीन इस समय राष्ट्रों के परिवार से बाहर है इसलिए उस पर संयुक्त राष्ट्र के किसी प्रकार के नैतिक दबाव की गुंजाइश नहीं है। मै समझता हूं कि चीन वर्तमान समय में अपने को और बेहतर स्थिति में पा रहा है। एक तरफ, वह किसी अंतरराष्ट्रीय पाबंदी से बंधा नहीं है तो दूसरी तरफ, वह संयुक्त राष्ट्र में अपने प्रवेश के अमेरिका द्वारा विरोध करने के मुद्दे को भुना कर अपने नागरिकों में इस आधार पर युद्धोन्माद पैदा कर रहा है कि पूरी दुनिया उसकी दुश्मन बन गयी है।

हालांकि यहां मै एक बात स्पष्ट कर देना चाहूंगा कि मै संयुक्त राष्ट्र में चीन की सदस्यता का समर्थन कर रहा हूं लेकिन मै यह नहीं समझता कि तिब्बत के मुद्दे को इस विश्व संगठन में उठाने में उसका सदस्य न होना कोई बाधा है।

मुझे यह पूरा विश्वास है कि दलाई लामा उस देश भारत को किसी परेशानी मे नहीं डालना चाहेंगे जिसने उन्हें शरण दिया है। लेकिन हमें अपनी तरफ से उनकी स्थिति को समझना होगा। हमें यह भी समझना होगा कि दलाई लामा किसी तरह के परिवर्तन या उपदेश देने के लिए भारत में नहीं आये हैं। वह अपने देश और वहां के लोगों के लिए संघर्ष करने हेतु यहां आये हैं। यह बात कोई मायने

नहीं रखती कि वह इसमें सफल होते हैं या असफल। उनकी जगह कोई भी देशभक्त व्यक्ति होता तो यही काम करता।

इसलिए हमें इस युवा को अपना कार्य करने की छूट देनी चाहिए और उन्हें यह उपदेश देने का प्रयास नहीं करना चाहिए कि वह किस तरह से कार्य करें। यह एक अलग मामला है कि हम उन्हें किस हद तक स्वतंत्रता देने को तैयार है। जब उन्होंने अपने संवाददाता सम्मेलन में कहा था कि जहां कहीं भी वह अपने मंत्रिमंडल के साथ थे, तिब्बत के लोगों ने उन्हें तिब्बत की सरकार के रूप में सम्मान दिया, तो वह केवल सच बयान कर रहे थे, जो यह नहीं जानते थे कि तिब्बत विवाद का विषय बन जाएगा। यह उम्मीद करना कि दलाई लामा तिब्बत की स्वतंत्रता के आंदोलन को छोड देंगे और खुद को शुद्ध रूप से धार्मिक रूप से लक्ष्यों के प्रति सीमित रखेंगे, वास्तव में राष्ट्रवाद के आग्रह की ताकत को कम आंकना, दलाई लामा के व्यक्तिगत चरित्र को न समझ पाना और यह भूल जाना है कि उन्हें परंपरागतरूप से आध्यात्मिक व लौकिक शक्तियां व कार्य सौंपे गये हैं।

कुछ लोगों को आश्चर्य हो सकता है कि मैं तिब्बत के आंदोलन से इतने उत्साह से क्यों जुडा हूं। मैं बताता हूं, पहला कारण यह है कि मै मानवीय स्वतंत्रता और सभी लोगों की स्वतंत्रता में विश्वास करता हूं। उदाहरण के लिए मैं समझता हूं कि अल्जीरिया की स्वतंत्रता भी उतनी ही ज़रूरी है जितनी तिब्बत की स्वतंत्रता । दूसरा कारण यह है कि मै अंतरराष्ट्रीय शांति न्याय की प्राप्ति के बिना असंभव है। तीसरा कारण यह है कि तिब्बत हमारा पड़ोसी है और इस नाते हमारा यह कर्तव्य है कि हम उसकी सहायता करें। चौथा कारण यह है कि एक हिंदू के रूप में मै गौतम बुद्ध का अनन्य भक्त हूं और सभी बौद्ध लोगों के साथ मै एक आध्यात्मिक जुड़ाव की अनुभूति करता हूं। पाँचवां कारण यह है कि जब से मैने परम पावन दलाई

लामा को जाना है मै उनका गहरा सम्मान व उनसे प्रेम करने लगा हूं और अंतिम कारण यह है कि मै भी इतिहास के उन मूर्खों में से हूं जो निरंतर उन आदर्शों के लिए लड़ते रहते हैं जिन्हें दुनिया के समझदार, व्यावहारिक लोग हारी हुई लड़ाई मानते हैं।

★★★★

frCcr ij ifMr nhun;ky mik/;k; ds fopkj

frCcr dh Lor=rk esa Hkkjr dk ;ksxnku

यह अनिवार्य रूप से शांतिपूर्ण तिब्बती जनता के प्रति हमारी चिंता और साम्यवादियों ने जिस प्रकार का व्यवहार किया उसके प्रति हमारी नाराज़गी ही है कि इस मामले में तिब्बतियों के प्रति लोगों की इतनी गहरी सहानूभूति है। यह भी हो सकता है कि हमारी अपनी रक्षा और सुरक्षा के प्रति उत्पन्न खतरे के प्रति बढ़ते बोध से लोग हज़ार बार यह सोचने को मजबूर हुए हों कि जो लोग पीड़ित हुए हैं वह हमसे अंतरंग रूप से जुड़े हैं। इसलिए यह स्वाभाविक है कि लोग व्यग्रता से इस बात पर नज़र रखे हुए हैं कि दलाई लामा और भारत सरकार आगे क्या कदम उठाती है। इस मामले में भारत को बहुत नाजुक स्थित का सामना करना पड़ रहा है। चीन एक मित्र देश है। भारत व चीन पहले भी मित्र रहे हैं और भविष्य में भी मित्र रहना चाहेंगे।

तिब्बत एक ऐसा मामला है जिसमें भारत अपना हित दांव पर लगाकर ही परोपकारिता कर सकता है। चीन ने तिब्बत की स्वायत्तता बनाये रखने का वचन दिया है– संभवतः पंडित नेहरू को कुछ क्षमायाचना जैसा भाव प्रदान करने के लिए ताकि एक विशाल ड्रैगन के आगे एक महान उद्देश्य के अधम समर्पण के बारे में उनकी अंतर्आत्मा की आवाज़ दब जाए। लेकिन सरकार द्वारा परिणीत एकाधिकारवादी तरीके से बहुत अधिक समय तक लोगों को बहलाया नहीं जा

सकता। जब चीनी लोगों ने सभी क्षेत्रों में अपने तथाकथित 'सुधारों' को लागू किया तभी तिब्बत की स्वायत्तता अपने आप खंडित हो गयी। एक अत्यंत धार्मिक व आध्यात्मिक लोग विदेशी रीति–रिवाजों वाले अत्यधिक भौतिकवादी लोगों के साथ कैसे रह सकते है।

एक धार्मिक प्रमुख के नाते वह अपना कार्य जारी रख सकते हैं लेकिन क्या उनकी लक्ष्य की पूर्ति के लिए यह पर्याप्त होगा। यह सच्चाई है कि भारत भूमि पर सिर्फ अपनी मौजूदगी के द्वारा ही दलाई लामा तिब्बती योद्धाओं को नेतृत्व प्रदान कर सकते हैं, जो आक्रमणकारी सेना के शक्तिशाली होने के बावजूद अपने देश की विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के कारण संभवतः सक्रिय रहेंगे।

इस मामले में भारत की भी कुछ बाज़ी लगी हुई है। तिब्बत की स्वायत्तता हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। यदि हम इसकी रक्षा नहीं कर सके तो न केवल हमारी स्वतंत्रता व अखंडता खतरे में पड़ जाएगी , बल्कि हमारे लिए गुटनिरपेक्षता की नीति को जारी रखना भी लगभग असंभव हो जाएगा। जहां तक चीन की नीयत का प्रश्न है वह बिल्कुल स्पष्ट है। चीन पहले ही ' मानचित्रीय आक्रमण' कर चुका है। अब यह बात सामने आ रही है कि चाउ–एन–लाई ने एक नया सुझाव दिया है कि चीन व अन्य एशियाई देशों के बीच अनिर्धारित सीमा को शांतिपूर्ण बातचीत के द्वारा सुलझाया जाना चाहिए। इससे स्पष्ट होता है कि चीन, भारत व तिब्बत को विभाजित करने वाली मैकमोहन रेखा को मान्यता नहीं देता।

चीन, भारत के अलावा नेपाल, भूटान व सिक्किम पर भी बुरी नजर रखता है। एक स्वतंत्र देश के रूप में नेपाल अपनी सुरक्षा के लिए खुद ज़िम्मेदार है। लेकिन तिब्बत में साम्यवादी चीन की गतिविधियों से नेपाल के शासकों के सामने अपने देश की भविष्य में सुरक्षा का गंभीर प्रश्न खड़ा हो गया है।

तिब्बत की स्वायत्तता के प्रश्न पर केवल एक मजबूत और निश्चित

नज़रिया ही चीन को सही ठहरा सकता है। दोनों देशों के बीच मित्रता बनाये रखने के लिए इस प्रकार का नज़रिया जरूरी है। यह मित्रता भरोसा व सम्मान, बराबरी व पारस्परिक लाभ पर आधारित होना चाहिए न कि डर व गलतफहमी के आधार पर। किसी के नज़रिये में अंतर खोजने से बचना चाहिए और किसी भी मसले का खुला समाधान होना चाहिए।

इसलिए दलाई लामा को सभी तरह की सुविधाएं देनी चाहिए ताकि वह संघर्षरत तिब्बती लोगों को दिशा प्रदान कर सकें। भारत के लोग यही चाहते हैं और भारत का हित भी इसी में है।

★★★★

तिब्बत पर एम.एस. गोलवलकर (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक)

1962 के चीनी आक्रमण के बाद व्यक्त विचार

''जनमत को शिक्षित और संचालित कर समाज की सामूहिक इच्छा को जागृत करना हमारा कर्तव्य है जिससे कि हमारे नेतागण आक्रांताओं से कोई अपमानजनक समझौता न कर सकें। शत्रु को तिब्बत से बिना निकाल बाहर किये युद्धबंदी स्वीकार करना सामरिक दृष्टि से भयंकर भूल होगी।

आज दलाई लामा हमारे बीच हैं। तिब्बती जन अपने देश में चीनी सेनाओं से भी अभी तक लोहा ले रहे हैं। तिब्बत की मुक्ति के लिए यह तथ्य हमारे पक्ष में है। दलाई लामा को हम उनकी देशांतर सरकार की स्थापना करके तिब्बत की स्वतंत्रता की घोषणा कर दें। हम उन्हें अपने देश की स्वाधीनता के लिए संघर्ष चलाने के लिए सब प्रकार की सहायता दें। बिना स्वाधीन एवं मैत्रीपूर्ण तिब्बत के हमारी सम्पूर्ण उत्तरी सुरक्षा केवल उपहास का पात्र है।''

भारतीय संसद का प्रस्ताव

14 uocj] 1962

''इस संसद को इस बात का गहरा दंख है कि चीन की जनवादी सरकार ने भारत के सदाशयतापूर्ण मैत्री व्यवहारों की उपेक्षा करके दोनों देशों के बीच परस्पर स्वाधीनता, तटस्थता और एक दूसरे के मामलों में हस्तक्षेप न करने के सिद्धांत एंव सहअस्तित्व की भवना के समझौते को न मानकर पंचशील के सिद्धांतो उल्लंघन किया है। इसके बाद चीन ने अपनी विशाल सेना लेकर पूरी तैयारी के साथ भारत पर आक्रमण किया है।

यह संसद हमाारी सेनाओं के जवानों और अधिकारियों के शैर्यपूर्ण मुकाबले की सराहना करती है, जिन्होने हमारी सीमाओं की रक्षा की है। सीमा सुरक्षा में अपने प्राणें की बलि देने वाले वीरगति प्राप्त शहीदों का हम श्रद्धांजलि देते हैं और मातृभूमि की रक्षा के लिए दी गई कुर्बानी के लिए नतमस्तक होते हैं। यह संसद भारतीय जनता के सक्रिय सहयोग की प्रशंसा करती है, जिसने भारत पर चीनी आक्रमण से उत्पन्न संकट तथा आपात स्थिति में भी बड़े धैर्य से काम लिया। संसद हर वर्ग के लोगों के उत्साह और सहयोग की प्रशंसा करती है, जिन्होने आपातकालीन स्थितियों का डट कर मुकाबला किया। भारत की स्वाधीनता की रक्षा के लिए एक बार फिर स्वंतत्रता, एकता और त्याग की ज्वाला फूटी हैं।

विदेशी आक्रमण के प्रजितरोध में हमारे संघर्ष के क्षणें में जिन अनेक मित्र राष्ट्रों की सहायता हमें प्राप्त हुई हैं, उनकी इन नैतिक एंव सहानुभूतिपूर्ण संवेदनाओं के प्रति सह संसद अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हैं।

संसद आशा और विश्वास के साथ प्रतिज्ञा करती है कि भारत की पवित्र भूमि से हम आक्रमणकारियों का खदेड़कर कर दम लेगें। इस कार्य में हमें चाहे कितना ही समय क्यों न लगाना पड़े या इसका कितना भी मूल्य चुकाना पड़े, हम चुकाने को तैयार हैं''

तिब्बत की समस्या एंव उसका भारत की सुरक्षा एंव आर्थिक खुशहाली पर सीधा प्रभाव

देशभक्त भारतीयों के लिये तिब्बत का प्रश्न सिर्फ तिब्बती जनता की दुर्दशा पर चिंतित होने तक ही सीमित नहीं है। भारत और तिब्बत के रिश्ते लिखित इतिहास से भी पुराने हैं। राष्ट्रीय हित की दृष्टि से आजाद तिब्बत भारत के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है जितना तिब्बती जनता के लिये है।

^Hkkjr&frCcr* lhek l ^Hkkjr&phu* lhek

सदियों से भारत और चीन के बीच कोई साझी सीमा नहीं रही। 1949 में चीन ने जब तिब्बत पर कब्जा किया तभी से वह भारत का पड़ोसी देश बन गया। तिब्बत शुरू से ही एशिया के तीन शक्तिशाली देशों भारत, चीन और सोवियत रूस के बीच बफ़र राज्य के रूप में स्थित रहा है। तिब्बत पर चीनी कब्जे से पहले भारत–तिब्बत की 3520 कि. मी. लम्बी सीमा विश्व की सबसे अधिक शांत सीमा के रूप में जानी जाती थी। सन् 1949 तक सिर्फ 75 पुलिस अधिकारी भारत तिब्बत सीमा के दक्षिणी भाग की रक्षा करते थे, और अब भारत को 7 से 8 डिवीज़न सेना को इसके के लिये स्थायी तौर पर रखना पड़ रहा है।

frCcr ij phu d dCt l Hkkjrh; vFk0;oLFkk {kh.k gk jgh g

तिब्बत पर चीनी कब्जे के बाद से भारत और तिब्बत के बीच की सीमा एशिया की सबसे जबरदस्त किलाबन्द सीमा बन गयी है। इस कारण भारत को अपने आर्थिक साधनों को एक बड़ा हिस्सा विकास के बजाए इस सीमा पर खर्च करना पड़ रहा है। सिर्फ हिमालय की रक्षा के लिये भारत को हर रोज़ कई करोड़ रूपये खर्च करना पड़ता है। भारत–तिब्बत सीमा के भारत–चीन सीमा में बदलने के

कारण होने वाले इस खर्च का भारत के ग्रामीण इलाकों के करोड़ों लोगों को स्वचछ जल, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने पर खर्च किया जा सकता था। लेकिन यह तिब्बत के आज़ाद होने से ही संभव होगा।

phu d: Hkkjr&fojks/kh ?kkf"kr y{;

1949 में चीन के तत्कालीन अध्यक्ष माओ ने घोषणा की थी कि–''तिब्बत चीन की हथेली है और लद्दाख, नेपाल, सिक्किम, भूटान और नेफा उसकी अंगुलियां हैं।'' विश्व में चीन ही एकमात्र ऐसा देश है जो बरसों तक सिक्किम को भारत के हिस्से के रूप में मान्यता देने से इंकार करता रहा। बीजिंग से खुले–आम घोषणा की जाती है कि अरूणाचल प्रदेश (जो कि पहले नेफा के रूप में जाना जाता था) चीन का हिस्सा है।

26 सितम्बर, 1959 को भारत के प्रधानमंत्री द्वारा चीनी प्रधानमंत्री को लिखे पत्र के अनुसार भारत की चालीस हजार वर्ग किलोमीटर भूमि (अक्साईचिन, लद्दाख के पांगोंग और दमचोक, हिमाचल प्रदेश में शिपकी दर्रा, स्पीति दर्रा और नीलंग–जाधंग का क्षेत्र; उत्तर प्रदेश में बाड़ाहोती का क्षेत्र, तथा अरूणाचल प्रदेश में खिंजेमने, शात्से, लोंगचू एंव मिगितुन क्षेत्र) चीन के कब्जे में हैं।

चीनी राष्ट्रपति के भारत दौरे के एक हफ्ते पहले ही 13 नवंबर, 2006 को दिल्ली में चीनी राजदूत ने अरुणाचल प्रदेश को चीन का हिस्सा होने का दावा किया। सीएनएन–आईबीएन को दिए गए एक खास इंटरव्यू में राजदूत एंबेसडर सुन युक्सी ने कहा, "हमारा यह मानना है कि आप जिसे अरुणाचल प्रदेश कहते हो वह पूरा क्षेत्र चीन का हिस्सा है और तवांग जिला तो इसका एक हिस्सा ही है। हम इस पूरे क्षेत्र पर अपना दावा करते हैं।"

phu }kjk ikfdLrku dk Hkkjr ds fojks/k esa mi;ksx

यह संदेह से परे है कि चीन पाकिस्तान के नाभकीय कार्यक्रमों में तथा अरब सागर में ग्वादर पोर्ट में नौसैनिक अड्डा तैयार करने में भरपूर सहायता कर उसे भारत के विरोध में खड़ा होने के लिये मदद कर रहा है। इससे भारत का पूरे पश्चिमी तट के लिए अभूतपूर्व खतरा पैदा हो गया है। वास्तव में तिब्बत पर चीन का कब्जा होने से ही यह संभंव हुआ चीन पाकिस्तान, म्यांमार और नेपाल की ओर से भारत की घेराबंदी कर रहा है।

बाद में साल 2004 में तिब्बत में कृत्रिम झील पारिछु में दरार से सतलुज में भारी बाढ़ आई और हिमालच प्रदेश पर इसका विनाशकारी प्रभाव पड़ा।

phu dk Hkkjr ds fo:) cktkj&;q)

पिछले कुछ वर्षों में भारत के अनुभव से निस्संदेह सिद्ध हो गया है कि चीन ने भारत के उद्योग एंव व्यापरिक समुदायों के खिलाफ बाजार युद्ध छेड़ रखा है। तिब्बत के रास्ते चीनी वस्तुओं की तस्करी तथा वैध निर्यात से भी भारत के हजारों उद्योग धंधे, विशेषकर खिलौना एंव इलैक्ट्रॉनिक वस्तुओं के उद्योग बुरी तरह प्रभावित हो चुके हैं।

तिब्बत के प्राकृतिक संसाधनों का शोषण

भारतीय अंतरिक्ष शोध संगठन के अनुसार सन् 2000 में हिमाचल प्रदेश और अरूणाचल प्रदेश में भीषण बाढ़ से जो हानि हुई थी उसका कारण चीन द्वारा भारी मात्रा में पानी छोड़ना था जो तिब्बत के कृत्रिम एवं प्राकृतिक जलाशयों में इकट्ठा था। चीन द्वारा तिब्बत के जंगलों एवं खनिज पदार्थो को अनियंत्रित दोहन के परिणामस्वरूप भारत के असम राज्य और बांग्लादेश को हर साल

भारी बाढ़ का सामना करना पडता है। इससे भारत की बहुत बडे पैमाने पर हानि हो रही है।

phu&frCcr jsyos Hkkjr dh lqj{kk dks LFkk;h [krjk

गॉर्मू–ल्हासा रेल लाइन की शुरुआत से चीन सरकार को तिब्बत में अपनी सेना भेजना आसान हो जाएगा, सैन्य टुकड़ियों की तेजी से आवाजाही हो सकेगी, जन मुक्ति सेना के बेड़े का विस्तार करने में भी सुविधा होगी और तिब्बत में परमाणु हथियारों के भंडार, वायु सेना और मिसाइलों की तैनाती बढ़ जाएगी। इससे न केवल चीन का तिब्बत पर नियंत्रण और बढ़ेगा, बल्कि भारत के लिए भी खतरा बहुत बढ़ जाएगा जिससे क्षेत्रीय अशांति बढ़ सकती है।

चीन सरकार ने खुद यह स्वीकार किया है कि रेलवे लाइन सैन्य टुकड़ियों के आवागमन का साधन बनेगी। चीन सरकार का कहना है कि इससे न केवल सेना की क्षमता बढ़ेगी बल्कि इससे रेलवे की क्षमता भी बढ़ेगी। (शिनहुआ नेट, 10 दिसंबर, 2003)

गोलमुड–ल्हासा रेलवे के अलावा चीन की योजना ल्हासा से आगे इस रेल मार्ग को शिगत्से होते हुए पश्चिमी तिब्बत में नागरी तक ले जाने की है जो जम्मू–कश्मीर सीमा से बहुत करीब है। इसके बाद रेल लाइन सेतांग और कांगपो होते हुए दक्षिण पूर्वी तिब्बत भी जाएगी। इन रेल लाइन का निर्माण भारत के उत्तरी और उत्तर–पूर्वी सीमा के बिल्कुल समानांतर किया जाएगा।

cnyrk lSU; lariqyu

साल 2006 में गॉर्मू–ल्हासा रेल परियोजना के पहले चरण के पूरा होने के बाद अब चीनी सेना बड़ी संख्या में अपने सैनिकों और किसी भी तरह के भारी हथियार को बहुत कम समय के भीतर भारत की सीमा तक पहुंचा सकती है। इससे उत्तरी सीमा पर भारतीय रक्षा तैयारियों पर नए सिरे से ध्यान देने की जरूरत आ गई है।

fo’kky lSfud vìs ds :i esa frCcr

आज तिब्बत में चीन के शस्त्रागार में 17 गुप्त रडार केन्द्र, कम से कम 8 अंतरमहाद्वीपीय प्रक्षेपास्त्रों, मध्यम दूरी के 70 और कम दूरी वाले 20 प्रक्षेपास्त्र उपलब्धों से लैस आठ प्रक्षेपास्त्र अड्डे हैं। तिब्बत में तैनात कुछ प्रक्षेपास्त्रों की मारक दूरी 13,000 किमी है और वे एशिया की विभिन्न जगहों तक मार कर सकते हैं। रेल लाइन बन जाने से चीन के लिए तिब्बत को स्थायी सैनिक अड्डे में बदलना संभव हो जायेगा जहां से वह भारत, नेपाल, भूटान और पाकिस्तान के खिलाफ किसी भी तरह की सैनिक कार्रवाई कर सकेगा। वह पाकिस्तान और म्यांमार के जरिए अरब सागर और बंगाल की खाड़ी तक पहुॅंच सकेगा।

tula[;k LFkkukarj.k

चीन सरकार द्वारा तिब्बत में चीनी जनसंख्या बसाने का अभियान रेल लाइन के बिछ जाने के बाद और अधिक तेज हो जायेगा। तब तिब्बत को चीन का स्थायी उपनिवेश बना दिया जायेगा। इस प्रकार चीन पूरे दक्षिणी एशिया, विशेषकर भारत के लिये स्थायी खतरा बन जायेगा। पहले ही तिब्बतियों को अल्पसंख्यक बनाया जा चुका है। यह परियोजना मंचूरिया, सिंकियांग और मंगोलिया की कहानी को दोहराएगी।

frCcrh dh fo’kky ufn;ksa dh fn’kk cnyus dk iz;kl

अनियंत्रित औद्योगीकरण के द्वारा अपने प्रमुख नदियों को काफी प्रदूशित करने के बाद चीन अब नदी व्यवस्था की पारिस्थितिकीय क्षमता को खतरे में डाल रहा है। जबकि वहां की नदियां दक्षिण एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया के कई देशों के लिए जल और ऊर्जा की प्रमुख स्रोत हैं। चीन सरकार की दक्षिण–उत्तर जल स्थानांतरण परियोजना के तहत तिब्बती की विशाल नदियों (सिंधु, मेकांग, यांगजे,

येलो, सालवीन, ब्रह्मपुत्र, करनाली और सतलुज) का मुंह मोड़कर उन्हें उत्तर के सूखे क्षेत्रों तक ले जाने की है। ये नदियां भारत, बांग्लादेश, म्यांमार, भूटान, नेपाल, कंबोडिया, पाकिस्तान, लाओस, थाइलैंड और वियतनाम के लोगों की जीवन रेखा हैं जहां दुनिया की करीब 45 फीसदी जनसंख्या निवास करती है। यह परियोजना निचली धाराओं के पास रहने वाले करोड़ों लोगों के जीवन पर सीधा खतरा है। येलो नदी जल संरक्षण समिति के निदेशक ने सार्वजनिक तौर पर कहा है कि ब्रह्मपुत्र नदी की दिशा बदलने के अरबों डॉलर की वृहद योजना को सरकार की मंजूरी मिल चुकी है और इसकी शुरुआत साल 2010 में कर दी जाएगी। जैसा कि पहले भी देखा जा चुका चीन की योजनाओं और परियोजनाओं का सबसे ज्यादा असर भारत पर होता है।

fuoklu e frCcrh lenk;

tul[;k	दुनिया भर में करीब 1,45,150 तिब्बती निर्वासन जीवन बिता रहे हैं। (भारत में 1,01,242, नेपाल में 16,313, भूटान में 1,883 और बाकी दुनिया में 25,712) योजना आयोग द्वारा 2007 में जारी जनसंख्या अनुमान, यह वार्षिक प्रतिशत बढ़त दर पर आधारित है।
frCcr dh fuokflr ljdkj	तिब्बती मूल्यों से युक्त लोकतांत्रिक सरकार द्वारा शासित। इसमें स्वतंत्र न्यायपालिका, प्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित विधान मण्डल तथा कार्यपालिका व मंत्रिमण्डल है जो संसद के प्रति सीधे उतरदायी है।
lfo/kku	निर्वासित तिब्बती समुदाय का चार्टर
çe[k xj ljdkjh lxBu	तिब्बती युवा कांग्रेस, तिब्बती महिला संगठन, तिब्बती मानवाधिकार व लोकतान्त्रिक केन्द्र, तिब्बती संसदीय एंव नीति शोध केन्द्र, एन डी पी टी, तिब्बती यूनाइटेड एसोसिऐशन, गु–चु–सुम, दो–तो ऐसोसियेशन, दो–में ऐसोसियेशन, यू–त्सांग ऐसोसियेशन, न्यारीऐसोसियेशन
frCcrh dk;ky;	तिब्बत के दूतावास नई दिल्ली, काठमाण्डू, न्यूयॉर्क, लन्दन, पैरिस, जेनेवा, ब्रुसैल्स, बुडापेस्ट, मास्को, कैनबरा, टोक्यो, प्रिटोरिया तथा ताइपेइ में स्थित हैं।

thfodk	खेती, खेती पर आधारित उद्योग, स्वैटर बेचना, हस्तकला का निर्यात तथा कुछ अन्य सेवाओं से सम्बन्धित उपक्रम।
f'k{k	स्कूल जाने योग्य बच्चों में से 85 से 90 प्रतिशत का स्कूलों में पंजीकरण। इस समय 106 नर्सरी स्कूल, 87 प्राथमिक, 44 मिडल, 21 सैकेण्डरी तथा 13 सीनियर सैकेण्डरी स्कूल हैं, जिनमें कुल 25000 विद्यार्थी पंजीकृत हैं।

/ke’kkyk vkj chftx okrk dh igy

Qjojh 1979

बीजिंग में देंग सियाओ पिंग परम पावन दलाई लामा के बडे भाई ग्यालो थोण्ड्रुप से मिले और कहा कि वह तिब्बतियों के साथ स्वतंत्रता की मांग छोड़कर किसी भी विषय पर बातचीत करने को तैयार हैं। देंग ने निर्वासित तिब्बतियों को तिब्बत जाकर स्वंय तिब्बत का वास्तविक हाल देखने का निमंत्रण दिया।

vxLr 1979

परमपावन दलाईलामा ने प्रथम तथ्य खोजी प्रतिनिधिमंडल तिब्बत भेजा।

eb 1980

द्वितीय तथ्य खोजी प्रतिनिधिमंडल तिब्बत गया।

tqykb 1980

तीसरे तथ्य खोजी प्रतिनिधिमंडल की तिब्बत यात्रा।

flrEcj 1980

परमपावन दलाईलामा जी ने निर्वासित तिब्बती समुदाय से 50 प्रशिक्षित शिक्षकों को तिब्बत में शिक्षा के विकास में सहयोग के लिये भेजने का प्रस्ताव रखा। उन्होंने चीन सरकार और तिब्बतियों के बीच विश्वास कायम करने के उदेश्य से ल्हासा में सम्पर्क कार्यालय खोलने का भी प्रस्ताव रखा। चीन ने इन दोनों प्रस्तावों को यह कहकर टाल दिया कि इसे कुछ समय के लिये अभी स्थगित करते हैं।

tqykb1981

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव श्री हू याओबांग ने तिब्बती प्रस्तावों के जवाब में ‘‘दलाई लामा के प्रति चीन का पांच सूत्रीय

नीति'' पेश की। दलाई लामा और उनके अनुयायियों के तिब्बत वापिस आने पर बल देते हुए कहा कि दलाई लामा के पास वही राजनीतिक अधिकार और रहन सहन की सुविधाएं मिलेंगी जैसी 1959 से पहले थीं। न तो वह तिब्बत में रहेंगे और न ही किसी पद पर रहेंगे। लेकिन वह समय–समय पर तिब्बत जा सकते हैं। उनके अनुयायियों को अपनी रोज़ी–रोटी के बारे में चिंतित नहीं होना चाहिये। यह सब उन्हें पहले से अच्छा मिलेगा।

vçly 1982

तीन सदस्यीय तिब्बती प्रतिनिधिमंडल चीनी नेताओं के साथ बातचीत की संभावनाएं खोजने के लिये बीजिंग गया। चीनी नेता उन्हें दुराग्रही रूख के साथ मिले।

vDrcj 1984

एक और दौर की बातचीत के लिये तीन सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल बीजिंग गया। इस बार भी समझौते की दिशा में कोई सार्थक प्रगति नहीं हुई।

flrEcj 1987

अमेरिकी कांग्रेस के मानवाधिकार समूह को संबोधित करते हुये परमपावन दलाई लामा ने तिब्बत के लिये पांच सूत्रीय शांति प्रस्ताव की घोषणा की जिसमें उन्होंने तिब्बत के भविष्य पर गम्भीर वार्ता शुरू करने की बात कही।

tu 1988

स्ट्रासबर्ग मे यूरोपीय संसद में बोलते हुये दलाई लामा जी ने पांच सूत्रीय प्रस्ताव की व्याख्या की और तिब्बत के सभी तीन प्रातों के लिये स्वशासी प्रजातांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था का प्रस्ताव रखा। परमपावन जी ने कहा कि यह व्यवस्था चीनी गणराज्य के साथ मिलकर होगी और तिब्बत की विदेश नीति और सुरक्षा की जिम्मेदारी चीन सरकार के पास रहेगी।

flrEcj 1988

बीजिंग सरकार ने तिब्बतियों के साथ समझौता करने की इच्छा जतायी और कहा कि दलाई लामा समझौते के लिये स्थान और समय का चुनाव कर सकते हैं।

vDrcj 1988

बीजिंग सरकार की इस उद्घोषणा का स्वागत करते हुये धर्मशाला ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर जनवरी 1989 में जेनेवा में वार्ता शुरू करने का प्रस्ताव किया। इस वक्तव्य में तिब्बत वार्ता प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों के नामों की भी घोषणा की गई। इसमें निर्वासित सरकार के छः पदाधिकारी और डच वकील माईकल वॉन वाल्ट कानूनी सलाहकार के रूप शामिल थे।

uocj 1988

चीन सरकार अपने पूर्व के कठोर रूख पर लौट आई। उसने कहा कि स्ट्रासबर्ग प्रस्ताव वार्ता का आधार नहीं हो सकता। चीन ने बहुत सी शर्तें रखते हुये कहा कि बीजिंग, हांगकांग या चीन सरकार का विदेशों में स्थित कोई कार्यालय वार्ता का स्थान हो सकता है। वर्तमान तिब्बती प्रतिनिधिमंडल उसको स्वीकार्य नहीं हो सकते क्योंकि इसके सभी सदस्य 'विभाजनकारी गतिविधियों' में सम्मिलित रहे हैं। तिब्बती समूह में कोई भी विदेशी शामिल नहीं होगा और वह (चीनी सरकार) परमपावन दलाई लामा या उनके विश्वस्त प्रतिनिधि, जैसे ग्यालो थोण्डुप, से सीधे बातचीत के लिए इच्छुक हैं।

fnlEcj 1988

निर्वासित तिब्बत सरकार प्रतिनिधिमंडल में श्री ग्यालो थोण्डुप को शामिल करने पर सहमत हो गयी परन्तु अन्य शर्तों पर कायम रही।

vçy 1989

बीजिंग द्वारा रखे गये शर्तो पर आगे विचार विमर्श के लिये धर्मशाला से हांग–कांग मिशन भेजने का प्रस्ताव रखा गया। मिशन ने हांग–कांग को प्रारम्भकि बातचीत का स्थान रखना स्वीकार कर लिया लेकिन उसके जल्द बाद चीन ने वार्ता में कोई दिलचस्पी नही दिखायी।

vDrcj 1991

परमपावन दलाई लामा ने बीजिंग के लिये एक नया प्रस्ताव रखा। येल विश्वविद्यालय में अपने संबोधन में उन्होंने तिब्बत जाकर चीनी उच्च अधिकारियों के साथ वहां की वास्तविक स्थिति का मूल्याकंन करने की इच्छा जतायी।

fnlEcj 1991

परमपावन दलाई लामा ने चीनी राष्ट्रपति ली पेंग के अगामी दिल्ली दौरे के अवसर पर उनसे मिलने की इच्छा जतायी।

tuojh 1992

दलाई लामा जी के प्रस्ताव पर बींजिंग द्वारा लगातार सकारात्मक प्रतिक्रिया देने से इन्कार करने पर निर्वासित तिब्बती संसद में यह प्रस्ताव पारित किया गया कि जबतक चीनी नेतृत्व के रुख में कोई सकारात्मक बदलाव नहीं होता है तब तक वार्ता के लिये कोई नई पहल नहीं शुरू करनी चाहिये।

vçy 1992

नई दिल्ली स्थित चीनी दूतावास ने ग्यालो थोण्डुप को वार्ता के लिए चीन आने का निमंत्रण दिया। चीनी दूतावास से कहा गया कि पहले चीन सरकार का रूख कड़ा था लेकिन अगर तिब्बती वास्तविकता अपनाने के लिये तैयार हैं तब वे लोग भी लचीला रूख अपनाने को तैयार हैं।।

t u 1992

थोण्डुप दलाई लामा जी की अनुमति प्राप्त कर चीन गये लेकिन चीनी नेतृत्व ने तिब्बत के प्रति वही पुराना कठोर रुख दुहराया तथा दलाई लामा जी के विरूद्ध गंभीर आरोप भी लगाए।

t u 1993

श्री थोण्डुप के साथ वार्ता के दौरान चीनी नेतृत्व द्वारा उठायी गयी गलतफहमियों को दूर करने के लिये धर्मशाला से दो–सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल चीन गया। यह प्रतिनिधिमंडल परमपावन दलाई लामा जी की ओर से श्री देंग शियाओ पिंग असंयुक्त राष्ट्र महासभा और जियांग जेमिन को संबोधित 13 सूत्रीय ज्ञापन भी ले गया। ज्ञापन में दलाई लामा जीन शांतिपूर्ण वार्ता के रास्ते तिब्बत समस्या के समाधान के लिए किये गये अपने प्रयासों का सिलसिलेवार विवरण प्रस्तुत करते हुये कहा कि ''यदि हम तिब्बती अपने मौलिक अधिकारों को अपनी संतुष्टि के अनुसार प्राप्त कर लेते हैं तो हम चीनियों के साथ रहने के संभव फायदों को समझने में अक्षम नहीं होंगे। इसी वर्ष चीन ने धर्मशाला के साथ संचार के सभी औपचारिक रास्ते बंद कर दिये। अनौपचारिक एंव अर्द्ध–शासकीय माध्यम निरंतर खुले रहे।

t u 1998

बीजिंग में संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति श्री बिल क्लिंटन के साथ संयुक्त प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुये चीनी राष्ट्रपति जियांग ज़ेमिन ने कहा कि यदि दलाई लामा सार्वजनिक रूप से यह घोषणा करते हैं कि तिब्बत चीन का अभिन्न अंग हैं और ताईवान को चीन के क्षेत्र के रूप में मान्यता देते हैं, तब वह तिब्बतियों के साथ वार्ता के लिये इच्छुक होंगें।

ekp 1999

10 मार्च को तिब्बत जनक्रांति दिवस के वार्षिक वक्तव्य में परमपावन

दलाई लामा ने घोषणा की कि चीन ने उनके साथ वार्ता करने के लिये अपने रुख को कड़ा कर दिया है।

fl rEcj 2002

श्री लोडी ग्यालत्सेन ग्यारी और केलसांग ग्यालत्सेन के नेतृत्व में चार–सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल फिर से संबंध स्थपित करने के लिये चीन और तिब्बत गया। धर्मशाला ने चीनी सरकार के सकारात्मक रुख का स्वागत किया।

eb 2003

श्री लोडी ग्यालत्सेन ग्यारी और केलसांग ग्यालत्सेन के नेतृत्व में दूसरी बार प्रतिनिधिमंडल चीन और तिब्बत गया।

fl rcj 2004

लोदी ग्यारी और केलसांग ग्यालत्सेन के नेतृत्व में तिब्बती प्रतिनिधिमंडल का तीसरा दौरा

30 tu&1 tqykbZ 2005

श्री लोदी ग्यारी के साथ गए श्री केलसांग ग्यालत्सेन और तीन अन्य सहयोगियों ने अपने चीनी समकक्षों यूनाइटेड फ्रंट के उप मंत्री श्री झू वेक्यून, श्री सिथर और अन्य अधिकारियों के साथ स्विट्जरलैंड के बर्न में स्थित चीनी दूतावास में चौथे दौर की वार्ता की।

15 Qjojh 2006

श्री लोदी ग्यालत्सेन ग्यारी, श्री केलसांग ग्यालत्सेन और उनके तीन अन्य वरिष्ठ सहयोगियों ने बीजिंग में अपने चीनी समकक्षों के साथ पांचवें दौर की वार्ता की

29 tu] 2007

विशेष दूत लोदी ग्यारी और दूत केलसांग ग्यालत्सेन के साथ कार्य दल के दो सदस्यों सोनम एन डागपो और भुचुंग के सेरिंग ने 29 जून से 5 जुलाई 2007 तक चीन का दौरा किया। इस दौरान

उनकी चीनी नेताओं से छठें दौर की वार्ता हुई।

4 ebl 2008

परम पावन दलाई लामा के दो दूतों ने दक्षिण चीन के शेनझेन शहर में अपनी चीनी समकक्षों के साथ वार्ता की।

1 t|ykbl 2008

परम पावन दलाई लामा के दो दूतों श्री लोदी ग्यारी और श्री केलसांग ग्यालत्सेन ने बीजिंग में 1 से 2 जुलाई 2008 तक चीनी नेताओं के प्रतिनिधियों से बातचीत की।

30 vDVcj& 5 uocj 2008

विदेश दूत लोदी जी ग्यारी और दूत केलसांग ग्यालत्सेन ने बीजिंग में चीनी नेताओं के प्रतिनिधियों के साथ आठवें दौर की वार्ता की।

26 l 31 tuojh 2010

परम पावन दलाई लामा के विशेष दूतों लोदी जी ग्यारी और दूत केलसांग ग्यालत्सेन ने बीजिंग में चीनी नेताओं के प्रतिनिधियों के साथ नौवें दौर की वार्ता की।

तिब्बत के लिए पॉच–सूत्री शांति योजना

''परम पावन चौदहवें दलाई लामा जी द्वारा दी गई तिब्बत के लिए पाँच सूत्रीय शांति योजना (21 सितम्बर 1987) वाशिंगटन डी. सी. में अमेरिकी कांग्रेस के सदस्यों के समक्ष संबोधन का अंश''

आज मैं आपके समक्ष तिब्बतियों के अगुआ तथा प्रेम और करूणा पर आधारित धार्मिक सिद्धान्तों को समर्पित एक बौद्ध भिक्षु के नाते बोल रहा हूं। इससे भी अधिक मैं एक उस इन्सान के नाते भी खड़ा हूँ जिसे आप तथा अपने भाई–बहिनों के साथ धरती को भोगने का अवसर प्राप्त हुआ है।

तिब्बत के लोग प्रादेशिक तथा विश्व शांति की दिशा में योगदान देने को उत्सुक हैं और विश्वास है कि इस संदर्भ में वे विशिष्ट स्थिति में हैं। तिब्बती जनता पारम्परिक तौर से ही शांति–प्रिय एवं अहिंसावादी है।एक हजार से अधिक वर्ष जब से तिब्बत में बौद्ध धर्म का आगमन हुआ है तिब्बतवासियों ने प्राणीमात्र के प्रति समादर–युक्त भाव से अहिंसा पर आचरण किया है । हमारे राष्ट्र के अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों में इसी दृष्टिकोण का अनुकरण हुआ हैं

जब 1949–50 में चीन के नव–गठित चीन लोक गणराज्य ने तिब्बत पर आक्रमण कर दिया तो झगड़े का एक नया स्रोत उभर उठा। 1959 में चीन के विरूद्ध तिब्बत के राष्ट्र–व्यापी विद्रोह तथा मेरे भारत पलायन के पश्चात भारत–चीन में तनाव की 1962 के युद्ध में परिणति इस का ज्वलन्त उदाहरण है। हिमालय के दोनो ओर आज भी भारी मात्रा में सैन्यदल तैनात हैं जिससे पारस्परिक तनाव चरम सीमा पर है।

मूल प्रश्न भारत–तिब्बत सीमाओं के रेखाकंन का नहीं बल्कि चीन द्वारा तिब्बत पर नाजायज कब्जे का है। जिस से चीन के लिए

भारतीय उपमहाद्वीप तक की सीधी पहुँच हो गई है। चीनी शासक यह कह कर इस प्रश्न को उलझा रहा है कि तिब्बत तो सदा चीन का हिस्सा रहा है। यह सरासर झूठ है। 1949–50 में चीन की 'जन–मुक्ति वाहिनी (पीएलए)के आक्रमण के मध्य तक तिब्बत अपने स्वतंत्र अस्तित्व को कायम रख सका।

तिब्बत पर चीन के गैर–कानूनी कब्जे के रहते विश्व को याद रखना चाहिए कि तिब्बत की स्वतंत्रता छिन जाने के बावजूद, वह अब भी एक स्वतंत्र देश है जो चीन के गैर–कानूनी कब्जे में है।

इस स्पष्ट तथा निर्विवाद सत्य पर जोर देना चाहता हुँ कि हम तिब्बती लोग एक विशिष्ट कौम हैं जिसकी अपनी संस्कृति, अपनी भाषा, अपना धर्म तथा अपना इतिहास हैं। यदि इस पर चीन का कब्जा न होता तो आज भी तिब्बत एशिया मे शान्ति को स्थिर तथा सुदृढ़ बनाने के पक्ष में एक मध्य–स्थित देश के नाते अपने दायित्व को निभाता होता।

हमें अत्यन्त निराशा हुई जब यथोचित वार्तालाप हेतु प्राप्त इस सुअवसर का चीन ने दुरुपयोग किया। साठ लाख तिब्बतीयों की उचित समस्याओं पर विचार विमर्श करने की बजाय चीन ने तिब्बत के श्न को मात्र दलाई लामा के व्यक्तिगत पद की स्थिति तक सीमित रखने का प्रयास किया।

इस शान्ति योजना के पॉच आधारभूत अंग हैं:–

1 समस्त तिब्बत को शान्ति –क्षेत्र में परिवर्तित करना।

2 चीन द्वारा जन–स्थानान्तरण नीति का परित्याग जिससे कि एक कौम के नाते तिब्बत वासियों के अतित्व मात्र को ख़तरा है।

3 तिब्बती जनों के मूल–भूत मानवाधिकारों तथा लोकतांत्रिक स्वतंत्रताओ का आदर हो।

4 तिब्बत के प्राकृतिक पर्यावरण की पुनःस्थापना तथा उसका संरक्षण तथा चीन द्वारा तिब्बत की धरती का आणविक शस्त्रों के निर्माण और आणविक कचरे को फैंकने हेतु प्रयोग बन्द करे।

5 तिब्बत के भविष्य और चीन–तिब्बत सम्बन्धों के बारे में सार्थक बातचीत की जाए।

मध्यम मार्ग नीति का परिचय और इतिहास

परिचय :

तिब्बत की समस्या को शांतिपूर्ण तरीके से हल करने और तिब्बती व चीनी लोगों के बीच समानता व सहयोग पर आधारित स्थिरता व सहअस्तित्व कायम करने के लिए परमपावन दलाई लामा ने मध्यम मार्ग का प्रस्ताव किया। यह एक ऐसी नीति भी है जिसे केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन और तिब्बती लोगों ने लम्बे समय से जारी चर्चाओं के बाद लोकतांत्रिक तरीके से अपनाया है। मध्यम मार्ग नीति और उसके इतिहास का यह संक्षिप्त परिचय इसलिए दिया जा रहा है ताकि तिब्बत व तिब्बत के बाहर रहने वाले तिब्बती लोग और वे सभी लोग जो इसमें रुचि रखते हैं इसमें शामिल मुद्दों को बेहतर ढंग से समझ सकें।

क: मध्यम मार्ग नीति का मतलब :

तिब्बती जनता को चीन जनवादी गणतंत्र के अधीन तिब्बत की वर्तमान स्थिति स्वीकार्य नहीं है। साथ ही वे तिब्बत की स्वतंत्रता की मांग भी नहीं करते, जो कि एक ऐतिहासिक तथ्य है। इन दोनों के बीच का रास्ता अपना कर ही यह मध्यम मार्ग नीति बनी है और इसका अभिप्राय चीन जनवादी गणतंत्र के ढांचे के तहत तिब्बत के तीन परंपरागत प्रांतों में रहने वाले सभी तिब्बतियों के लिए एक वास्तविक स्वायत्तता प्राप्त करना है। यह एक निष्पक्ष और संतुलित स्थिति है जो सभी संबंधित पक्षों के महत्वपूर्ण हितों की रक्षा करती है। तिब्बतियों के लिए: उनकी संस्कृति, धर्म और राष्ट्रीय पहचान का संरक्षण व सुरक्षा, चीनी लोगों के लिए: मातृभूमि की सुरक्षा और क्षेत्रीय एकता और पड़ोसियों व अन्य तीसरे पक्षों के लिए: शांतिपूर्ण सीमाएं और अंतर्राष्ट्रीय संबंध।

[k% e/;e ekxl uhfr dk bfrgkl %

हालांकि तिब्बत सरकार और चीन जनवादी गणतंत्र के बीच 17 सूत्रीय समझौता किसी समान आधार या पारस्परिक रजामंदी पर नहीं हुआ था, लेकिन परमपावन दलाई लामा ने 1951 के बाद आठ वर्षों तक तिब्बती व चीनी लोगों के पारस्परिक हितों के लिए सभी संभव प्रयास किए ताकि चीन सरकार के साथ कोई शांतिपूर्ण समझौता कायम हो सके। यहां तक कि जब परमपावन दलाई लामा और कशाग के सदस्य 1959 में ल्हासा से लोखा क्षेत्र में पहुंच गए तब भी उन्होंने चीनी सैन्य अधिकारियों के साथ बातचीत कर समझौते का प्रयास जारी रखा। 17 सूत्रीय समझौते की शर्तों का पालन करने का उनका प्रयास मध्यम मार्ग नीति के समान ही था। दुर्भाग्य से चीनी सेना ने तिब्बत की राजधानी ल्हासा में भारी सैन्य कार्रवाई की जिससे परमपावन दलाई लामा को यह बात समझ में आ गयी कि चीन सरकार से सहअस्तित्व बनाए रखना बहुत दिनों तक संभव नहीं है। इन परिस्थितियों में उनके पास इसके अलावा और कोई विकल्प नहीं था कि वह भारत में शरण लें और तिब्बती लोगों की स्वतंत्रता और खुशी के लिए निर्वासित रहकर कार्य करें।

तेजपुर (भारत) में अपने आगमन के जल्द ही बाद 18 अप्रैल, 1959 को परमपावन दलाई लामा ने एक बयान जारी किया जिसमें यह स्पष्ट किया गया कि 17 सूत्रीय समझौता दबाव में किया गया था और चीन सरकार ने इस समझौते की शर्तों का सोच विचार के साथ घोर उल्लंघन किया है। उस दिन से ही उन्होंने यह घोषणा की कि उक्त समझौते को रद्द और शून्य माना जाए और तिब्बत की स्वतंत्रता को पुर्नस्थापित करने के लिए वह संघर्ष करेंगे। तबसे केंद्रीय तिब्बती प्रशासन और तिब्बती लोगों ने तिब्बत की स्वतंत्रता प्रप्ति के लिए सन 1979 तक संघर्ष जारी रखा। लेकिन आमतौर पर

पूरी दुनिया में राजनीतिक, सैन्य और आर्थिक रूप से पारस्परिक निर्भरता बढ़ रही है। इसके परिणामस्वरूप देशों और राष्ट्रीयताओं की स्वतंत्र स्थिति में भारी बदलाव आ रहे हैं। चीन में भी निश्चित रूप से बदलाव होगा और दोनों पक्षों के लिए ऐसा समय जरूर आएगा कि वह वास्तविक बातचीत में शामिल हों। इसलिए परमपावन दलाई लामा लम्बे समय से यह मानते आ रहे हैं कि तिब्बत समस्या का हल बातचीत से तलाशने के लिए यह ज्यादा फायदेमंद होगा कि तिब्बत की स्वतंत्रता की बहाली की मांग वाली नीति को बदलकर एक ऐसा रास्ता अपनाया जाए जो चीन व तिब्बत दोनों के लिए लाभकारी हो।

x% e/;e ekxZ uhfr vpkud ugha rS;kj gqbZ %

हालांकि परमपावन दलाई लामा ने इस विकल्प पर बहुत पहले विचार कर लिया था लेकिन उन्होंने इसे मनमाने ढंग से लागू करने या दूसरों पर थोपने का निर्णय नहीं लिया। 1970 के दशक के शुरुआती दौर से ही उन्होंने तिब्बत जनप्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष व उपाध्यक्ष, काशाग (मंत्रीमंडल) के सदस्य और कई विद्वान व अन्य अनुभवी व्यक्तियों से सुझाव लिए और इस मुद्दे पर कई दौर की चर्चा की। विशेषकर 1979 में चीन के सर्वोच्च नेता स्वर्गीय देंग सियोपिंग ने परमपावन दलाई लामा के समक्ष प्रस्ताव रखा कि ''स्वतंत्रता के अलावा अन्य सभी मुद्दे बातचीत से हल किए जा सकते हैं।'' यह प्रस्ताव परमपावन दलाई लामा के लम्बे समय की मान्यता के अनुरूप ही थे। परमपावन दलाई लामा ने इस पर तत्काल सकारात्मक प्रतिक्रिया जाहिर की और बातचीत के लिए राजी होने के अलावा तिब्बत की स्वतंत्रता की बहाली की नीति को मध्यम मार्ग नीति में परिवर्तित करने का निर्णय लिया। यह निर्णय भी तिब्बत जनप्रतिनिधि सभा, कशाग के सदस्यों और कई विद्वान व अनुभवी लोगों से कई दौर के परामर्श के बाद लिया गया था।

इसलिए यह स्पष्ट है कि यह नीति अचानक नहीं उभरी, बल्कि इसके विकास का एक निश्चित इतिहास है।

?k% e/;e ekxZ uhfr dk ykdrkaf=d rjhds ls Lohdkj fd;k x;k

मध्यम नीति को अपनाने के निर्णय के बाद और 15 जून 1988 को स्ट्राट्सबर्ग स्थित यूरोपीय संसद में परमपावन दलाई लामा के बयान देने के पहले (जिसने हमारे लिए बातचीत का आधार तैयार किया कि तिब्बती लोगों को किस प्रकार की स्वायत्तता की जरूरत है), 6 जून 1988 को धर्मशाला में चार दिन का विशेष सम्मेलन आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन में तिब्बत जन प्रतिनिधि सभा और काशाग के सदस्य, सरकारी कर्मचारी, सभी तिब्बती बस्तियों के अधिकारी और स्थानीय तिब्बती एसेम्बली के सदस्य, तिब्बती स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधि, हाल में तिब्बत से आए तिब्बती लोग और विशेष आमंत्रित सदस्य शामिल हुए। इन सबने प्रस्ताव की रूप रेखा पर गहन विचार–विमर्श किया और अंत में सर्वसम्मति से इसे मंजूर किया।

चीन सरकार ने इस पर कोई सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं दी इसलिए परमपावन दलाई लामा ने 1996 और 1997 में पुनः यह प्रस्ताव किया कि तिब्बती लोग जनमत संग्रह के माध्यम से तिब्बत की समस्या का सर्वोत्तम एंव संतोशजनक समाधान का निर्णय करें। तदानुसार एक प्रारंभिक सर्वेक्षण कराया गया जिसमें 64 प्रतिशत से भी अधिक तिब्बती जनता ने कहा कि जनमत संग्रह कराने की आवश्यकता नहीं है और चीन व दुनिया की बदलती राजनीतिक स्थिति के लिहाज से दलाई लामा जी समय समय पर जो निर्णय लेंगे वह उसका समर्थन करेंगे। इसके प्रभाव से तिब्बती जनप्रतिनिधि सभा ने 18 दिसम्बर, 1997 को सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित किया और इसके बारे में परमपावन दलाई लामा को बताया। इसकी

प्रतिक्रिया में परमपावन दलाई लामा ने 10 मार्च, 1998 के अपने बयान में कहा था कि,'' पिछले वर्ष हमने निर्वासित तिब्बतियों के बीच एक जनमत सर्वेक्षण करवाया था और जहां तक संभव हुआ प्रस्तावित जनमत संग्रह के बारे में तिब्बत से भी सुझाव प्राप्त किए गए, ताकि जनमत संग्रह के द्वारा तिब्बत के लोग अपनी पूर्ण संतुष्टि के साथ हमारे संघर्ष की दिशा निर्धारित कर सके। इस जनमत सर्वेक्षण के परिणामों और तिब्बत में रह रहे तिब्बती लोगों के सुझावों के आधार पर तिब्बत जनप्रतिनिधि सभा हमारी निर्वासित संसद ने एक प्रस्ताव पारित किया जिसमें मुझे यह अधिकार दिया गया कि जनमत संग्रह का इंतजार किए बिना इस मसले पर मै अपने विवेक का उपयोग करना जारी रखूं। मै तिब्बत की जनता को धन्यवाद देना चाहूंगा कि उसने मुझमें इतना अपार भरोसा, आत्मविश्वास और आशा जतायी है। मै लगातार यह मानता हूं कि मेरी 'मध्यम मार्ग नीति' तिब्बत की समस्या को शांतिपूर्ण ढंग से हल करने के लिए सबसे यथार्थवादी और व्यावहारिक तरीका है। इस नीति से तिब्बती लोगों की महत्वपूर्ण जरूरतों की पूर्ति की जा सकती है। साथ ही चीन जनवादी गणतंत्र की एकता व स्थिरता सुनिश्चित की जा सकती है। इसलिए मैं पूर्ण प्रतिबद्धता के साथ इस मार्ग पर चलना जारी रखूंगा और चीनी नेतृत्व से मिलने के लिए गंभीर प्रयास भी करूंगा। '' इस प्रकार यह नीति तिब्बती जनता के मत और तिब्बती जनप्रतिनिधि सभा द्वारा इस सम्बंध में सर्वसम्मति से पारित की गयी प्रस्ताव को ध्यान में रखकर स्वीकार की गयी है।

p- e/;e ekxZ uhfr dk egRoiw.kZ vax

1. तिब्बत की स्वतंत्रता की मांग किए बिना केंद्रीय तिब्बती प्रशासन एक ऐसे राजनीतिक निकाय (पॉलिटिकल एनटीटी) की स्थापना के लिए संघर्ष करेगा जिसमें तिब्बत के तीन परंपरागत प्रांत हों।

2. इस प्रकार के निकाय को उचित एंव वास्तविक राष्ट्रीय व क्षेत्रीय स्वायत्तता दी जाए।

3. इस स्वायत्त क्षेत्र का प्रशासन लोकतांत्रिक प्रक्रिया के तहत चुनी गयी विधायिका और कार्यपालिका द्वारा चलाया जाना चाहिए।

4. अगर चीन सरकार उक्त स्थिति को स्वीकार कर लेती है तो तिब्बत भी चीन से अलग होने का मांग नहीं करेगा और चीन जनवादी गणतंत्र के भीतर ही रहेगा।

5. जब तक तिब्बत शांति व अहिंसा क्षेत्र में परिवर्तित होता है तब तक चीन सरकार अपनी सुरक्षा के लिए तिब्बत में सीमित संख्या में सैन्य बलों को रख सकती है।

6. चीन जनवादी गणतंत्र की केंद्रीय सरकार के पास तिब्बत के अंतर्राष्ट्रीय संबंध और प्रतिरक्षा के राजनीतिक पहलुओं की जिम्मेदारी होगी, जबकि तिब्बत सेसंबंधित अन्य सभी पहलुओं जैसे धर्म व संस्कृति, शिक्षा, अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य पारिस्थिति की व पर्यावरण संरक्षण आदि का प्रबंध तिब्बती लोगों को करना चाहिए।

7. तिब्बत में मानवाधिकारों के हनन और चीनी जनसंख्या के तिब्बत में स्थानांतरण की नीति पर चीन सरकार को रोक लगानी चाहिए।

8. तिब्बत समस्या के हल के लिए चीन सरकार के साथ निष्कपट रूप से बातचीत करने और सामंजस्य बनाए रखने की मुख्य जिम्मेदारी परमपावन दलाई लामा जी को लेनी चाहिए।

छ. मध्यम मार्ग नीति की विशिष्टाएं

इस तथ्य के संदर्भ में तिब्बती लोगों की राजनीतिक आवश्यकताओं

की तुलना में तिब्बती व चीनी लोगों के बीच एकता और सहअस्तित्व अधिक महत्वपूर्ण है, परमपावन दलाई लामा जी ने दोनों पक्षों के लिए लाभकारी मध्यम मार्ग नीति प्रस्तुत की जो एक महान प्रगतिशील राजनीतिक कदम है। जनसंख्या के आकार, आर्थिक शक्ति और सैन्य ताकत में अंतर के बावजूद विभिन्न राष्ट्रीयताओं के बीच समानता का मतलब है कि सभी राष्ट्रीयताओं का इस आधार पर एक समान स्तर का सहअस्त्तिव हो सकता है कि उनमें इस बात पर भेद–भाव न हो कि कोई एक राष्ट्रीयता किसी दूसरी के मुकाबले उंची या बेहतर है। इसलिए राष्ट्रीयताओं के बीच एकता सुनिश्चित करने के लिए यह एक अनिवार्य मानदंड है। यदि तिब्बती और चीनी जनता एक समान आधार पर सहअस्तित्व के साथ रह सके तो यह चीन जनवादी गणतंत्र में राष्ट्रीयताओं की एकता, सामाजिक स्थिरता और क्षेत्रीय एकता की गारंटी के लिए आधार का कार्य करेगा जोकि चीन के लिए सर्वोच्च महत्व रखता है। इसलिए मध्यम मार्ग नीति का विशेष लक्षण यह है कि इस पर चल कर हम अहिंसा, पारस्परिक लाभ, राष्ट्रीयताओं की एकता और सामाजिक स्थिरता के द्वारा शांति प्राप्त कर सकते हैं।

निष्कर्ष:

आशा है कि केंद्रीय तिब्बती प्रशासन और तिब्बती जनता द्वारा स्वीकार की गयी मध्यम मार्ग नीति और उसके इतिहास का यह संक्षिप्त परिचय सभी वर्गों के लोगों का पर्याप्त रूप से ध्यान आकर्षित करेगा और इससे मध्यम मार्ग नीति को बेहतर रूप से समझने में मदद मिलेगी। इस अवसर पर हम दुनियाभर के उन सभी लोगों, विशेषकर तिब्बती नेताओं, अधिकारियों और तिब्बत के विद्वानों के प्रति आभार प्रकट करना चाहेंगे जिन्होंने इस नीति का समर्थन किया है।

दुनिया भर में तिब्बत आंदोलन

पिछले चार दशक से भी ज्यादा के निर्वासन के दौरान परम पावन दलाई लामा के नेतृत्व में केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) और तिब्बती जनता अपनी खोई हुई आज़ादी और सम्मान फिर से हासिल करने के लिए अहिंसक आंदोलन चला रही हैं। तिब्बत की आज़ादी का संघर्ष सत्य, न्याय और अहिंसा पर आधारित है, इसलिए तिब्बती जनता के कार्य और समर्पण ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय के हर तरह के लोगों को तिब्बत आंदोलन में सक्रिय रुचि लेने को प्रेरित किया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि पिछले दो दशकों में अंतरराष्ट्रीय समुदाय के बीच कई तिब्बत समर्थक समूहों (टीएसजी) या तिब्बत समर्थक आंदोलन का गठन हुआ है।

तिब्बत समर्थक समूहों का गठन स्वेच्छा से ही किया जाता है और ये तिब्बती जनता के साथ घनिष्ठ सहयोग बनाकर काम करते हैं। हालांकि, इन पर सीटीए का कोई नियंत्रण नहीं होता, लेकिन इनके माध्यम से तिब्बत के हालात के बारे में दुनिया भर में जागरूकता बढ़ी है और तिब्बत के लिए समर्थन लगातार बढ़ता जा रहा है।

आज तिब्बत के लिए समर्थन एक महत्वपूर्ण स्तर तक पहुंच गया है। लगातार बढ़ते तिब्बत आंदोलन ने ज्यादा से ज्यादा देशों में अपना प्रभाव छोड़ा है। धर्मशाला में साल 1990 में हुए पहले तिब्बत समर्थक समूह की बैठक में 25 से ज्यादा देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। साल 1996 में जर्मनी के बॉन शहर में हुए तिब्बत समर्थक समूहों की दूसरी बैठक में 56 देषों के प्रतिनिधि शामिल हुए। इसके बाद से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तिब्बत समर्थकों की संख्या में कई गुणा की बढ़त हो चुकी है। साल 1994 में अमेरिका में मूवमेंट ऑफ स्टूडेंट्स फॉर फ्री टिबेट के गठन के साथ ही इस अभियान में युवा पीढ़ी का स्वागत योग्य प्रवेश हुआ है। कई देशों में तिब्बत

पर सांसदों के सर्वदलीय समूह का गठन किया गया है और अब तक तिब्बत पर दुनिया भर के सांसदों के चार सम्मेलन आयोजित किए जा चुके हैं।

तिब्बत समर्थक समूहों का आंदोलन रणनीतिक रूप से इतना प्रभावी हो चुका है कि कोई भी सरकार ज्यादा समय तक इसकी उपेक्षा नहीं कर सकती। इसकी प्रभावशीलता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि हर तिब्बत समर्थक समूह की बैठक के बाद चीन सरकार ने कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। चीन ने इस तरह की बैंठकें न होने के लिए एड़ी–चोटी का जोर लगा दिया, लेकिन उसे मुंह की खानी पड़ी है और 1990 के बाद अब तक तीन महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक बैठकें हो चुकी हैं। चीन सरकार जिस तरह का दुष्प्रचार करती है उसमें तिब्बत समर्थकों को आमतौर पर "शत्रु विदेशी ताकतें" बताया जाता है और तिब्बत आंदोलन को भी ऐसा "अलगाववादी आंदोलन" बताया जाता है जिसको "पश्चिमी साम्राज्यवादी ताकतों" का समर्थन हासिल है। जबकि सचाई यह है कि तिब्बत समर्थकों ने कभी भी चीन के साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार नहीं किया। तिब्बत समर्थक समूह के सदस्यों में दुनिया के कई देशों के अलग–अलग सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और वैचारिक आधार वाले लोग शामिल हैं। तथ्य तो यह है कि आज तिब्बत आंदोलन का बहुत से चीनी नागरिक भी समर्थन कर रहे हैं और उन्होंने तिब्बत आंदोलन में अपना सार्थक योगदान दिया है। तिब्बत के समर्थकों को जो विचारधारा जोड़ती है वह यह आम धारणा है कि आज़ादी, न्याय और मानवीय गरिमा हर मनुष्य का जन्मजात अधिकार है।

परम पावन दलाई लामा का कहना है, "किसी भी मनुष्य में करुणा और एकता का भाव आना स्वाभाविक है, यदि वह देखता है कि कोई दूसरा मनुष्य परेशन है।" तिब्बत समर्थक समूहों के सदस्य ऐसे लोग हैं जिन्होंने अपने ऊपर यह सुनिश्चित करने की सार्वभौमिक

जिम्मेदारी ली है कि दुनिया को रहने के लिए एक बेहतर जगह बनाई जाए।

पिछले सालों में तिब्बती जनता के अंतरराष्ट्रीय तिब्बत समर्थक समूहों के सदस्यों के संपर्क में आने से अहिंसा और क्षमा के बौद्ध विश्वास के प्रति उनकी धारणा और मजबूत हुई है और वे चीन को भी माफ करने को तैयार हैं। इससे तिब्बत के भविष्य के लिए बड़े पैमाने पर आशावाद का फिर से संचार हुआ है। जैसे कि अंत में सत्य और न्याय की विजय होती है, वैसे ही तिब्बती जनता को भरोसा है कि तिब्बत जल्दी ही आज़ाद होगा। ऐसा समय जब आएगा तो लोग तिब्बत समर्थकों के तिब्बत आंदोलन के प्रति लगातार और समर्पित योगदान को याद करेंगे। पूरी दुनिया में रहने वाले तिब्बती लोग भी परम पावन दलाई लामा के नेतृत्व में शांति, न्याय और आज़ादी के लिए अपनी तन–मन–धन अर्पण करने में लगे हुए हैं।

भारत में कई प्रमुख नेताओं ने तिब्बत आंदोलन के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट की है। पिछले कई दशकों से बहुत से भारतीय नागरिक राष्ट्रीय समर्थक समूह बनाकर तिब्बत के संघर्ष में कूद पड़े हैं। इस समूहों में भारत–तिब्बत मैत्री संघ, भारत–तिब्बत सहयोग मंच, हिमालय परिवार, फ्रेंड्स ऑफ टिबेट, हिमालय कमिटी फॉर एक्शन टिबेट आदि शामिल हैं। तिब्बत के समर्थक में अभियानों को रणनीतिक रूप देने के लिए समूचे भारत के तिब्बत समर्थकों की एक शीर्ष संस्था कोर ग्रुप फॉर टिबेटन कॉज का गठन किया गया है।

पांचवां अंतरराष्ट्रीय तिब्बत समर्थक समूह सम्मेलन मई 2007 में बेल्जियम के ब्रुसेल्स शहर में आयोजित किया गया था। इसके बाद तिब्बत में देशव्यापी विरोध प्रदर्शन के बाद वहां के गंभीर हालत और अंतरराष्ट्रीय स्थिति को देखते हुए भारत के कोर ग्रुप फॉर टिबेटन

कॉज ने 29 नवंबर से 1 दिसंबर 2008 तक तीन दिन की "विशेष अंतरराष्ट्रीय तिब्बत समर्थक समूह बैठक" बुलाई थी। हरियाणा के गुड़गांव शहर में हुए इस सम्मेलन में 30 देशों के 100 प्रतिनिधि शामिल हुए।

चंडीगढ़ में 28 से 29 जून 2008 तक दो दिन का अखिल भारतीय तिब्बत समर्थक समूहों का विशेष सम्मेलन बुलाया गया था। तीसरा अखिल भारतीय तिब्बत समर्थ समूहों का सम्मेलन 30 से 31 मार्च, 2009 को नई दिल्ली में आयोजित हुआ जिसमें 200 प्रतिनिधि शामिल हुए।

तिब्बत आन्दोलन में आप क्या योगदान कर सकते हैं : एक आह्वान

1. अपने स्थान पर तिब्बत समर्थक समूह की स्थापना करें और स्थानीय लोगों को तिब्बत और तिब्बतियों की समस्या के बारे में जागरुक करें।

2. पत्र–पत्रिकाओं में लेख या संपादक के नाम पत्र आदि लिखकर तिब्बती लोगों के स्वतंत्रता व न्याय के अधिकारों का समर्थन करें।

3. अपने सांसदों को पत्र लिखकर तिब्बत समस्या की जानकारी दें और उनसे आग्रह करें कि वह तिब्बत के मुद्दे को संसद में उठाएं।

4. अपने सांसद व सरकार से आग्रह करें कि वह तिब्बत के लिए दलाई लामा के शांतिपूर्ण अभियान का समर्थन करें।

5. भारत सरकार से आग्रह करें कि वह चीन जनवादी गणतंत्र की सरकार और निर्वासित तिब्बती सरकार के बीच सार्थक बातचीत करान में सहयोग करें।

6. अपने आसपास लोकल नेटवर्क तैयार करें और तिब्बत के बारे में जागरूकता बढ़ाएं।

7. तिब्बत के बारे में सम्मेलनों, व्याख्यानों, गोष्ठियों, समूह चर्चा और फोटो प्रदर्शनी का आयोजन करें।

8. अपने क्षेत्र में तिब्बती सांस्कृतिक और धार्मिक समूहों को बुलाएं।